आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जनवरी, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2015 ★ माघ, 2071

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera

Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा | जय गुरु हस्ती | जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera | *Jai Guru Hasti* | *Jai Guru Maan*

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com
Website: www.jinvani.net

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सव्वं गंथं कलहं च,
विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु,
पासमाणो न लिप्पई ताई।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.4

बाह्य और आभ्यन्तर ग्रन्थ सब,
तजे तथाविध कलहों को।
सर्व कामगुण दोषयुक्त लख,
त्राता मुनि दूर रखे मन को।।

जनवरी, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
माघ, 2071

वर्ष 73 अंक 1

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	सापेक्ष अर्थशास्त्र में इच्छा-परिमाण का महत्त्व	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	सद्गृहस्थ का धर्म	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रवचन-	स्वतन्त्रता का महत्त्व	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	13
	कैसे मिले स्थायी समाधान	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	17
	जैन की जीवन शैली	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	21
संवाद-	जिनशासन की दीक्षा	-आचार्य विजययोगतिलकसूरिजी म.सा.	25
जीवन-व्यवहार-	लगाव की खूबियाँ और कमियाँ	-साध्वी युगल निधि-कृपा	31
अध्यात्म-	दान वरदान है	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	38
	ज्ञान के साथ हो आचरण	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दसूरिजी	45
सामयिक-	भारत की स्वतन्त्रता में जैनों का योगदान	-डॉ. एस.एल.नागौरी	41
	अल्पसंख्यक होने से जैनों को लाभ	-श्री उदयमुनिजी	79
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Need of Comparative Study of Prakrit and Indic-religious	*-Prof. Sagarmal Jain*	47
प्रासङ्गिक-	स्वच्छता और शाकाहार	-डॉ. दिलीप धींग	52
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (91)	-श्री धर्मचन्द जैन	57
शोधालेख-	जैन, बौद्ध और वैदिक परम्पराओं में आध्यात्मिक ऐक्य	-डॉ. श्वेता जैन	61
युवा-स्तम्भ-	नव वर्ष में नए संकल्प	-श्री अभयकुमार जैन	83
नारी-स्तम्भ-	माँ से मेरी प्रार्थना	-श्रीमती माया कुम्भट	92
धारावाहिक-	लग्न की वेला (10)	-आचार्य श्री उमेशमुनिजी 'अणु'	93
स्वास्थ्य आलेख-	रात्रिभोजन और स्वास्थ्य	-डॉ. के.एल.पोखरना	99
उद्बोधन-	विकास का स्वर्णिमकाल है विद्यार्थी जीवन	-एक साध्वी	106
बाल-स्तम्भ -	आटे के मुर्गे की बलि	-डॉ. पवनकुमार जैन	108
विचार-	Tea & Life	*-Sh. Bhanwarlal Golecha*	56
	अनमोल सूत्र	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	82
	प्रभावना	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	86
कविता/गीत-	आप्तकाम का विरुद निभाना	-श्री सोहनलाल सिसोदिया	40
	जैन विश्वगान	-श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'	43
	नवचेतना : नव निर्माण	-प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी शास्त्री	44
	मुक्ति-पथ	-श्री महावीर कोठारी	51
	महान् हस्ती : गुरु हस्ती	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	68
	श्रेष्ठ बनेंगे श्रेष्ठ बनेंगे	-डॉ. धर्मचन्द जैन	77
	पथ प्रशस्त करो स्वयं अपना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	78
	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (6)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	87
	चातुर्मास कोटा में हुआ	-श्री हुकमचन्द चण्डालिया	104
	कर देता जीवन उजियारा	-श्री अखिल जैन	105
	जीवन की बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	107
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	112
दीक्षा-कार्ड-	गंगापुरसिटी एवं हुबली में आयोज्य दीक्षा-महोत्सव	-संकलित	69
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	114
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	130

सम्पादकीय

सापेक्ष अर्थशास्त्र में इच्छा-परिमाण का महत्त्व

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

मनुष्य के चार पुरुषार्थ माने गए हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें अर्थ एवं काम का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। काम (इच्छा) की पूर्ति के लिए अर्थ/पदार्थ की आवश्यकता होती है तथा अर्थ की प्राप्ति काम को जन्म देती है। फिर उस काम की पूर्ति के लिए अर्थ/पदार्थ की आवश्यकता होती है। इस प्रकार अर्थ एवं काम का चक्र सतत चलता रहता है। अर्थ का सम्बन्ध बाह्य पदार्थों एवं उनकी प्राप्ति के उपायों से है। इसी की भित्ति पर अर्थशास्त्र खड़ा होता है। अर्थशास्त्र में पदार्थों के उत्पादन, वितरण, व्यापार एवं उपभोक्ता का विचार किया जाता है। सहज उपलब्ध एवं उत्पादित अर्थसमूह उपभोक्ता की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति में सहायक होता है। मनुष्य शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आहारादि पदार्थों का उपयोग करता है, किन्तु आज वह इन पदार्थों के द्वारा सीमित आवश्यकताओं की बजाय अनन्त इच्छाओं को पूरा करने के लिए हिंसा, झूठ, चोरी या नीति-अनीति आदि का विचार नहीं करता। वह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरों की अपरिमित हानि करने के लिए भी तत्पर रहता है। अतः अर्थशास्त्र को समस्त मानवों के अभ्युदय हेतु सापेक्ष अर्थशास्त्र के रूप में परिणत किए जाने की आवश्यकता है।

अर्थशास्त्र तब सापेक्ष अर्थशास्त्र कहलाता है जब उसका चिन्तन मानवीय मूल्यों की संरक्षा की अपेक्षा रखकर होता है। मनुष्य सुख की प्राप्ति के लिए अर्थ का अर्जन एवं संग्रह करता है, परन्तु वह शान्ति से वंचित रहता है। जब शान्ति की अपेक्षा रखकर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया जाता है तो उसे सापेक्ष अर्थशास्त्र कहा जाता है। सापेक्ष अर्थशास्त्र में हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह आदि दोषों/पापों का परिहार किया जाता है। वर्तमान में जिस अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया जा रहा है, उसमें हिंसा, झूठ, चोरी, नीति-अनीति आदि मूल्यों की उपेक्षा रहती है। सापेक्ष अर्थशास्त्र की चर्चा आचार्य महाप्रज्ञ ने 'महावीर का अर्थशास्त्र' पुस्तक में की है। भगवान महावीर के सिद्धान्तों का समावेश करते हुए जिस अर्थशास्त्र का विकास हो सकता है, वह सापेक्ष अर्थशास्त्र है।

मनुष्य चूंकि एक सामाजिक प्राणी है। बुद्धि सम्पन्न होने के कारण वह पदार्थों की प्राप्ति के लिए एक व्यवस्था का निर्माण करता है, जिसे हम अर्थ-व्यवस्था कह सकते हैं। यह व्यवस्था प्राचीन काल में वस्तु विनिमय के आधार पर होती थी, फिर मुद्राओं के आधार पर होने लगी। अभी भी मुद्रा-व्यवस्था चल रही है। मुद्रा के द्वारा वस्तुओं का क्रय किया जा

सकता है। जिसमें जितनी अधिक क्रय शक्ति है वह उतना अधिक आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ माना जाता है। सम्प्रति सम्पन्नता का यह आधार अर्थ-संग्रह एवं क्रय-क्षमता को माना जा रहा है। यही कारण है कि मनुष्य अधिकाधिक अर्थसंग्रह कर अपने को सुरक्षित अनुभव करता है। इन बाह्य पदार्थों के संग्रह हेतु जिसकी जितनी अधिक क्षमता होती है अथवा जो इनसे युक्त होता है, उसे समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है एवं समृद्ध भी समझा जाता है, क्योंकि वह पदार्थ-संग्रह की दृष्टि से दूसरों की अपेक्षा सुदृढ़ है।

काम का तात्पर्य है- इच्छा एवं वासना। मनुष्य में इच्छाओं की शृंखला सतत चलती रहती है। वह इन इच्छाओं की पूर्ति बाह्य पदार्थों से करता है। इच्छाओं का संसार आवश्यकताओं से बड़ा है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में इतनी कठिनाई नहीं है, किन्तु नित नवीन इच्छाओं का जन्म मनुष्य को दुःखी एवं अशान्त बनाए रखता है। उसे ये इच्छाएँ सक्रिय भी रखती हैं, किन्तु इन इच्छाओं या कामनाओं की दिशा क्या होनी चाहिए, यह निर्णय धर्म के आधार पर होता है। इसलिए अर्थ एवं काम को धर्म से नियन्त्रित किए जाने की आवश्यकता है। जब कामनाएँ विवेक रूपी धर्म से नियन्त्रित नहीं होती हैं तो वे दुःख की कारण बन जाती हैं।

अर्थ-तंत्र का विकास काम पुरुषार्थ पर प्रतिष्ठित है। आज इस सूत्र को औद्योगिक उत्पादकों द्वारा खूब अपनाया जा रहा है। विज्ञापनों के माध्यम से मनुष्य में विशिष्ट उत्पाद को प्राप्त करने के लिए कामना/इच्छा उत्पन्न की जाती है। इस इच्छा के उत्पन्न होने पर मनुष्य उस विशिष्ट उत्पाद को जुटाने हेतु प्रयत्नशील होता है और बाजार में उस उत्पाद का विक्रय अर्थतंत्र के विकास को नया आयाम देता है। जितनी बाह्य पदार्थों की मांग बढ़ती है, उनकी पूर्ति हेतु उतना ही अर्थ का व्यापार विकसित होता है। काल्पनिक मांग के आधार पर भी वायदा व्यापार के रूप में व्यापारिक तंत्र बढ़ रहा है, जो कभी भी ढह सकता है एवं धोखा दे सकता है।

प्रश्न यह है कि मनुष्य अर्थ के प्रति इतना आकृष्ट क्यों है? उत्तर में कहा जा सकता है कि अर्थ/पदार्थ से मनुष्य को सुख एवं सुविधा की प्राप्ति होती है। कौटिल्य ने अर्थ को सुख का हेतु स्वीकार किया है। तत्त्वार्थ सूत्र में भी उसे साता-असाता रूपी सुख-दुःख का हेतु माना गया है (तत्त्वार्थ सूत्र, 5.20)। सुख एवं सुविधाओं के लिए मनुष्य लालायित रहता है। अतः वह सुखकारी पदार्थों एवं अर्थ के अधिकाधिक संग्रह के लिए प्रवृत्त होता है, जो व्यक्तिगत अशान्ति एवं वर्ग संघर्ष को जन्म देता है। यही नहीं वह विलासिता को अपनाकर स्व एवं पर की हानि करता है। विडम्बना यह है कि जिन व्यक्तियों में कामनाएँ कम हैं, उन्हें आज पिछड़ा समझा जाता है तथा जो अधिक कामनाओं के साथ अर्थसंग्रह करके जीता है

उसे अधिक विकसित माना जाता है। इस तरह मनुष्य के विकास का आधार अर्थ एवं काम की वृद्धि को माना जा रहा है। किन्तु यह भी भलीभांति जान लेना चाहिए कि अर्थ एवं काम जब तक धर्म से नियन्त्रित नहीं होंगे तब तक वे मनुष्य के वास्तविक विकास में साधन नहीं बन सकते। इनसे दुःख ही पुष्ट होता है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा गया है- **कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं। सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।** (उत्तरा. 32.19) अर्थात् समस्त लोक में दुःख का कारण कामनाओं के प्रति आसक्ति है।

मनुष्य का विकास सम्यक् रीति से तभी हो सकता है जब वह जीवन के प्रति सही सोच का विकास करे। प्राचीन काल में इसे ही धर्मशिक्षा अथवा अध्यात्म शिक्षा का नाम दिया गया। मनुष्य को यह समझाने की आवश्यकता है कि इन्द्रियों के द्वारा पदार्थों के सेवन से जो सुख उपलब्ध होता है वह क्षणिक है तथा अशान्त बनाने वाला है। इन विषयों के प्रति अधिक लोलुप बनने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए विषय-पदार्थों की प्राप्ति के समय कामनाओं का मूल्यांकन करना चाहिए कि मेरे लिए कौनसी इच्छाएँ या कामनाएँ पूर्ण करना आवश्यक है तथा कौनसी कामनाओं को पूर्ण किए बिना भी सुख से रहा जा सकता है। दूसरी बात यह है कि इन कामनाओं या इच्छाओं की पूर्ति हेतु नैतिक विधि क्या होगी, जिससे अन्य मनुष्यों एवं प्राणियों का जीवन बाधित न हो।

दुःख एवं वर्ग-संघर्ष को रोकने के लिए इच्छाओं अर्थात् काम पर नियन्त्रण आवश्यक है। उपासकदशांगसूत्र में प्रभु महावीर ने इच्छा-परिमाण व्रत का विधान इसीलिए किया है। इच्छा परिमाण से सम्बद्ध श्रावक के प्रमुख दो व्रत हैं- परिग्रह परिमाण एवं भोगोपभोग परिमाण। विस्तार से सोचें तो इच्छा-परिमाण होने पर श्रावक के प्राणातिपातविरमण, मृषावाद विरमण, अदत्तादान विरमण, मैथुन-विरमण, दिक्-विरमण, अनर्थदण्ड-विरमण, सामायिक, देशावगासिक, पौषधोपवास एवं अतिथिसंविभागव्रत भी भलीभांति सम्पन्न होते हैं। जो स्वयं की कामनाओं को नियन्त्रित कर लेता है वह ही सही सोच की दिशा में आगे बढ़ पाता है। कामनाओं या इच्छाओं के नियन्त्रण का तात्पर्य है- मन एवं इन्द्रियों पर नियन्त्रण। जो मन पर नियन्त्रण कर सकता है, वस्तुतः वह ही मनुष्य है। उसकी द्वितीय विशेषता है कि उसमें बुद्धि एवं विवेक का विशिष्ट सामर्थ्य है। वह यह चिन्तन कर सकता है कि उसके लिए क्या हितकारी है एवं क्या अहितकारी है। अर्थशास्त्र में हित-अहित का चिन्तन नहीं होता, किन्तु जब अर्थशास्त्र हित-अहित के चिन्तन से युक्त हो जाए तो वह सापेक्ष अर्थशास्त्र बन जाता है। वह अर्थशास्त्र फिर मनुष्य के समुचित विकास में सहायक हो सकता है। यद्यपि अधिकतर अर्थशास्त्री इच्छा-परिमाण को आर्थिक-विकास में बाधक मानते हैं, किन्तु इच्छाओं का परिमाण नहीं होगा तो प्राकृतिक

संसाधनों की शीघ्र समाप्ति हो जाएगी एवं वर्ग-संघर्ष बना रहेगा। इच्छाओं की दौड़ कभी तृप्ति का अनुभव नहीं कराती, अपितु अभाव का दुःख सदैव घेरे रखता है। इस बिन्दु की ओर अर्थशास्त्री जे.के.मेहता ने भी ध्यान आकृष्ट किया है कि सतत आर्थिक विकास के लिए इच्छाओं का परिमाण किए जाने की आवश्यकता है।

पदार्थ के प्रति आसक्ति परिग्रह है। इसे मूर्च्छाभाव भी कहा गया है। मूर्च्छा में हित-अहित का बोध नहीं होता। बोध नहीं होने के कारण व्यक्ति पदार्थ-संग्रह में प्रवृत्त होता है जो बाह्य परिग्रह को बढ़ावा देता है। पदार्थ-संग्रह की अनियन्त्रित इच्छा उन्मत्तता की द्योतक है। जो व्यक्ति की अशान्ति एवं रागान्धता का कारण बनती है तथा समाज में संघर्ष एवं ईर्ष्या-द्वेष को उत्पन्न करती है। इसलिए गृहस्थ भी मकान, जमीन, स्वर्णादि धातुओं, बैंक-बैलेंस आदि का सीमित स्वामित्व रखे, ताकि अन्य जरूरतमन्दों को भी उनकी प्राप्ति हो सके एवं स्वयं भी शान्ति एवं उच्चतर सुख का अनुभव कर सके। परिग्रह-परिमाण के साथ भोगोपभोग-परिमाण भी अत्यन्त उपादेय है। भोगों की असीमित इच्छाएँ मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के साथ आत्मिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती हैं। अतः इन सभी स्तरों पर स्वस्थ रहने के लिए भोगोपभोग के परिमाण पर बल प्रदान किया गया है। भोगोपभोग शब्द आधुनिक शब्दावली में 'कन्ज्यूमरिज्म' कहलाता है। मनुष्य पदार्थों का उपभोक्ता है। अधिक भोग एवं उपभोग उसके शरीर एवं चित्त को विकृत करते हैं, फलतः वह दुःखी होता है। इस दुःख से यदि बचना है तो भोगोपभोग-योग्य पदार्थों का भी परिमाण उपादेय है।

इच्छाओं का परिमाण यदि हो जाए तो मनुष्य हिंसा भी कम करेगा, झूठ बोलने की जरूरत नहीं रहेगी, चोरी भी नहीं करेगा, व्यभिचार से भी बचेगा, पारस्परिक व्यवहार को मृदु बना सकेगा, ईर्ष्या-द्वेष में कमी आएगी, चित्त में स्थिरता उत्पन्न होगी, दूसरों के दुःख-दर्द को कम करने में सहयोगी बन सकेगा तथा अभाव के दुःख से बचकर आनन्द का अनुभव कर सकेगा। इसलिए इच्छाओं का मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है। इच्छाओं पर नियन्त्रण हेतु दो विधियाँ उपयोगी हो सकती हैं- 1. अनावश्यक इच्छाओं का परिहार एवं, 2. अहितकारी इच्छाओं का त्याग।

जो इच्छाओं की उत्पत्ति एवं अर्थ के संग्रह के चक्र में जीता है, वह सदैव अभावग्रस्त बना रहता है। वह सदैव किसी न किसी अभाव के दुःख का अनुभव करता है। इस अभाव के दुःख पर तभी विजय प्राप्त की जा सकती है, जब इच्छाओं का नियमन हो। अत्यन्त उपयोगी इच्छाओं की पूर्ति नीतिपूर्वक/धर्मपूर्वक मूल्यों की रक्षा करते हुए की जानी चाहिए। शान्ति, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त आदि से युक्त अर्थशास्त्र ही इच्छाओं के नियमन में सहायक हो सकता है, तथा मनुष्य स्वयं की शान्ति एवं समाज के समुचित विकास का हेतु बन सकता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

नो इंदियग्गेज्झ अमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो।
अज्झत्थ हेउं निययस्स बंधो, संसारहेउं च वयंति बंधं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 14.19

अर्थ– ज्ञान, दर्शन आदि से युक्त अमूर्त्त पदार्थ (आत्मा आदि) इन्द्रियों के द्वारा ग्राह्य नहीं हैं। अमूर्त्त होने से वे पदार्थ नित्य हैं। आत्मा का बंधन आन्तरिक (राग-द्वेषादि अनित्य) कारणों से होता है और वह बंध ही संसार का हेतु है।

विवेचन– संसार में जितने भी द्रव्य हैं अथवा पदार्थ हैं, उन्हें मूर्त्त एवं अमूर्त्त इन दो कोटियों में विभक्त किया जा सकता है। जिनमें रूप, रस, गंध एवं स्पर्श गुण पाया जाता है वे सब पदार्थ मूर्त्त कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में पुद्‌गल द्रव्य मूर्त्त है, क्योंकि उसमें रूप, रस आदि गुण पाये जाते हैं। पुद्‌गल कितना भी सूक्ष्म क्यों न हो, वह मूर्त्त ही होता है। परमाणु को भी मूर्त्त माना गया है। इन्द्रियों के द्वारा स्थूल मूर्त्त पदार्थ को ही ग्रहण किया जा सकता है। अमूर्त्त पदार्थ इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं किए जा सकते तथा परमाणु सदृश सूक्ष्म पुद्‌गल भी इन्द्रियग्राह्य नहीं होते हैं। ग्रहण करने का अर्थ यहाँ पर जानना है अर्थात् इन्द्रियों के द्वारा अमूर्त्त पदार्थों को जाना नहीं जा सकता। अमूर्त्त द्रव्य हैं- धर्म, अधर्म, आकाश, आत्मा और काल। ये सभी द्रव्य इन्द्रियों के द्वारा नहीं जाने जा सकते। इनका या तो अनुमान से ज्ञान होता है या आगम से। आत्मा का ज्ञान स्व संवेदन के रूप में प्रत्यक्ष होता है। आत्मा को इन्द्रियों से नहीं जाना जा सकता। इन्द्रियों से बाहरी जगत् का ही ज्ञान होता है, भीतर को जानने के लिए इन्द्रियाँ समर्थ नहीं हैं।

इस गाथा में यह भी तथ्य निरूपित किया गया है कि जो अमूर्त्त भाव होते हैं वे नित्य होते हैं। इसका तात्पर्य है कि आत्मा अमूर्त्त होने से नित्य है। इसका कभी नाश नहीं होता। नाश नहीं होने पर भी यह आत्मा कर्मों से बंधी हुई है। इसके बंधन में स्वयं के आन्तरिक राग-द्वेष आदि ही कारण (अनित्य) हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें कषाय कहा गया है। जीव के साथ जब तक कषाय का सम्बन्ध है तब तक बंधन है। बंधन कर्म पुद्‌गलों का होता है। वे कर्म पुद्‌गल मूर्त्त हैं। अतः उनका नाश संभव है। उनका नाश होने पर आत्मा का नित्य स्वरूप प्रकट हो जाता है, जो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य आदि गुणों से सम्पन्न होता है।

बंधन के रहते हुए संसार में संसरण का अथवा जन्म-मरण का हेतु बना रहता है। इस हेतु को समाप्त करने के लिए राग-द्वेष आदि का समापन आवश्यक है। ये राग-द्वेष आदि आत्म गुणों को ढक देते हैं तथा व्यक्ति की चेतना को बहिर्मुखी बनाकर बाह्य विनाशी विषयों के प्रति आकर्षित करते हैं। अतः मूर्त्त के प्रति आकर्षण को छोड़कार अमूर्त्त एवं नित्य आत्मा के स्वरूप को जानने के लिए प्रस्तुत गाथा प्रेरणा करती है। **-सम्पादक**

विचार-वारिधि

सद्गृहस्थ का धर्म

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जहाँ कहीं भी इन्द्रियों व मन की राग वृत्ति का पोषण है, वहाँ धर्म नहीं है।
- मेरा अनुभवी मन कहता है कि बाहरी प्रदर्शनों से जैन धर्म दुनिया के सामने अपना गौरव नहीं बढ़ा सकता, जैन धर्म तो आडम्बरविहीन रहने की बात कहता है।
- माताएँ तपस्या के साथ संयम करें, वेश-भूषा और लेन-देन में संयम करें तो हजारों लाखों जीवों की हिंसा बच सकती है।
- एक तरफ जानवरों को छुड़ाना और दूसरी तरफ हिंसा से जो चीजें बनती हैं, उनको इस्तेमाल करना, कितनी विसंगति है।
- गुणवानों ने जीवन बनाने का जो मार्ग-दर्शन दिया है, उसको ग्रहण कर जीयें, यह उनका बहुत बड़ा गुणगान है।
- महावीर ने मार्ग बताया कि अपना खयाल रखकर, अपनी चोटी पहले पकड़कर, खुद सुधरते हुए संसार का सुधार करो।
- यदि दूसरों को देखकर तालियाँ बजाते रहेंगे और घर में करने-कराने को कुछ भी नहीं है तो वास्तव में समाज का कोई गौरव नहीं होगा।
- सद्गृहस्थ वह है जो सत्पात्र को रोज दान देवे।
- देव-भक्ति, गुरु-भक्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान- ये गृहस्थ के षट् कर्म बताये गये हैं।
- आपका दान जनता की नज़र में जल्दी आ सकता है, लेकिन साधु का दान देखने में नहीं आता।
- नाम के भूखे महानुभाव ज्यादा हैं और काम करने के कम।
- यदि दान का उचित उपयोग करें तो समाज में देने वालों की कमी नहीं है।
- आप द्रव्य का त्याग करेंगे तो ममता घटेगी। दूसरी बात, समाज में त्याग की परिपाटी कायम रहेगी। तीसरी बात, त्याग करने से समाज दुर्बल और पराश्रित नहीं रहेगा, अपने पैरों पर खड़ा रह सकेगा।
- जैन धर्म जैसे सत्यपक्षपाती धर्म को पाकर आप पिछड़े रह गये, तो इससे ज्यादा कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।
- द्रव्य-दया से ही जैन धर्म ऊँचा नहीं उठेगा, द्रव्य-दया के साथ-साथ भाव-दया भी करें।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

स्वतन्त्रता का महत्त्व

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

15 अगस्त 2013 को सवाईमाधोपुर चातुर्मास में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा फरमाया गया प्रवचन 26 जनवरी के अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है। प्रवचन का संकलन सवाईमाधोपुर के तत्कालीन संघमंत्री श्री पारसचन्दजी जैन बोहरा द्वारा किया गया है।-सम्पादक

अनन्तकाल की पराधीनता को हटाकर ज्ञान क्रिया के माध्यम से आत्मभाव जगाने वाले सर्वज्ञ सर्वदर्शी अरिहंत भगवन्तों, कर्म की इसी पराधीनता को मिटाने के लिए महाव्रत, समिति-गुप्ति की आराधना करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

इन्द्रियों की अधीनता एवं पापों की पराधीनता से मुक्ति तथा कषाय की मंदता के लिए प्रतिदिन वीरवाणी के माध्यम से सन्तों के प्रेरक प्रवचन हो रहे हैं। आज का दिन बाहर की पराधीनता मिटाने का दिन कहा जा रहा है। भीतर की पराधीनता में अभी तक जकड़े हुए हैं। इस पराधीनता को मिटाने के लिए एक नहीं अनेक दृष्टान्त आपके सामने रखे गए। धर्मरुचि अणगार ने कड़ुवा तुम्बा पीकर अनेकानेक प्राणियों की रक्षा की। सत्यवादी हरिश्चन्द्र ने राजपाट ही नहीं छोड़ा, बल्कि अपने आपको बाजार में बिकने के लिए खड़ा कर दिया। दूसरों के द्वारा कलंक का आक्षेप लगाने के बावजूद शीलरक्षा के लिए सुदर्शन सेठ ने शूली पर चढ़ना स्वीकार किया। आपकी भाषा में भारत 1947 में आजाद हो गया। कितने बरस हो गये? स्वतंत्रता दिलाने वालों को उम्मीद थी कि अब हमारी सरकार बनने के बाद हिंसा के जो तांडव हो रहे हैं वे बन्द हो जायेंगे तथा भ्रष्टाचार, मिलावट, भाई-भाई को मारने की प्रवृत्ति में परिवर्तन आयेगा। किन्तु आज भी समाचारपत्र इन घटनाओं से भरे रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव भगवन्त (श्री हस्तीमल जी महाराज सा.) बताते थे कि 1947 में वे अजमेर में थे। हर व्यक्ति अपना स्वार्थ छोड़कर देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानी देने को उत्सुक था। शौकत अली, मौहम्मद अली दोनों सगे भाइयों ने विदेशी वस्तुओं की सरे आम होली जलाई तथा जिस किसी के पास विदेशी कपड़ा देखा उसे उतारा और आग के हवाले कर दिया। किसलिए? पराधीनता मिटाने के लिए। न जाने कितने देशभक्तों ने स्वतंत्रता के संग्राम में न जाने कितने-कितने दुःख झेले। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्यां टोपे जैसे अनेक वीरों को याद किया जाता है। 1857 की क्रांति उस समय का हिस्सा है। झाँसी में रहने वाले अमीचंद बाँठिया, हुकमीचन्द कानूनगो उन्हीं के एक साथी मुनीर बेग ने

साथ रहकर इस आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। हैदराबाद के नवाब के पास इन तीनों को पकड़ने के लिए उस समय 10 लाख रुपये का ईनाम रखा गया जब 1 पैसे में जलेबी से पेट भर जाता था। इन्हें खोजते-खोजते अंग्रेज थक गये तो आखिर अत्याचार का सहारा लिया गया। जलियाँवाला बाग जैसे अनेक उदाहरण आपने सुन रखे हैं। पर इस जैन भाई अमीचन्द ने नगर सेठ होते हुए भी देश की आजादी के लिये अपना पूरा धन समर्पित कर दिया। जैसा कि अभी योगेश मुनिजी कह गये- घर का भेदी लंका ढ़हाये। देश के किसी भेदी ने पता बता दिया। झाँसी के वीरों को ढूंढते हुए अंग्रेज पुलिस पहुँची। पिता को पत्थरों-डण्डों से पीटा। जब तक वे मरे नहीं, उनको पीटते रहे। इनके लड़कों को पुलिस लोहे की कीलों वाले जूतों से ठोंकते हुए श्मशान तक ले गयी। इतना मारा- इतना मारा कि लड़के अपने आप खड़े नहीं हो सके। वैर की आग में ऐसा हो जाता है।

एक किस्सा कहने जा रहा हूँ। अमीचंद बाँठिया की माता को कोर्ट में लाया गया। कोर्ट में अमीचंद के सामने हरिजनों से बलात्कार करवाया गया। पूछा, बता तेरे साथ कौन-कौन हैं? यह सब किसके सामने हो रहा है? नाम बताना तो दूर, अमीचन्द यह कहकर आ गया कि भारत मेरी माँ हैं। ये मेरे बंधु हैं। इनकी आजादी के लिए यह सब सहन करने को तैयार हूँ। इसी अमीचंद के पैर की चमड़ी उतारकर उसे काँटों पर चलाया गया, उल्टा लटकाकर बुरी तरह से मारा-पीटा गया, बर्फ की शिला पर रखा गया, विभिन्न अंगों पर कौड़े बरसाये गये। सुनते-सुनते रौंगटे खड़े हो जायें, ऐसा अत्याचार।

एक जैन की बात कह रहा हूँ। आज उन कुर्बानी करने वालों की बातें सुनकर हमारे मन में क्या चल रहा है? पैसे के लिए हर चीज में मिलावट कर रहे हैं। स्वतंत्र भारत में कौनसा ऐसा व्यापारी है जो मिलावट नहीं करता? सुना है धनिये में गधे की लीद मिलाई जाती हैं, गेहूँ में कँकर कौन खरीदेगा? कौन खायेगा? किसान अधिक दूध के लिए इंजेक्शन लगाता है। भले ही गाय को कितनी ही वेदना हो। अधिक खेती के लिए कीटनाशकों का बहुतायत से प्रयोग हो रहा है। क्या किसान एवं मिलावट करने वाला नहीं खायेगा? खाने वाले कौन? किसके लिए अनैतिक पैसा कमाया जा रहा है?

इस देश में अपने भाइयों को बचाने के लिए हजारों लोगों ने बलिदान दिया। आज आप क्या कर रहे हैं? आप अपने परिवार के लिये कितना धोखा दे रहे हैं? अपने बच्चों के लिए आप क्या कर रहे हैं? जिस बापू को रेल में बैठने पर ठोकर मारी गयी, तिलक को भारत माँ की जय बोलने पर 3 माह की सजा दी गयी। न जाने कितनी यातनाएँ दी गई। किसलिये? आप उनके त्याग एवं बलिदान को याद कीजिए तथा स्वतन्त्र भारत में भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता को तिलांजलि दीजिए।

आज आप स्वतंत्र होते हुए भी स्वच्छंद हैं। स्वतंत्रता व स्वच्छंदता में क्या भेद है, उसे समझें। अपने स्वार्थ में ही जीने वाला स्वच्छंद है। अपनी मर्यादा में अपने कर्तव्य में जीने वाला स्वतंत्र है। आजादी के बाद स्वच्छन्दता बढ़ती नज़र आ रही है। मैंने स्वाध्यायी शिविर में कहा था। घर का मालिक कौन है? घर का नौकर कौन? नौकर कहे अनुसार काम करता रहता है। मालिक सबका ध्यान रखते हुए कार्य करता है। नौकर को कहा जाएगा, वह उसे कर देगा। फिर खुद की जिम्मेदारी पूरी। मालिक कौन? जिसको अपने परिवार के सुख-दुःख का खयाल है। आज की स्थिति देखिए। छह-छह महीने हो जाते हैं बाप-बेटे में बात हुए। बाप को बेटे से बात करने की फुर्सत नहीं है और न ही बेटे को बाप से बात करने की। जिस बेटे के लिए बाप ने झूठ का सहारा लिया, उस बेटे से बात करने के लिए समय लेना पड़ता है। मैं कलेक्टर व मंत्री की बात नहीं कर रहा । परिवार वह है जिसमें हर सुख-दुःख में सहभागी बना जाए, नहीं तो अनाथालय एवं परिवार में कोई फर्क नहीं रहेगा। दूसरों के श्रम का भी मूल्य समझिए। जो धान खा रहे हैं, उसमें कितनी मेहतन लगी है, कपड़ा जो तन पर है, उसके निर्माण में कितने हाथ लगे हैं। गेहूँ तैयार करने में कितनी मेहनत है? ऊबड़-खाबड़ मिट्‌टी को मिलाकर बीज डालने के पहले बारिश का इन्तजार, बीज डालने के बाद रखवाली, भरी सर्दी में नंगे बदन पाणत करना तब जाकर फसल तैयार होती है। धान कैसे आया? कपड़े कैसे आये एक-एक को तैयार करने में न जाने कितने लोगों का परिश्रम लगता है।

देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति में कितनी माताओं की गोद उजड़ी? कितने जवान देश के लिए शहीद हुए? कितने संकट के बाद आजादी मिली? आज इस आजादी का मतलब क्या? मैंने पढ़ा है बाल गंगाधर तिलक आजादी के मतवाले थे। उनकी मंशा थी कि आजादी के बाद हमारा अपना विधान बनेगा, देश में सत्य, अहिंसा के सिद्धान्तों पर चलने वाली सरकार बनेगी, गोहत्या बंद हो जायेगी। आज 66 वर्ष पूरे हो गये, गोहत्या बंद नहीं हुई, कत्लखाने नये खुले, जैनों ने अण्डे खाने शुरु कर दिये। बड़े खेद के साथ कह रहा हूँ कि कभी जैनों की परिभाषा यह थी कि रत्नों की पोटली भी मिल जाए तो जाकर उसके पास पहुँचायी जाती थी, जिसकी वह है। आज स्वतंत्र भारत की बात कहूँ, किसी के हाथ से कोई चीज़ नीचे गिर जाए तो गायब होने में देर नहीं लगती, धर्मस्थान से दुपट्‌टे व चोल-पट्‌टे गायब हो जाते हैं। धर्मस्थानकों एवं मन्दिरों से जूते-चप्पल चोरी हो जाते हैं। ये परतंत्रता में नहीं स्वतंत्रता में ही हो रहा है।

स्वतंत्रता किसमें एवं स्वच्छंदता क्या? अपने सुख के लिए जीना स्वच्छन्दता है। अपनी आत्मा का तंत्र मर्यादा का तंत्र है, यही स्वतन्त्रता है। स्वच्छंद लोग नारकी बन सकते हैं। क्या कह रहा हूँ? रावण को समझाने वाले मंदोदरी, विभीषण समझाते-समझाते थक

गये, किन्तु वह खुद मरा सो मरा, पूरी लंका को ले डूबा। एक दुर्योधन के दुराग्रह के कारण 18 अक्षौहिणी सेना स्वाहा हो गयी। कौरव एवं पाण्डव में युद्ध के कारण क्या थे? भाई पाण्डवों ने 5 राज्यों के बदले 5 गाँव माँगे, पर दुर्योधन द्वारा सूई की नोंक के बराबर जमीन नहीं दी गई। क्या वह जमीन साथ लाया था? साथ लेकर जायेगा? फिर लड़ाई किसलिए? भाई-भाई लड़ रहे हैं, क्यों? एक भाई ने एक पत्थर आगे लगा दिया तो झगड़ा हो जाता है। एक बात बताओ, यहाँ से कौन जमीन साथ ले जायेगा? कहा गया है-

धरती अखण्ड कवाँरिया, वर दिया कई लाख।
मुसलमान गड गये, हिन्दू हो गये राख।।

यह दिल्ली की कुर्सी अखण्ड कँवारी है, न जाने कितने आये, न जाने कितने चले गये, कुर्सी वहीं की वहीं। कौन है जो कुर्सी को साथ ले जायेगा? एक पत्थर पटक देने के मामले में लड़ाई हो जाती है। कहते हैं कि गाँवों में खेत की बाड़ हर फसल पर आगे बढ़ा दी जाती है। रास्ता छोटा हो जाता है। किसान, मेहमान, मेजबान कौन जमीन साथ लेकर जायेगा?, कोई नहीं।

दिल्ली का तख्त किसका है? कौन साथ ले जायेगा? क्या जमीन की बात कहूँ, क्या धन की बात कहूँ? मनुष्य नंगा आया था, एक सूत का धागा भी साथ लेकर नहीं आया और जाएगा तब भी खाली हाथ जाएगा। आप अपनी मर्यादा में जीवनयापन करिए। आपके मन में खोट है तो दूसरा भी होशियार है।

आज अपने पर अनुशासन रूपी स्वतन्त्रता की आवश्यकता है। दूसरों को समझाने या तारने के बजाय खुद को तारने का प्रयत्न करें। दूसरों का भला करने के बजाय पहले अपना भला करें। लोभवृत्ति से न अपना भला हो रहा है न देश का भला हो रहा है। आज चपरासी से लेकर मंत्री तक भ्रष्टाचार में लिप्त है। कोई छोटा चोर तो कोई बड़ा चोर। सबने अपनी ईमानदारी खो दी है। इसलिये अपना भला करो। अपने पर दया करो, सब पर दया हो जायेगी।

स्वतंत्रता के लिए देशभक्तों की कुर्बानी देख ली। धर्म की रक्षा के लिये धर्मरुचि अणगार, शीलव्रती रानियों एवं न जाने कितनों का त्याग जान लिया। बाड़मेर जाकर आया। वहाँ सुना कि भूख से माँ बीमार है, भाई की पढ़ाई के लिए फीस नहीं है, फिर भी आदेश की घण्टी बजते ही सैनिक मोर्चे पर जाने के लिये कुर्बानी देने निकल जाते हैं।

अपने आपको स्वतंत्र करने की भावना जगाई जा रही है। हर आदमी ईमानदार बन जाए यही स्वतन्त्रता का सही रूप है। किन्तु यहाँ तो चोर, साहूकार को चोर बना रहा है। धर्म का उपदेश देने वाला स्वयं पाप कर रहा है। तब उत्थान कैसे हो? करोड़ों की चोरी करके लाखों का दान देकर नाम लिखा दिया तो किसी मतलब का नहीं है। स्वतंत्र बनने के लिए पाप के बजाय धर्म में लग जायें तो देश की सच्ची आजादी का अहसास होगा। ▪

प्रवचन

कैसे मिले स्थायी समाधान

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में फरमाए गए इस प्रवचन का सम्पादन डॉ. दिलीप जी धींग द्वारा किया गया है।**-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सन्तों के समीप छोटे-बड़े कई श्रावक-श्राविका जिज्ञासा लेकर उपस्थित होते रहते हैं। एक बार मेरे पास एक युवक आया एवं कहने लगा- "महाराजश्री! एक समस्या है। समाधान चाहता हूँ। समस्या यही कि सांसारिक जीवन सभी अनुकूलताओं से गुजरे और कभी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़े। ऐसा मंत्र या उपाय बताने की कृपा करें।"

मैंने कहा- "भैया! हम सत्य जीवन का मार्गदर्शन कर सकते हैं, लेकिन मंत्र आदि का प्रयोग करना और बताना साधु के लिए निषिद्ध है।"

वह बोला- "महाराज साहब! आपके पास प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्ति आते हैं। वे सब यों ही थोड़े आते हैं। किसी सिद्धि व समाधान के लिए ही तो आते हैं। आप मंत्र व चमत्कार करते हैं, इसीलिए तो वे आते हैं।"

सन्त और गृहस्थ के बीच इस प्रकार के संवाद कभी-कभी सुनने को मिल जाते हैं। भगवान महावीर के पावन शासन में संत जीवन जिस उद्देश्य से स्वीकार किया जाता है, उसका एक मात्र लक्ष्य आत्मशुद्धि है। आत्मशुद्धि के फलस्वरूप ही सदा-सर्वदा के लिए समस्त समस्याओं की समाप्ति, जन्म-मरण से मुक्ति तथा अक्षय सुख व अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है। साधक यदि मूल लक्ष्य से भटककर मंत्र-तंत्र में उलझ गया तो मानो कुएँ से निकलकर खाई में गिर गया। मंत्र व तंत्र से कदाचित् किसी अनुकूल उपादान वाले का समाधान हो भी गया तो वह चमत्कार, प्रसिद्धि व कामना में साधक को भटकाने का हेतु बन सकता है।

प्रायः यह देखा गया है कि गृहस्थ जीवन में रहने वाला हर व्यक्ति किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। तत्काल समाधान और सांसारिक सुखों की लालसा से वह सन्त सन्निद्धि में भी आ सकता है। लेकिन इन उपायों का सहारा लेकर वह स्व-पर के लिए अधोगामिता का कारण बनता है। प्रसिद्धि व लोकैषणा साधक को मूल लक्ष्य से ही हटा सकती है। अतः आगमवाणी साधक को प्रतिपल अप्रमत्त रहते हुए मंत्र, तंत्र, लौकिक सिद्धि व प्रसिद्धि तथा लोकैषणा से दूर रहने की प्रेरणा देती है।

श्रमण भगवान महावीर ने अपनी कल्याणकारी अमोघ वाणी के माध्यम से साधकों का मार्गदर्शन किया है। वर्तमान में परमात्मा सदेह व प्रत्यक्ष रूप से विराजमान नहीं है, लेकिन उनके द्वारा उपदिष्ट यह आगमवाणी अप्रत्यक्ष रूप से उनका ही प्रतिरूप है। सच्चा साधक वही है जो स्वयं आत्मानुशासित रहकर अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहे। आचारांग सूत्र में कहा गया है- **'पणया वीरा महावीहिं'**। जो वीर हैं, वे समर्पित होकर साधना के महापथ पर आगे बढ़ते हैं।

आगम और इतिहास साक्षी है कि आत्मशुद्धि की साधना करने वाले साधक के जीवन में गेहूँ के साथ भूसे के समान अनेक चमत्कारी सिद्धियाँ व लब्धियाँ सहज ही प्रकट हो जाती हैं। ऐसा साधक चाहे तो एक तिनके को आंगन में गिरा दे तो मंत्रबल से स्वर्ण व रत्नराशि का ढेर लग सकता है। सरसों के दानों को अभिमंत्रित कर विशाल सैन्यबल खड़ा कर सकता है। तेजोलेश्या व पुलाकलब्धि का स्वामी अपनी शक्ति व लब्धि के बल पर विस्तृत परिधि में रहने वाले जन-धन को भस्म कर सकता है। ऐसी एक नहीं, अपितु अनेक प्रकार की लब्धियाँ आत्मानुभूति करने वाले साधक के जीवन में अनायास ही प्रकट हो सकती हैं। देवता भी ऐसे साधकों की चरणसेवा कर अपने आपको धन्य समझते हैं। लेकिन आत्मलक्ष्यी साधक इन सब ऋद्धियों, सिद्धियों और लब्धियों को महत्त्व नहीं देता है। वह चमत्कार की मृगतृष्णा में नहीं फँसता है और सिर्फ आत्मशुद्धि तथा आत्मसिद्धि हेतु समर्पित रहता है।

विष्णुकुमार मुनि की तरह क्वचित् अपरिहार्य परिस्थिति में जिनशासन की रक्षा के लिए साधक को लब्धि का प्रयोग करना भी पड़े तो प्रायश्चित्त लेकर पुनः आत्मसाधना में मग्न हो जाना श्रेयस्कर है। साधक का एकमात्र लक्ष्य आत्मसाधना है। आपवादिक स्थिति में लब्धि का प्रयोग करना भी पड़ा तो एक मात्र जिनशासन की रक्षा के लिए और उसका भी प्रायश्चित्त किया गया। आत्मालोचना के बिना यदि लब्धिप्रयोगकर्ता को मरण का वरण करना पड़ता है तो भगवती सूत्र में उसे विराधक या असंयमी कहा गया है।

इस चर्चा में विचारणीय प्रश्न यही है कि शाश्वत समाधान क्या है, चरम व परम लक्ष्य कौनसा है तथा सच्चा मार्ग कौनसा है? यदि भौतिक जगत् की उपलब्धियाँ ही शाश्वत समाधान दे पातीं तो लब्धिधारी संत निश्चित ही इनका उपयोग व प्रयोग करते। भगवान महावीर की भवभयहारिणी वाणी तथा सन्तों के आत्मक्ष्यी जीवन इस बात के साक्षी हैं कि भौतिक उपलब्धियाँ न तो चिरस्थायी हैं और न ही शाश्वत श्रेयस्कारी।

सांसारिक मंगल कभी किसी के लिए अमंगल भी हो सकता है। समय के साथ सम्पत्ति विनष्ट हो सकती है। संयोग वियोग में परिवर्तित हो सकता है। भौतिक या सांसारिक समाधान नितान्त अस्थायी होते हैं। कदाचित् वे नई समस्या का कारण भी बन

सकते हैं। कभी-कभी सांसारिक समाधान कुछ ऐसे होते हैं, जैसे नाव में एक छेद से आने वाले पानी की निकासी के लिए एक नया छेद और कर देना। संसारीजनों की यही तो स्थिति है। कैसी मृगतृष्णा! कैसी मृगमरीचिका!

एक उदाहरण से यह बात अच्छी तरह से समझी जा सकती है। एक व्यक्ति एक सन्त की सन्निद्धि में पहुँचा। भक्त उदास था। चेहरे पर मायूसी छाई थी। भक्त को निराश देख संत ने उसे एक ताबीज दिया। यह सोचकर कि इससे इस भोले भक्त का समाधान हो जायेगा। पर, यह कैसी नियति कि अगली बार जब भक्त पुनः सन्त सान्निध्य में पहुँचा, तब भी उसके चेहरे पर तनाव परिलक्षित हो रहा था। संत ने पूछा- "अब तनाव क्यों, यह उदासी क्यों?" भक्त बोला- "महाराज! आपने कृपा करके समाधान किया, पर अब उससे एक नई समस्या खड़ी हो गई है। हर पल यही चिन्ता रहती है कि कहीं यह ताबीज खो न जाए।"

इस आख्यान से यह स्पष्ट होता है कि परमार्थ दृष्टि से कोई भी भौतिक समाधान न तो समाधान है और न ही समाधान दे सकता है। वरन्, यह तो अग्नि की ज्वाला में पूले की भाँति समस्या को और बढ़ाने वाला ही होता है। शायद कोई विचार में पड़ सकता है कि यह कैसी बात कही जा रही है? लेकिन सच्चा समाधान यही है कि जो सभी समस्याओं का चिरस्थायी समाधान कर दे, सभी समस्याओं के मूल को ही निःशेष कर दे तथा शाश्वत सुखों की प्राप्ति करा दे, ऐसे स्थायी समाधान के लिए भगवान महावीर की वाणी का अनुशीलन और अनुकरण आवश्यक है। वीरवाणी के अनुसार चलने के लिए समत्वपूर्वक जीने के साथ आत्म-साक्षात्कार का अभ्यास करना चाहिये। ऐसा करने से समस्याओं के मूल कारण स्वकृत कर्मों का सम्पूर्णतः क्षय संभव होगा।

माता मरुदेवी जैसे जीव तो विरले ही होते हैं। उस पुण्यात्मा ने पूर्व जन्मों में ही साधना करके कर्मों का भार इतना हल्का कर लिया कि उन्हें इस जन्म में अधिक साधना नहीं करनी पड़ी। उन्होंने हाथी के हौदे पर बैठे-बैठे प्रभु के ऐश्वर्य को देखते-देखते आत्मचिन्तन करते-करते कैवल्य व सिद्धि को प्राप्त कर लिया। लेकिन ऐसी महान् पुण्यात्माएँ कितनी होती हैं? संसारीजन तो एक नहीं, अनेक समस्याओं में उलझे हैं तथा दुःख दावानल में दग्ध हो रहे हैं। सत्ता में रहे हुए कर्म जब उदय में आते हैं तो सांसारिक सुख-दुःख आना अवश्यम्भावी है। लेकिन सुख में फूलना नहीं और दुःख में परेशान नहीं होना, व्यक्ति के स्वयं के हाथों में है। असाता वेदनीय के उदय से दुःख आता है और मोहनीय कर्म के कारण व्यक्ति दुःखी होता है। जीव यदि कर्मबंध में सावधान रहे और कर्मोदय में समभाव रखे तो कर्मों की निर्जरा करके दुःखों के मूल का ही निकंदन कर सकता है।

व्यक्ति कर्मोदय के कारण आई समस्याओं के वक्त परेशान हो जाता है। वह समस्या

को अन्दर से नहीं, बाहर से देखता है। अपने आपको नहीं, वरन् दूसरों को और निमित्तों को दोषी ठहराता है। वस्तुतः यह निरा बाह्य दृष्टिकोण व्यक्ति को भटकाता है। इससे दुःख दूर होना तो दूर, नये कर्मों के उपार्जन के साथ नये दुःख उत्पन्न होते हैं। दुःखों से मुक्ति का एकमात्र स्थायी उपाय उपादान को देखना है।

आत्मानुलक्ष्यी साधक यही सोचता है कि '**अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य**' अर्थात् आत्मा अपने ही सुख-दुःख रूपी कर्मों को करता और भोगता है। मेरे लिए मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ। कोई अन्य मुझे न तो दुःख दे सकता है और न ही अन्य में त्राण या शरण देने की शक्ति है। जो दुःख मेरे जीवन में आये हैं, वे सारे मेरे स्वोपार्जित कर्मों के कारण आये हैं। ये कर्म स्वयं मेरी असावधानी का परिणाम हैं। अब मुझे सावधान सजग रहना है। भोजन करते समय जिह्वा यदि दाँतों के बीच आ जाए तो समझदार व्यक्ति कभी भी दाँतों को दोषी नहीं ठहराता है, उन्हें दण्ड देने हेतु उद्यत नहीं होता है। वह यही सोचता है कि मेरी असावधानी के कारण जिह्वा दाँतों के बीच आ गई है। इसी प्रकार कर्मोदय व दुःख उत्पत्ति के समय साधनाशील व्यक्ति यही सकारात्मक सोच रखता है कि मेरे ही पूर्वकृत कर्म मेरे उदय में आये हैं। इसमें मेरा ही दोष है, दूसरों का नहीं। यह सजगता और समता वर्तमान में प्रसन्नता और कर्मनिर्जरा के साथ भावी समस्याओं को निःशेष करती है।

आप कह सकते हैं कि हम तो गृहस्थ हैं। हमारे लिए सांसारिक समस्याओं का निकन्दन आवश्यक है। इस पर इतना ही कहा जा सकता है कि सांसारिक समस्याओं का समाधान भी स्व उपार्जित शुभ कर्मों पर अवलम्बित है। श्रद्धा व समर्पण के साथ व्रताराधना, आत्म-चिन्तन, गुरुभक्ति, शासनसेवा आदि कार्य पुण्योपार्जन के साथ ही कर्म-निर्जरा के भी हेतु हैं। जैसे गेहूँ की खेती के साथ भूसा सहज मिल जाता है, वैसे ही कर्म-निर्जरा के साथ भौतिक उपलब्धियाँ सहज प्राप्त हो जाती हैं। परन्तु जो साधक इन भौतिक उपलब्धियों में न उलझकर अनासक्त बना रहता है, वह नये कर्मों का बंध नहीं करता है। उसे इस लोक में तो समाधान मिलता ही है, परलोक में भी शाश्वत सुख मिलते हैं। ■

हार्दिक शुभकामनाएँ वर्ष 2015 हेतु

जिनवाणी पत्रिका के समस्त पाठकों एवं लेखकों को वर्ष 2015 हेतु हार्दिक मंगल कामनाएँ। जिनवाणी पत्रिका ने आपके सहयोग से 72 वर्ष पूर्ण कर 73 वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। आपका प्रभु जिनेश्वर की वाणी 'जिनवाणी' की भांति 'जिनवाणी' पत्रिका के प्रति जो अनुराग है, वह सतत अभिवृद्ध होता रहे।**-सम्पादक**

प्रवचन

जैन की जीवन शैली

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा दिनांक 19 जून, 2013 को आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर में फरमाये गये प्रवचन का संकलन श्री धर्मचन्द जी जैन, कुस्तला ने किया है।**-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

भारतीय संस्कृति में जैन संस्कृति का रूप सदा व्यापक और विस्तीर्ण रहा है। जैन संस्कृति की विशेषता है कि उसके द्वार सबके लिए खुले हैं। जैन संकीर्णता में नहीं विस्तीर्णता में विश्वास रखता है। जैन सम्प्रदाय को नहीं जैनत्व को महत्त्व देता है। जैन व्यक्ति विशेष पर नहीं, गुण विशेष पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है। उसका विश्वास मात्र एक भगवान में ही नहीं, हर आत्मा को भगवान मानने में है। हर भक्त भगवान बन सकता है, हर जीव शिव बन सकता है। यह उसकी व्यापक और उदार विचारधारा है। जैन व्यक्ति संप्रदायों से नहीं पहचाना जाये, अपितु जैनत्व से पहचाना जाए।

जैनत्व क्या?

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चरित्र इन तीन तत्त्वों को महत्त्व देना और वैसा आचरण करना ही जैनत्व है। जैन कौम से नहीं, कर्तव्य और कर्म से पहचाना जाता है, जैन जाति से नहीं जीवन से मूल्यवान बनता है। जैन की जीवन शैली ऐसी होती है कि वह अल्प में अपना जीवन यापन क़रता है। वह अल्प आरम्भ, अल्प हिंसा एवं अल्प परिग्रह से युक्त होता है। इसलिए "राह ऐसी हो कि किसी को दाह न हो।" जैन भौतिकता की आँधी में भी अपने धर्म के, अध्यात्म के, संस्कृति के दीप को बुझने नहीं देता है। जैन अपने वैन (वाणी) और नैन (आँख) पर नियन्त्रण रखता है, और जो नियंत्रण रखता है उसे भगवान का निमन्त्रण प्राप्त होता है और जो अनियंत्रित होता है उसे मौत का, बदनामी का आमंत्रण मिलता है। अपनी वाणी और आँख पर नियन्त्रण रखने के कारण कुछ दशकों एवं सदियों पूर्व जैन श्रावक राजा-महाराजाओं के अन्तःपुर में बेरोकटोक जा सकते थे, कारण कि वे संयमित थे। संयमित जीवन वाला पाप को अत्यल्प करने की विचारधारा रखता है। जहाँ एक जग पानी से काम चलता है वहाँ वह आधा जग प्रयोग में लेता है। परन्तु आज हम

चिन्तन करें कि अपनी जीवन शैली में जहाँ थोड़े से काम चलता है, वहाँ हम घड़े का प्रयोग क्यों करें? जैन घर में जन्म लेने मात्र से कोई जैनी नहीं होता। जैसे डॉक्टर के यहाँ जन्मा बच्चा डॉक्टर नहीं होता, कलक्टर के यहाँ जन्मा बालक कलक्टर नहीं होता, मिनिस्टर के यहाँ जन्मा पुत्र मिनिस्टर नहीं होता, वकील के यहाँ जन्मा वकील ही नहीं होता, उसे उसके लिए पुरुषार्थ और प्रयास करना होता है। इसी प्रकार जैनी भी जन्म से जैन नहीं होता, इसलिए प्रभु ने कहा-

कम्मुणा बम्भणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 25.33

तो कर्म से ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और जैन बना जाता है, इसलिए कवि ने कहा है-

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं, बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा।
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं, बाद आँसू बहाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे......।
मैं स्थानक गया, गुरुवाणी सुनी, गुरुवाणी को सुनकर खयाल आ गया।
जैनी कुल में हुआ, जैनी बन ना सका, सिर्फ जैनी कहलाने से क्या फायदा।।
कभी प्यासे ......।

जैन होने के लिए जैन कुल में जन्म लेने के पश्चात् जैन के गुण आना अनिवार्य है, जनसामान्य से जैन को अलग करने वाली उसकी दो विशेषताएँ हैं- आचार व विचार। इन दो मात्राओं से जन जैनी बनता है, इसलिए "जिसके आचार में अहिंसा का आधार हो और जिसके विचार में विवेक का विस्तार हो" वह जैनी है। प्रगति का आधार विशद विचार है। जैन धर्म उसी विशद विचारधारा को लेकर चलता है। दुनिया में दो तरह के लोग आगे नहीं बढ़ सकते- 1. जिनके पैर में मोच हो और 2. छोटी सोच हो। भगवान की सोच विस्तीर्णता विशालता लिए हुए थी, इसलिए उन्होंने श्रावक के अगार धर्म के बारह व्रत बतलाकर जैन जीवन शैली का स्वरूप हमारे सामने रखा। बड़ी सोच बड़ा जादू करती है। इसलिए भगवान ने हर जीव में भगवत् दशा को प्राप्त करने का सामर्थ्य बताया। जैन आज बाहर के क्रिया काण्डों में उलझकर अपनी मूल राह से बिछुड़ गया है। जैन भाजी और भोजन तो हमने जैन के नाम से उपलब्ध कर लिये, परन्तु जैन आचार और विचार को हम प्राप्त करने में पिछड़ रहे हैं। जैन को व्यापार से भी जैन होना चाहिये। कर्मादान का व्यापार उसे नहीं करना चाहिये। जैन जीवन शैली में तीन बातों पर गौर करना होगा।

जैन जीवन शैली

जैन जीवन शैली का **प्रथम सूत्र है– व्यवहार और व्यापार में प्रामाणिकता–** हमारे व्यवहार में शुद्धता होनी चाहिये और व्यापार में शुद्धता व प्रामाणिकता होनी चाहिये। अगर अपने व्यापार में हम अपने सिद्धान्तों का प्रामाणिकता से पालन करते हैं तो व्यापार भी बढ़ता चला जाता है। हमने देखा है कि धुलिया के चौधरी परिवार की दुकान पर सवेरे-सवेरे दूध के लिए लम्बी कतार लगती है। एक ग्राहक से पूछा गया, क्या दूध केवल यहीं मिलता है? अन्य जगह नहीं। वे बोले कि यहाँ बिना मिलावट का शुद्ध दूध मिलता है। देर भले ही हो, परन्तु वस्तु अच्छी मिलती है। ऐसे अनेक उदाहरण मिल सकते हैं तो कहीं पैसे के लोभी ऐसे भी हैं जो घी में चर्बी, मिर्ची में ईंट का बुरादा मिलाकर बेचते हैं। ऐसे लोगों को यह याद रखना चाहिए कि देर है, पर अन्धेर नहीं। हमारे व्यवसायों को बढ़ाने वाले सेवक (नौकर) पर भी हमें करुणा के भाव रखने चाहिये। जैन की दया इतनी प्रसिद्ध है कि वह चींटियों की यतना करता है। एकेन्द्रिय को भी अकारण नहीं मारता तो फिर उसे अपने नौकर या मजदूर का पसीना सूखे, उससे पूर्व उसकी मजदूरी दे देनी चाहिये। पर आज-कल जैन भाई भी उसकी पगार टालते जाते हैं और कई बार कम पैसे देकर भी उस मजदूर को लौटा देते हैं।

जैन जीवन शैली का **दूसरा चरण है– व्यसन और व्यर्थ से दूरी।** आज हमारे घर के युवक व्यसन और युवती फैशन में निमज्जित हैं। इस कारण परिवार टेंशन में हैं। किसी भी वस्तु या पदार्थ के प्रति अत्यधिक लगाव व्यसन है, जिसके सेवन के बिना व्यक्ति को बेचैनी सी महसूस होती है। आज जैनी "जो है उसे छिपाता है और जो नहीं है उसे दिखाता है।" जैन आडम्बरों में फिजूल खर्च कर अपनी सम्पत्ति का दुरुपयोग कर रहा है। कमाई अठन्नी की और खर्चा रुपये का व्यर्थ व्यय कर परिवार को चिन्ता में डालता है। इसलिए सीमित और सन्तुलित जीवन जीयें। भगवान् महावीर ने हमें अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया, परन्तु आज हमने अपने घर-दुकान में परिग्रह का ठाट लगाया है। हमें फिर से अपनी संस्कृति को याद रखना होगा। इसलिये कवि कहता है–

जैनी यूं काई सूता भर नींद जमानो सारो बदल गयो।.......
जैन धर्म री जड़ा खोखली, हाथा करने कीधी,
दूर व्यवसाय रे चाले लाग्या, धर्म की ज्योति नहीं दीधी......
घणी बांता है काईं काईं कैवां, अनरथ हुआ अनेक,
धर्म गुरु कहे जागो जैनी, कुछ तो निभाओ थारी टेक.....।

हमें अन्य धर्मों से विशेष 'जैन धर्म' मिला है। जैन धर्म ही विशेष क्यों? क्योंकि यहाँ

तीर्थ के साथ हमें तीर्थंकर भी प्राप्त हैं, और धर्मों में तीर्थ है, पर तीर्थंकर नहीं। आज हम दिखावे के लिये लाखों रुपये व्यर्थ कर देते हैं, परन्तु किसी गरीब को, स्वधर्मी को दान देते, भोजन कराते जोर आता है।

जैन जीवन शैली का **तीसरा सूत्र है सदाचार और संस्कारों से सज्जित जीवन।** हमारा चाल-चलन जितना सही होगा उतना हमारा जीवन शुद्ध बनेगा। इसलिये कहा है कि नैतिकता की नींव पर ही आध्यात्मिकता (धार्मिकता) का महल खड़ा होता है। हमारा आहार, परिधान, व्यवसाय, सामाजिक योगदान जितने शुद्ध और सही होंगे, उतना हमारा जीवन श्रेष्ठ बनेगा। हमें इस जीवन शैली को पूर्णतः अपनाना है। आधे अधूरे मन से, आधी अधूरी जीवन शैली को अपनाने पर सफलता नहीं मिल सकती। आज जैन समाज कुछ लोगों के अकरणीय कार्यों के कारण से कलंकित हो रहा है। कीर्ति पाने में सालों लगते हैं, पर कलंकित होने में क्षण लगता है। सदाचारी संस्कारी की प्रतिष्ठा इतनी होती है कि व्यक्ति उस पर आँख मूँद कर विश्वास करता है। हम जैनी कलंकित होने के बजाय गौरवान्वित बनें। हमारी जीवन-यात्रा के नियम, मर्यादाएँ अगर सही होंगी तो हमें लाभ ही लाभ है। इसलिये कहा कि कायदे में फायदे हैं। यह जीवन शैली किसी जाति विशेष की नहीं है। इसे तो हर कोई जी सकता है। इसलिये हम अपने जीवन को मशीन बनाने के बजाय मिशन बनायें। उस मिशन को बनाने के लिये हमें इन सूत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा, ताकि जैनाचार हमारे व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करे। जैन जीवन शैली भार मुक्त, बोझ मुक्त है। जैसे घाटियों पर चढ़ने वाला हल्का वाहन शीघ्र, कम पुरुषार्थ में मंजिल को पा लेता है, उसी प्रकार हम भी हल्के बन जीवन यात्रा को व्यवस्थित बनाएँ। जीवन में ऊर्जा पाने के लिये शास्त्र हैं और शास्त्रों का निर्माण शांति के लिए है। शास्त्र जानने वाला वही है जिसका मन शांत होता है। हम शांत और सुव्यवस्थित जीवन को जीयें।

जीवन में सदाचार एवं संस्कारों की महक हो, निर्व्यसनता एवं परोपकार की चमक हो, आध्यात्मिकता की दमक हो, यही जैनी के चलने की सड़क हो। ▪

माँस खाने से 160 बीमारियाँ

विश्व स्वास्थ्य संगठन की बुलेटिन संख्या 637 के अनुसार मनुष्य के शरीर में लगभग 160 बीमारियाँ माँस खाने से प्रविष्ट होती हैं। दुःख यह है कि बहुत से चिकित्सक भी इस तथ्य को नहीं जानते। ये ऐसी बीमारियाँ हैं जिनमें से अधिकांश मनुष्य को सीधे मौत के मुँह में धकेलती हैं और अनेक इतनी असाध्य हैं कि उनकी कोई चिकित्सा उपलब्ध नहीं है।

-'मांसाहार सौ तथ्य' से संकलित

संवाद

जिनशासन की दीक्षा

आचार्य विजययोगतिलक सूरिजी म.सा.

गुजराती पुस्तक 'जिनशासन की दीक्षा' का हिन्दी अनुवाद सुज्ञ श्रावकरत्न श्री स्वरूपचन्द जी बाफना 'सी.ए.', सूरत ने किया है। यह संवाद वैराग्य को पुष्ट करने वाला है। **-सम्पादक**

विलास- आचार्यश्री, आपने सी.ए. की डिग्री ली है। मुम्बई की एच.आर. कॉलेज से पढ़ाई की है। इतना पढ़ने के बाद भी आपको दीक्षा लेने की क्यों सूझी? दीक्षा क्यों लेनी चाहिए?

आचार्यश्री- दीक्षा क्यों लेनी चाहिए, इसका जवाब मैं बाद में दूँगा, पहले आप यह बताइये कि जीवन किसके लिए जी रहे हो?

विलास- किसके लिए? मौज-मस्ती करने के लिए। पढ़ने के लिए, विवाह करने के लिए, खूब पैसा कमाने के लिए और मौज-मस्ती करने के लिए बस। जिंदगी सफल।

आचार्यश्री- पढ़ना, विवाह करना, पैसा कमाना, इन सबका अंतिम ध्येय तो यही है कि सुख मिले।

विलास- (हँसते हुए) और दूसरा क्या हो सकता है?

आचार्यश्री- बोलो सुख किसमें है? पैसे में? यदि पैसे में सुख हो तो "जिसके पास ज्यादा पैसा वह ज्यादा सुखी" यह गणित सही होना चाहिए। किन्तु ऐसा कब होता है जब पैसे की भूख से मनुष्य को संतोष हो और वह शान्ति से श्वास ले? जिंदगी में ऐसा पल कब आता है जब तुम्हारा लाभ पूर्ण हो और तुम कह दो कि बस अब मैं सुखी।

विलास- पैसे की भूख पूरी नहीं होती, यह बात मुझे स्वीकार है, परन्तु महत्त्व तो सब जगह पैसे का ही है।

आचार्यश्री- तो फिर एक कमरे में पैसे के ढेर पर बैठ जाओ, ताकि सुख प्राप्त हो जाए?

विलास- पैसे से सुख मतलब इससे मिलने वाली सामग्री, जीवन स्तर में सुख है, अन्यथा कैशियर हमेशा पैसे में ही खेलता रहता है।

आचार्यश्री– अच्छा! सामग्री भरपूर इसलिए सुख भरपूर, ऐसी तुमने व्याख्या की। कोई भी भौतिक चीज़ स्वतंत्र रूप से सुख देने में समर्थ नहीं। तुम्हारे पास अभाव आदि का दुःख है तब तक इन्द्रियजन्य सुख की अनुभूति होती है, फिर क्रमशः वह सुख घटता जाता है और अन्त में सुख की अनुभूति नहीं होती। जैसे कि भूख लगती है, पहला गुलाबजामुन खाया तब जितना सुख अनुभव हुआ क्या उतना ही सुख दूसरा गुलाबजामुन खाने पर अनुभव होता है या क्रमशः सुख में कमी आती है? कमी आती ही है और एक वक्त ऐसा आता है कि सुख की जगह दुःख की अनुभूति होती है, कारण कि भूख का दुःख घटता चला गया उसी तरह सुख भी घटता जाता है। नई गाड़ी ली, पहली बार बैठे, तब जितना आनन्द होता है, क्या दूसरे दिन होता है? घटता ही जायेगा। पहली बार गाड़ी ली तब बड़े शोक से व्यक्ति मुम्बई से अहमदाबाद गाड़ी में जाता है और बाद में ट्रेन में जाता है, कारण कि गाड़ी में परेशान होता है। मतलब कि दुनियाँ में कोई चीज़ ऐसी नहीं कि सतत सुख दे। एक सुख के बाद फिर नये सुख की तलाश करनी पड़ती है। वास्तविक सुख तो उसे ही कहेंगे जो हमेशा सुख दे। जैसे पानी का ठंडक देने का स्वभाव है तो हर व्यक्ति को हर समय पानी ठंडक देता है। क्या इस तरह दुनियाँ में कोई ऐसी वस्तु है जो हर व्यक्ति को हर समय सुख दे? मतलब वस्तु में सुख नहीं है।

विलास– आपकी बात सच्ची है, परन्तु जब तक अभावादि का दुःख है तब तक तो सामग्री सुख देती ही है?

आचार्यश्री– यह बात भी तुम्हारी सच्ची नहीं। मैं तुम्हें पूछता हूँ– एक व्यक्ति के पास करोड़ों–अरबों की सम्पत्ति है, परन्तु शरीर बीमार है, और दूसरे व्यक्ति के पास साधन–सामग्री ज्यादा नहीं, परन्तु शरीर स्वस्थ है। दोनों में से सुखी कौन?

विलास– शरीर स्वस्थ है वही सुखी। "पहेलुं सुख ते जाते नर्या।" अर्थात् पहला सुख निरोगी काया।

आचार्यश्री– सुखी होना है तो शरीर को स्वस्थ रखना जरूरी है। मेहनत से कमाये हुए पैसों से ज्यादा साधन–सामग्री मिलने की शक्यता है, फिर भी बीमारी दूर करने के लिए ही पैसे खर्च करने पड़ते हैं, कारण कि शरीर की स्वस्थता के बगैर सुख नहीं। इसीलिए बाईपास सर्जरी के लिए एक झटके में पाँच लाख रुपये

शिलापट्ट पर नाम अंकन किये बिना दे देते हैं न।

विलास- आपकी बात सही है, परन्तु शरीर स्वस्थ हो फिर तो जितनी ज्यादा सामग्री सुख भी ज्यादा- यह तो सच है।

आचार्यश्री- अभी भी तुम्हारा भ्रम है। शरीर स्वस्थ है और साधन सामग्री की उपलब्धता हो, मात्र इससे सुख नहीं होता है कारण कि उसी समय यदि तुम्हारा लड़का एस.एस.सी. परीक्षा में फेल का रिजल्ट लेकर आता है तो क्या उस समय सुख होता है? धंधे में नुकसान हो तो क्या सुख होता है? ससुराल गयी हुई लड़की को ससुराल में समस्या होने के समाचार मिले तो क्या सुख होता है? तुम्हारा लड़का तुम्हारी बात नहीं माने तो क्या सुख होता है? तुम क्रिकेट के प्रशंसक हो और भारत की टीम हार जाती है ऐसे समाचार से क्या सुख मिलता है? तुम भाजपा या क्रांग्रेस के पक्ष वाले हो और चुनाव में भाजपा या कांग्रेस हार जाती है तो सुख होगा? ऐसी अनेक परिस्थितियाँ पैदा हों और शरीर स्वस्थ है, सामग्री भी है तो भी क्या सुख होता है?

विलास- नहीं होता है, कारण कि मन दुःखी हो जाता है तो चैन नहीं पड़ता, फिर सुख कैसे हो?

आचार्यश्री- अच्छा! इसका मतलब यह हुआ है कि सुखी होने के लिए मन दुःखी नहीं होना चाहिए। अब विचार कीजिए कि आपका मन दुःखी न हो उसके लिए कौनसी परिस्थिति आपकी इच्छा के अनुसार होनी चाहिए। बेटे को उत्तीर्ण होना ही चाहिए, बेटी का ध्यान ससुराल वालों को रखना ही चाहिए, धंधे में नुकसान नहीं होना चाहिए, पत्नी को अपना मुँह हँसते हुए ही रखना चाहिए, तुम्हारी सारी बातें बेटे को माननी ही चाहिए, भारत की टीम को जीतना ही चाहिए, भाजपा या कांग्रेस को जीतना ही चाहिए। मतलब पूरी दुनियाँ आपकी इच्छा के अनुसार ही चले, तो ही मन दुःखी नहीं होता है। बाकी मन दुःखी हो जाता है तो सुखी किस तरह से बनोगे?

विलास- ऐसे हो तो दुःख होगा ही। इसको सहन करना ही पड़ेगा, इसका कोई उपाय नहीं है।

आचार्यश्री- यहाँ एक बात महत्त्व की समझनी है। तुमने हर व्यक्ति के लिए, वस्तु के लिए, परिस्थिति के लिए एक अपेक्षा निश्चित कर ली और जब यह पूर्ण न हो तो मन दुःखी हो जायेगा। उदाहरणार्थ- तुम्हारे लड़के को प्रथम आना चाहिए और न आवे तो.......। गाड़ी देखी, पसंद आयी, चाहिए और न

मिले तो.....। बंगला देखा, पसंद आया, और यह बंगला चाहिए और न मिले तो.....। ऐसी अनेक तरह की अपेक्षा/इच्छा हो जाय, और जब तक वह पूरी न हो तब तक मन दुःखी रहे, फिर किसी भी प्रकार का सुख होगा?

विलास- आपकी बात सच्ची है, मन दुःखी हो तब सुख का अनुभव संभव नहीं, परन्तु अपेक्षा की पूर्ति हो तो सुख होता ही है।

आचार्यश्री- यहाँ पर भी सूक्ष्मदृष्टि से विचारो तो एक महाभ्रम है। अनेक भवों की बात तो जाने दीजिए, इसी भव का विचार करो। आज तक कई अपेक्षाओं की पूर्ति हुई उसका परिणाम क्या आया? ज्यों-ज्यों इच्छा-पूर्ति करते रहे त्यों-त्यों नई अपेक्षाएँ जाग्रत होती रहीं और उससे मन व्यग्र, दुःखी ही रहा, इसीलिए जीवन में दुःख खत्म होता ही नहीं है। विचारो- पहले पाँच हजार की इच्छा थी, बाद में पचास हजार, पाँच लाख... करते-करते अपेक्षा बढ़ती ही जाती है। अपेक्षाओं का अंत आता ही नहीं है, परिणामस्वरूप जीवन में सुख और शांति आती ही नहीं।

विलास- तर्क से आपकी बात समझ में आती है, परन्तु हर एक को अपेक्षा तो होती ही है, फिर उपाय क्या?

आचार्यश्री- इसके लिए प्रभु ने फरमाया है कि अपेक्षा नाम का भूत जो प्रत्येक जीव को हैरान करता है, वह पैदा कहाँ से होता है? इसकी जाँच/खोज होनी चाहिए। प्रभु ने सब कुछ जानकर यह फरमाया कि तुम्हारी आत्मा में राग-द्वेष, काम-मान (अहंकार), ईर्ष्या, लोभ वगैरह दोष लगे हैं, इसीलिए नई-नई अपेक्षाएँ उत्पन्न होती रहती हैं। हर एक व्यक्ति इन अपेक्षाओं के कारण दुःखी होता है, तथा अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए मेहनत-मजदूरी दौड़ा-दौड़ करता है। एक अपेक्षा पूरी होती है तभी दूसरी खड़ी हो जाती है। कारण कि तुम्हें पैसे का लोभ है इसीलिए पैसा कमाने की इच्छा/अपेक्षा जगती है। अब यदि पैसा नहीं मिलता है तो जीव तड़फता है और यदि मिलता है तो दिखने में खुश हो जाता है, परन्तु वास्तव में दुःख के कारण जो हैं, वे बने रहते हैं। लाभ से लोभ बढ़ता है, मजबूत बनता है। परिणामस्वरूप पैसा कमाने की इच्छा-अपेक्षा ज्यादा प्रबल बनती है। इसीलिए चित्त ज्यादा व्यग्र होता है और व्यक्ति ज्यादा तनावग्रस्त हो जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि अपेक्षा की पूर्ति होने से क्षणिक राहत मिलती है परिणामस्वरूप

अपेक्षा बढ़ती है, तीव्र होती है और इस कारण मन ज्यादा उद्विग्न होने से ज्यादा दुःखी होता है। उदाहरणस्वरूप- तुम्हें 101 डिग्री बुखार है वह पीड़ा देता है, तुम डॉक्टर के पास गये, उसने कहा कि मेरी दी हुई दवाई तुम्हारा बुखार उतार देगी, लेकिन चार घंटे बाद बुखार 102 डिग्री हो जाता है। तुरन्त डॉक्टर के पास गए। डॉक्टर कहता है कि चिंता न करो मेरे पास ऐसी दवाई भी है जिससे 102 डिग्री बुखार हो जाएगा, परन्तु 4 घंटे बाद बुखार पुनः 103 डिग्री होगा, इस तरह क्रमशः बुखार बढ़ेगा और इसे उतारने की दवा मेरे पास है, फिर एक समय ऐसा आयेगा जब मेरे पास दवा नहीं रहेगी तब मरना पड़ेगा। बोलो? हम ऐसी दवा लेने को तैयार होते हैं? नहीं होते है न? बस इसी तरह ही अपेक्षा की पूर्ति करते जाइए और अपेक्षा बढ़ती रहेगी। अंत में ऐसा अवसर आता है कि जब अपेक्षा की पूर्ति न हो तब भी तड़फना ही पड़ता है। इसी तरह जिंदगी पूरी करने में क्या बुद्धिमानी है? क्या सुख है? यदि सुखी होना है तो मन को उद्विग्न करने वाली अपेक्षाओं को दूर कर आत्मा में पड़े हुए रागादि दोषों का नाश करना अनिवार्य है।

विलास- दोषों का नाश करने का उपाय क्या?

आचार्यश्री- दोष दो तरह से मजबूत बनते हैं। ये मजबूत न बनें, इसका ध्यान रखा जाये तो धीरे-धीरे दोषों की ताकत घटती जायेगी और परिणामस्वरूप वे नष्ट हो जायेंगे। राग के कारण दूसरे पदार्थों का संग हो और यह संग जितना ज्यादा हो उतना राग बढ़ता है। परिणामस्वरूप अपेक्षा बढ़ती है, मन उद्विग्न होता है और व्यक्ति दुःखी होता है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति दो तरह से दुःखी होता है- दूसरों के पास अमुक वस्तु है और मेरे पास नहीं और यह मेरे पास होनी चाहिए। जगत में 90 प्रतिशत लोगों में दुःख इस कारण से ही होता है। दूसरों की गाड़ी देखी, पसन्द आई, मन से जुड़ाव हुआ और दुःख शुरु। गाड़ी पहले भी नहीं थी, अभी भी नहीं है, पहले दुःख नहीं था, और अब दुःख हुआ। कारण क्या? गाड़ी न होना, यह दोनों अवस्था में एक सरीखा है। मात्र फर्क इतना है कि पूर्व में मन से जुड़ाव नहीं था अब राग के कारण मन से जुड़ाव हुआ और दुःख शुरू हुआ। इस तरह से सभी विषयों पर विचार किया जा सकता है। इस दुःख को दूर करने का मात्र यही उपाय है कि दूसरों को देखना बंद करो और यदि कभी दिखने में आ जाय तो मन के साथ इसे मत जोड़ो। 90 प्रतिशत दुःख दूर हो जायेगा।

विलास- यह बात तो बिलकुल सही है कि दूसरों को देखकर कई लोग दुःखी होते हैं, परन्तु जीवन जीने के लिए आवश्यक वस्तु तो चाहिए न, आवश्यक वस्तु न हो तो फिर दुःख तो होगा ही।

आचार्यश्री- इस विषय पर भी थोड़ा गहराई से विचार करो- अपने लिए आवश्यक वस्तु क्या? जो व्यक्ति जिसके साथ जुड़ गया वह वस्तु उसके लिए आवश्यक हो गई और फिर वस्तु दूर हो जाय तो व्यक्ति दुःखी होता है। दुःखी होने का यह दूसरा कारण है। जैसेकि अपने बाप-दादाओं के समय में बिजली नहीं थी, तो भी उनका जीवन चलता था। आज लोग बिजली से जुड़ गये, अब यदि बिजली चली जाय तो कितने व्याकुल होते हैं, सोचें जरा।

अपने पीछे आँख नहीं है उसका हमें दुःख नहीं है, परन्तु आगे दो आँखे हैं, इसमें से एक आँख जाती रहे, फिर भी भयंकर दुःख होता है कारण कि दोनों आँखों का आज दिन तक जुड़ाव था। कोई भी नई चीज का जुड़ाव हो तब दिखने में तो सुख की अनुभूति होती है, परन्तु वास्तविक रूप से विचारें तो वह जुड़ाव बाद में आवश्यक बन जाता है और फिर इसमें कोई भी हलचल मचे तो व्यक्ति पीड़ा का अनुभव करता है।

बहुत शांति से विचारो तो अपने तमाम दुःखों के कारण जरूर अपने को समझ में आयेंगे। दूसरे का स्कूटर देखा, पसन्द आया, राग हुआ तो जुड़ाव करने का मन हुआ, यह दुःखी होने का पहला कारण। फिर स्कूटर मिला उसके साथ जुड़ाव हुआ, फिर स्कूटर चोरी हो जाए तो भयंकर दुःख होता है, यह दुःखी होने का दूसरा कारण। पूर्व में स्कूटर के अभाव में जो दुःख नहीं था वो स्कूटर से जुड़ाव करके हो गया। इसीलिए उसके चोरी होने पर खूब दुःख हुआ। इसी तरह स्कूटर वाले ने गाड़ी देखी, पसंद आई, राग हुआ, जुड़ाव का मन हुआ, प्रथम प्रकार का दुःख, गाड़ी मिली, जुड़ाव हुआ, फिर गाड़ी चली गयी, परन्तु स्कूटर तो हाजिर था, स्कूटर के सुख की अनुभूति होने के बदले, दुःख की ही अनुभूति होती। यह दूसरा दुःख यह सबको मालूम है। इसीलिए थोड़ा गहराई से विचारो कि दूसरी वस्तु के साथ जुड़ाव का मन या दूसरी चीज़ के साथ चित्त से जुड़ाव, यही मात्र दुःख का कारण है। जैसे शराबी को शराब के साथ जुड़ाव है, इससे वह दुःखी है, उसको तड़फना पड़ता है, उसी रीति से पदार्थ के साथ मन से जुड़ाव हो तो दुःखी होना ही पड़ता है, तड़फना ही पड़ता है। **(क्रमशः)**

जीवन-व्यवहार

लगाव की खूबियाँ और कमियाँ

साध्वी युगल निधि-कृपा

प्रत्येक मनुष्य के पास तीन शक्तियाँ ऐसी हैं जो उसे विकास एवं विनाश की ओर ले जाने में समर्थ हैं। इन शक्तियों के सदुपयोग से मनुष्य अनन्त सुख की राह पकड़ सकता है और दुरुपयोग से अनन्त दुःख की खाई में भी गिर सकता है। सजग रहे तो मोक्ष में भी जा सकता है और सुप्त रहे तो सातवीं नरक में भी पहुँच सकता है। मनुष्य के पास ये तीन शक्तियाँ हैं- सोचने की शक्ति, बोलने की शक्ति और कार्य करने की शक्ति। शास्त्रों में इसे त्रियोग कहा है। मन, वचन, काया का योग केवल माध्यम है, खिड़कियाँ हैं जो मात्र अंदर और बाहर के नजारे दिखाने में सहायक है। न ये खिड़कियाँ देखने को मजबूर करती हैं और न नजारों को अच्छा या बुरा कहती हैं।

स्पष्ट है, शक्तियाँ सदा न्यूट्रल होती हैं। जिन सीढ़ियों से हम ऊपर जाते हैं उन सीढ़ियों से नीचे भी उतरते हैं। सीढ़ियाँ न अच्छी हैं न बुरी हैं। इसी प्रकार भीतर में स्थित ऊर्जा का प्रयोग हम चाहे तो constructive= सृजनात्मक रूप में भी कर सकते हैं और destructive= विध्वंसात्मक रूप में भी कर सकते हैं। इन्हीं तीन शक्तियों से इन्सान पाप भी बांध सकता है और पाप से मुक्त भी हो सकता है।

भगवती सूत्र में गौतम स्वामी भगवान महावीर से प्रश्न पूछते हैं, 'भंते! दुक्खे केण कडे? अर्थात् दुःख किसके द्वारा दिया जाता है?' भगवान ने फरमाया-'दुक्खं सयं कडे' अर्थात् दुःख आत्मा ने स्वयं उत्पन्न किया है। पापकारी सोच, परपीड़ाकारी वचन और अशुभ क्रिया से मनुष्य पाप में प्रवेश करता है, जिसका फल उसे दुःख के रूप में मिलता है।

'ये दुःख आत्मा ने किस वजह से निर्मित किये हैं?' इसके जवाब में प्रभु महावीर ने कहा 'पमाएणं' अर्थात् प्रमाद के कारण दुःख आते हैं। प्रमाद= अजागृति। अपनी असावधानी के कारण निमित्तों से प्रभावित होकर आत्मा मन, वचन, काया से पाप करती है और दुःख भोगती है।

बौद्ध धर्म में पाप को अकुशल कर्म कहा है जो 14 प्रकार के हैं। हिन्दू ग्रंथ मनुस्मृति में दस प्रकार के पाप बताये हैं। जैन दर्शन में पापस्थान अठारह बताये हैं, जिन निमित्तों से प्रभावित होकर आत्मा पाप करती है।

राग और द्वेष इन दो निमित्तों में अठारह पापों का समावेश हो जाता है। इन दो के कारण

ही मन, वचन, काया की नब्बे प्रतिशत प्रवृत्तियाँ संचालित रहती हैं। मेरे-तेरे का संसार भी इसकी ही बदौलत है। जिसे हम 'मेरा' कहते हैं उसमें राग की प्रेरणा है और जो पराया है वह द्वेष से प्रेरित है। जब राग-द्वेष के खयाल तीव्र रूप से उठते हैं तब व्यक्ति रागांध और द्वेषांध हो जाता है।

जैसे जले हुए बीज को अच्छा खाद-पानी भी अंकुरित नहीं कर सकता वैसे ही जिसके भीतर तीव्र रूप से राग-द्वेष का संक्लेश हो उसके जीवन में धर्म क्रियाएँ भी शांति नहीं दे सकती। जैसे- सांप टोकरी में, शेर पिंजरे में और हाथी सांकल से बंधा रहना चाहिए, वैसे ही हमारे राग-द्वेष भी संयम और मर्यादा में रहने जरूरी हैं। राग-द्वेष को मर्यादा में रखना सीखोगे तो सुख का गारंटी कार्ड जरूर हासिल करोगे।

भगवान महावीर ने राग और द्वेष को समझने के लिए बिजली की उपमा दी है। बिजली दो प्रकार की होती है। एक है, DC Current डी सी करंट जो अपनी ओर खींचता है। दूसरी है, AC Current ए सी करंट जो धक्का देकर दूर फेंकता है।

दोनों बिजलियाँ मारक हैं और दोनों का ही दुष्परिणाम भोगना पड़ता है। राग वृत्ति DC करंट की तरह है जो अपनी ओर आकर्षित करती है। मोह, ममता, लगाव, आसक्ति इन शब्दों से राग वृत्ति पहचानी जाती है। जिसके प्रति राग हो उसकी हर वस्तु को जानना-देखना अच्छा लगता है। उसके द्वारा दी गई वस्तुओं को चखने, छूने और सूँघने की ललक भी बनी रहती है।

सावधान! राग चूहे की भाँति है जिसके काटने का एहसास बहुत देर बाद होता है। चूहा पहले फूंक मारता है फिर काटता है। पुनः थोड़ी फूंक मारता है फिर काटता है। यूँ ठंडे स्पर्श से जब विष फैलता है तो उसका असर तत्काल घातक नहीं बनता, पर कुछ देर बाद वह निश्चित रूप से अपना असर दिखाता है। इसी प्रकार राग या लगाव भी शुरू में समझ नहीं आता, किन्तु धीरे-धीरे हम उसके शिकार बनते हैं। राग का विष जब जीवन शैली में घुलने लगे तब उसके दुःखद परिणाम झेलने पड़ते हैं।

सावधान! इस लगाव के खतरे भी हैं और खूबियाँ भी हैं। जो मन को भा जाए उसके प्रति हम Crazy हो जाते हैं, उसमें डूब जाते हैं और उसके संग एकाकार होना चाहते हैं इसलिए स्वयं को भूल जाते हैं। अपना भान भुलाना ही राग की भयंकरता का प्रमाण है।

राग की तीन खूबियाँ हैं, जो अंततः द्वेष में ट्रांसफर हो जाती हैं।

1. राग कामना एवं अपेक्षा को बढ़ाता है।
2. राग 'मेरे-तेरे' के लेबल चिपकाने में लग जाता है।

3. रागी व्यक्ति कभी उचित न्याय नहीं कर पाता।

लगाव का प्रारम्भ आँख से होता है, इसलिए जिसके प्रति लगाव हो उसे बार-बार देखने को मन आतुर रहता है। उसकी आवाज सुनकर दिल खुश हो जाता है। तत्पश्चात् लगाव वचनों में स्थान पाता है तो शरीर की शक्ति भी उसी ओर दौड़ने लगती है। यूँ राग वृत्ति धीरे-धीरे मन, वचन और काया के माध्यम से एकाकार होती हुई सर्वत्र फैल जाती है।

राग की सबसे बड़ी कमी यह है कि वह हमें अपने गुणों को निहारने नहीं देता। फलतः दुर्गुणों की संख्या में वृद्धि होने की संभावना बढ़ जाती है।

ध्यान दें, राग अग्नि की तरह है जो शीघ्र फैलना चाहता है। रागी व्यक्ति पर सम्मोहन का ऐसा पर्दा छा जाता है कि उसकी आँखें बंद हो जाती हैं। इसीलिए कहा है- 'रागी दोषं न पश्यति' अर्थात् रागी मनुष्य कभी दोष नहीं देखता। कदाचित् दोष दिख भी जाएं तो वह उसे नजरअंदाज कर देता है। राग जब गुणों के प्रति हो तो वह मैत्री या प्रेम कहलाता है, किन्तु हमारा राग वस्तु और व्यक्तियों के ईर्द-गिर्द ही घूमता है।

कहते हैं, श्रीमती चांदनी को बहुत खाँसी हो रही थी। सारा घर उसकी खाँसी की आवाज से परेशान था। वह बेचारी न रात में सो पाती थी और न दिन में चैन से बैठ पाती थी। आखिर तंग आकर एक दिन उसके पति ने कहा, आज तेरे गले के लिए जरूर कुछ न कुछ लेकर आऊँगा। यह सुनते ही चाँदनी तपाक से बोली- "अच्छा! मैं समझ गई आप मेरे गले के लिए वही नौलखा हार लाओगे जो हमने कुछ दिन पहले शोरूम में देखा था।"

जरा सोचो! उसी की स्मृति भीतर रहती है जो भा गया हो। जो आँखों में बस जाए, मन में समा जाए वही अवसर पाकर प्रकट होता है। तात्पर्य यह है, जहाँ लगाव है वहाँ प्रियता होने से मन एकाकार बना रहता है। जब मन रागयुक्त हो तो हित-अहित या अच्छे-बुरे का भेद नहीं कर पाता। इसलिए ज्ञानी कहते हैं, अपने राग को पहचानो ताकि उसकी परतें सघन न बनें।

राग या लगाव ने सदा अपेक्षा को जन्माया है। मन कहता है, जिससे मुझे राग है वह मेरे लिए सुखकारी है, किन्तु होता इससे विपरीत है। लगाव में पकड़ है, जकड़न है जो तनाव पैदा करती है। इसी कारण जिनसे लगाव है उनसे चोट भी मिलती है। सावधान! भगवान महावीर कहते हैं, जहाँ राग है वहाँ दुःख है। जहाँ लगाव है वहाँ तनाव है।

प्रायः लोगों का तर्क है, जीने के लिए लगाव जरूरी है। बिना लगाव के जीवन सूना है, किन्तु ध्यान रखना, लगाव एक भ्रांति पैदा करता है जिसे हम समझ नहीं पाते। चूँकि राग हमें ऐसा अंधा बना देता है कि स्वयं को समझने की गुंजाइश ही नहीं होती। अतः राग को

मर्यादित करना है तो आज से ही स्वयं को देखना प्रारम्भ करो।

राग की यात्रा जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है। आँख खुलते ही लगाव का प्रथम तार माँ के साथ जुड़ता है, फिर बढ़ती उम्र के साथ अनेक प्रकार के लगाव रूपी रेशमी धागे जुड़ते जाते हैं। तत्पश्चात् ये ही रेशमी धागे आपस में उलझते हैं। यूँ संसार के अनन्त दुःखों को सहने की ताकत भी यह राग ही प्रदान करता है। इसलिए हमें राग का विज्ञान बहुत गहराई से समझना होगा ताकि वीतराग बनने की साधना में कदम निरन्तर आगे बढ़ा सकें।

जापान देश में एक फकीर अनेक वर्षों से पेड़ के नीचे साधना कर रहे थे। जप, तप, भक्ति, ध्यान-साधना एवं आराधना के साथ वृक्ष के तले उनकी जिन्दगी बीत रही थी। फकीर की ख्याति सुनकर वहाँ का सम्राट् भी दर्शनार्थ पहुँचा। भक्ति-भाव से प्रणाम कर सम्राट् ने निवेदन किया, मैं आपको एक दिन के लिए अपने राजमहल में ले जाना चाहता हूँ। आपके चरणों से मेरा महल भी पवित्र हो जाएगा।

फकीर ने बड़ी सहजता से हामी भरते हुए वर्षों से बिछी अपनी चटाई को समेटते हुए कहा- 'चलो।' फकीर की ऐसी तत्परता और तत्काल चलने की प्रक्रिया देखकर सम्राट् की श्रद्धा को तनिक धक्का लगा। श्रद्धा से लबाबल भरी झील में मानो एक पत्थर पड़ गया। चूँकि सम्राट् को अपेक्षित था, जो फकीर बरसों से साधना कर रहा हो, वह क्या एक पल में महल का आमंत्रण स्वीकारेगा? स्मरण रहे, यदि श्रद्धा या भक्ति बुद्धि के स्तर पर है तो वह विभिन्न गणित बिठाती है।

सम्राट् फकीर को महल में ले गए। वहाँ राजसी सत्कार और सम्मान के साथ उनकी हर सुविधा का भरपूर ध्यान रखा गया। आश्चर्य यह था, फकीर ने किसी भी सुविधा का इन्कार नहीं किया, एक भी बात का विरोध नहीं किया तो सम्राट् यह सोचने को मजबूर हो गया कि फकीर में और मेरे में अन्तर नहीं रह गया।

दूसरे दिन फकीर ने कहा- "एक दिन पूरा हो गया, अब हम चलते हैं।" सम्राट् फकीर को छोड़ने गया। दोनों साथ-साथ चलते रहे। कुछ देर बाद सम्राट् ने अपनी जिज्ञासा फकीर के चरणों में रखी- "आप में और मुझमें अन्तर क्या है?" फकीर सिर्फ मुस्कुराए और चुपचाप चलते रहे। रास्ता लंबा था, सम्राट् बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था कि वह राजमहल से कितनी दूर आ गया है और उसे वापिस भी जाना है।

अचानक फकीर ने सम्राट् से पूछा- "तुम बार-बार पीछे मुड़कर क्यों देख रहे हो?" सम्राट् ने कहा- "मैं इसलिए पीछे देख रहा हूँ, क्योंकि मेरा तो सब कुछ पीछे है। मेरा महल, मेरा ऐश्वर्य, मेरा राज्य, मेरी रानियाँ, मेरा सैन्य बल सब कुछ पीछे है।"

फकीर ने मुस्कुराते हुए कहा-"यही तेरे और मेरे में अंतर है। तेरे पीछे बहुत कुछ है, मेरे पीछे कुछ नहीं है। जहाँ लगाव है वहाँ सब कुछ पीछे है। जहाँ अलगाव है वहाँ कुछ भी पीछे नहीं है। फकीर ने कहा-"मैं किसी भी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति पर 'मेरेपन' का लेबल नहीं लगाता, अतः जहाँ से गुजर जाता हूँ कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता।"

ज्ञानी कहते हैं, जो आपके भीतर है वही आपके पीछे है और जो पीछे है वही भीतर है। मेरेपन की वृत्ति ही भीतर में लगाव या आसक्ति पैदा करती है। यह राग का कनेक्शन जहाँ भी जाओ वहाँ साथ होता है। 'अमुक वस्तु या व्यक्ति मेरा है' ऐसा विचार मात्र भी पाप का कारण बनता है। लगाव चाहे वस्तु, व्यक्ति या स्थिति किसी का भी हो, किन्तु वह मोहनीय कर्म का ही प्रभाव है।

याद रखना, एक जन्म का लगाव अनेक जन्मों को बिगाड़ सकता है। जैसे खुजली के रोगी को खुजलाते हुए बहुत चैन मिलता है, पर बाद में बहुत पीड़ा होती है। ऐसे ही प्रारम्भ में लगाव बड़ा आनन्दकारी लगता है, परन्तु वह जन्मों-जन्मों तक दुःख की परम्परा बढ़ाता है।

कभी सोचा! लगाव की फिल्म कैसे प्रारम्भ होती है? किसी व्यक्ति के साथ जब रूप-रंग, भाव-भाषा, चाल-ढाल, रहन-सहन और आचार-व्यवहार की 30-40 प्रतिशत की फ्रिक्वेन्सी मैच होती है, तब लगाव की पहली किरण 'कशिश' के रूप में जागती है।

जब सामने वाले की हर छोटी-बड़ी विशेषता रास आने लगे, उसके प्रति सद्भाव जागे या खिंचाव महसूस होने लगे और दोष दिखने बंद हो जाएं तो जानना 90 प्रतिशत फ्रिकवेन्सी मैच होने लगी है अब कशिश का स्थान 'लगाव' ले लिया है।

सच्चाई यह है, फ्रिक्वेन्सी के ऐसे Well-Match Point का संबंध बनाने के लिए इन्सान तत्पर हो उठता है, फिर संबंधों की दीवार पर रिश्तों के स्टीकर लग जाते हैं। अब लगाव 'लगाम' पकड़ना चाहता है। लगाम पकड़ते ही मन मालकियत का अनुभव करता है।

मन कहता है, यह मेरा व्यक्ति है इसे किसी ओर का नहीं होना चाहिए, दूसरों से बात नहीं करनी चाहिए, दूसरों का पक्ष भी नहीं लेना चाहिए और दूसरों की प्रशंसा भी नहीं करनी चाहिए। अगर उसकी सोच से प्रतिकूल कुछ होने लग जाए तो उसे अपने राग पात्र पर क्रोध आने लगता है, दोनों की बहस इतनी बढ़ जाती है कि धीरे-धीरे राग द्वेष में बदल जाता है।

इस तरह liking एक दिन disliking में ट्रांसफार्म हो जाती है। यह मत भूलना, राग का श्वास स्वार्थ है और लगाव स्वार्थ से ही जीता है। स्वार्थ के श्वास में कमी आने लगे तो दिक्कत शुरू हो जाती है। संबंधों की दीवार पर चिपकाये गये रिश्तों के स्टीकर का

चिपकाव घटना प्रारम्भ हो जाता है। यही कारण है, अपेक्षा पूरी न हो तो राग सूखने लगता है। इसलिए राग को द्वेष का कारण बताया है।

जब आपकी किसी के प्रति liking है तो कहीं न कहीं disliking भी है। जैसे एक भी हरा पत्ता ऐसा नहीं जो सूखने पर पीला न हो। ऐसे ही एक भी राग या लगाव ऐसा नहीं जहाँ द्वेष की संभावना न हो। जैसे हरे वृक्ष को जलाया नहीं जा सकता, पर सूखे को जलाना आसान है। ऐसे ही राग को समझना और उससे मुक्त होना मुश्किल है, वह पकड़ में नहीं आता, किन्तु द्वेष जल्दी से समझ आता है।

याद रखना, हरा ही एक दिन सूखा बनता है। आज जो भी फ्रेश ग्रीन है वह कल ड्राय यॅलो होगा, फिर उसमें आग लगेगी। जब किसी के साथ बहुत राग होने लगे तो जानना राग का वृक्ष पनप रहा है। अतः उसके end पर भी एक नज़र कर लेना। वह एक दिन सूखेगा इस सच को मत भूलना।

पूछो अपने से, आप इमोशनल ज्यादा जीते हो या फिज़िकल? उत्तर होगा फिज़िकल कम और इमोशनल ज्यादा जीते हैं। यही कारण है कि यदि कोई व्यक्ति हमारे मन के रिमोट का बटन दबा दे तो हम मूडलेस भी हो जाते हैं। इमोशनल लाइफ सी-सॉ (Sea-Saw) की तरह है जहाँ कभी राग का पलड़ा ऊपर उठता है तो कभी द्वेष का पलड़ा भारी हो जाता है।

पेड़ के हरे पत्तों की भाँति अनेक लोगों से हमारा भी लगाव है। लगाव के हरे पत्ते जब सूखने लगते हैं तो संबंधों में कटुता का अनुभव होता है। इस तरह राग भी संसरण करता है। मनुष्य अपनी जिन्दगी में आज तक लगाव के अनेक स्टेशन पार कर चुका है।

राग पलता ही गलत आधार पर है। चूँकि स्वार्थ के कारण इसमें सदा एक प्रकार की लेन-देन होती है। जब लेन देन सूखने लगे तो जानना हरा पत्ता पीला पड़ने के करीब है अब राग का हरा पत्ता द्वेष में बदलने ही वाला है।

राजा भर्तृहरि के जीवन काल का एक विचित्र प्रसंग है। महारानी पिंगला पर राजा भर्तृहरि का इतना अनन्य राग था कि उन्होंने 'शृंगार शतक' रच डाला। एक बार उनके दरबार में आगत गरीब ब्राह्मण ने कहा- "राजन्! मेरे पास अमर फल है। मैं इसे आपको भेंट देने आया हूँ। आप जैसे न्याय संपन्न, गुण संपन्न एवं परदुःखकातर राजा इसका सेवन करेंगे तो जनता का सुख अमर रहेगा।"

राजा ने प्रसन्न होकर अमर फल ग्रहण किया और दक्षिणा के रूप में ब्राह्मण को खूब धन दिया ताकि उसका दारिद्र्य धुल जाए। राजा ने जैसे ही अमर फल को हाथ में लिया, मन में विचार जागा, मुझे यह पिंगला महारानी को देना चाहिए। जिसके प्रति लगाव हो उसी की सोच और स्मृति सदा भीतर में रहती है। पिंगला के प्रति अत्यधिक लगाव के कारण राजा

स्वयं अमरफल नहीं खा सका। उन्होंने पिंगला महारानी को अमरफल भेंट किया, किन्तु वह भी उसे न खा सकी। चूँकि उसका लगाव एक महावत के प्रति था। यह लगाव का संसरण ही तो संबंधों की विचित्रता है। संबंध जितने बाहर से मोहक हैं, उतने भीतर से भी मधुरिम हों यह जरूरी नहीं है।

ध्यान दें, जिसके प्रति आपका लगाव है उसका आपके प्रति भी लगाव हो यह जरूरी नहीं है। राग की शृंखला में अब बारी नर्तकी की आई, जिस पर महावत फिदा था। नर्तकी ने प्रसन्न मन से अमरफल ले लिया, परन्तु खाने से पहले उसके भीतर विचार जागा, अगर मैंने खा लिया तो इस पेशे से उबर नहीं पाऊँगी। यह मैं उस राजा को दूँगी जो परदुःख भंजन है। अतः दूसरे दिन उसने राजा भर्तृहरि के चरणों में अमरफल भेंट किया।

अमरफल देखकर राजा के आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। जाँच पड़ताल एवं पूछतांछ से सारी बातों का पर्दाफाश हुआ तो असलियत जानकर राजा भर्तृहरि को बड़ा आघात लगा। कहते हैं, जब लगाव को जोरदार झटका लगता है तो आँखों के समक्ष सत्य का फ्लैश चमकता है। इस सत्य से जिसका साक्षात्कार हो जाए उसका राग वैराग्य में बदल जाता है।

राजा भर्तृहरि ने उत्कृष्ट वैरागी बन 'वैराग्यशतक' की रचना की। जिस दिन राग का संसरण समझ आ जाए उस दिन संसार का सच उद्घाटित होता है। जिस दिन इस सत्य की स्थापना हमारे हृदय में होगी उस दिन भर्तृहरि की तरह हमारी भी आत्मा जाग उठेगी।

-मैत्री चेरिटेबल फाउण्डेशन, द्वारा- मृदु प्रदीप जैन,
बी-117, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020

विनम्र अनुरोध

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका के समस्त सदस्यों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रमोद हो रहा है कि 'जिनवाणी' परिवार आपके एवं आपके परिवार की खुशियों में शामिल होने जा रहा है। जिनवाणी परिवार जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि पावन प्रसंगों पर आपको बधाई संदेश प्रेषित करने का इच्छुक है।

अतः आप सभी सदस्यों से विन्रम अनुरोध है कि आप अपनी एवं परिवार के सभी सदस्यों की जन्मदिन, शादी की वर्षगाँठ आदि की तारीख जिनवाणी कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करावें। *-विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302002 (राज.), फोनः 0141-2575997,* E-mail-sgpmandal@yahoo.in

अध्यात्म

दान वरदान है

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए दान भी वरदान है। आसक्ति-जनित तनाव को दूर करने के लिए यह एक अमोघ उपाय है। दान किसी पर एहसान नहीं, यह तो प्राणिजगत् के प्रति आत्मीयता का विस्तार है।

दान के दो मूल तत्त्व हैं- 1. त्याग और 2. उपकार। 'त्याग' दान का प्राण या आत्मा है और परोपकार शरीर। त्याग अपनी वस्तु के प्रति ममत्वभाव के नाश का द्योतक है। ममत्व का नाश भोगभाव के नाश का, स्वार्थपरक भाव के नाश का द्योतक है। स्वार्थपरता के नाश से उदारता आती है और उदारता का क्रियात्मक रूप ही उपकार या सर्वहितकारी प्रवृत्ति है। यह दान का दूसरा मूल तत्त्व है।

यह सर्वविदित है कि भोगी व्यक्ति स्वार्थी होता है। वह अपने सुख को ही सब कुछ समझता है, भले ही उसकी स्वार्थपूर्ति से दूसरों को कितना ही कष्ट पहुँचता हो या उनका अहित होता हो। इसके विपरीत त्यागी व्यक्ति उदार होता है, उसे अपने सुख व सुख-सामग्री का वितरण कर दूसरों के दुःख को दूर करने, उन्हें प्रसन्न देखने में प्रसन्नता होती है। भोगी व्यक्ति इन्द्रियों का दास होता है। इन्द्रियों की दासता पशुता की द्योतक है। इन्द्रियों का दास स्वार्थी होता है। अतः स्वार्थपरता पशुओं की सूचक है। स्वार्थी व्यक्ति हृदयहीन होता है। उसमें जड़ता होती है, संवेदनशीलता, सहयोग व परोपकार की भावना नहीं होती। जड़ व चेतन में अन्तर है तो वह संवेदनशीलता का ही है। जिसमें संवेदनशील नहीं है वह जड़ है, जिसमें संवेदनशीलता है वह चेतन है। संवेदनशीलता का विकास ही चेतना का विकास है। संवेदनशीलता व्यक्ति में ही परोपकार या दान की भावना जगती है। अत: परोपकार या दानभावना की जागृति व वृद्धि चेतना के विकास की वृद्धि की द्योतक है।

करुणा, अनुकंपा, वात्सल्य, भ्रातृत्व, मैत्री आदि भाव संवेदनशीलता के ही परिचायक हैं, इन्हीं का क्रियात्मक रूप परोपकार, दान या सेवा है। वात्सल्य भाव सम्यक्त्व का अंग या आचार है और सम्यक्त्व धर्म है। अत: अनुकम्पा और वात्सल्य भी धर्म ही हैं। करुणा, अनुकम्पा, वात्सल्य, मैत्री आदि भाव किसी कर्म का फल या उदय नहीं हैं, अपितु स्वत: सहज जागृत होते हैं, अत: स्वभाव हैं। जो स्वभाव रूप होता है वह धर्म है। अत: ये स्वभाव धर्मरूप हैं। धर्म, कर्मबंध का कारण कदापि नहीं होता है, प्रत्युत कर्म-क्षय

का कारण होता है। अतः करुणा आदि भावों को कर्म-क्षय का कारण न मानना और कर्मबंध का कारण मानना भूल है, जैसा कि आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर ने कहा है-

किञ्च दानेन भोगाप्तिस्ततो भवपरम्परा।
धर्माधर्मक्षयात् मुक्तिर्मुमुक्षोर्नेष्टमित्यदः।।
नैव यत्पुण्यबन्धोऽपि धर्महेतुः शुभोदयः।
वह्नेर्दाह्यं विनाश्येव नश्वरत्वात् स्वतो मतः।।

-प्रथम द्वात्रिंशिका, 7

जिज्ञासा- दान से भोग की प्राप्ति होती है, अतः इससे भव-परम्परा बढ़ती है, जबकि मुक्ति की प्राप्ति धर्म और अधर्म के क्षय से होती है। अतः मुमुक्षु के लिये दान इष्ट नहीं है।

समाधान- ऐसी बात नहीं, क्योंकि पुण्यबंध भी धर्म का हेतु होता है तथा शुभ परिणाम (उदय) वाला होता है। जिस प्रकार अग्नि दाह्य वस्तु लकड़ी, कंडे आदि को जलाकर स्वयं नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार पुण्य भी पाप को नष्ट कर स्वयं नष्ट हो जाता है, अर्थात् पुण्यरूप दान से भव-परम्परा नष्ट होती है, बढ़ती नहीं।

यथार्थता तो यह है कि जैसे-जैसे साधक आगे बढ़ता है उसमें वस्तुओं के प्रति ममत्व घटता जाता है, जिससे वह उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग परहित में करने लगता है और उससे उदारभाव विकसित होने लगता है। यह उदारभाव ही दान का द्योतक है। अतः साधक जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता है, उसकी उदारता व दान गुण भी उतना ही विकसित होता जाता है। यह उदारता का भाव 'दान' गुण चेतना का निजगुण या स्वभाव है। स्वभाव होने से धर्म है। यही कारण है कि जब ममत्व पूर्णरूप से नष्ट हो जाता है और वीतराग अवस्था आ जाती है तब किसी भी वस्तु के प्रति ममत्व या अपनेपन का भाव व स्वामित्वभाव नहीं रहता तथा शरीर, इन्द्रिय, मन आदि जो कुछ भी अपने पास हैं वे अपने लिये नहीं रहते, क्योंकि उसे अपने लिए संसार की वस्तुओं से कुछ भी सुख पाना शेष नहीं रहता। अतः उसकी वस्तुएँ व प्रवृत्तियाँ सर्वहितकारी हो जाती हैं। उसमें अनन्त उदारता का भाव प्रकट होता है, इसलिए वीतराग केवली को अनन्तदानी कहा जाता है।

पशु और मानव में अन्तर है तो उदारता का ही है। जहाँ उदारता है वहाँ मानवता है। उदारता व मानवता रहित मानव आकृति से भले ही मनुष्य हो, प्रकृति से पशु ही है। अतः जहाँ मानवता नहीं, वह मानव ही नहीं है। जो मानव नहीं है, वह मुक्ति का अधिकारी ही नहीं है। मुक्ति का अधिकारी वही है जो मानव है। कारण कि मानवता के अभाव में शील, संयम, तप, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन एवं सम्यक्चारित्र संभव ही नहीं है। जैसे भूमि के अभाव में बीज पनप नहीं सकता, उसी प्रकार मानवता-उदारता रूप दान के अभाव में धर्म का

पौधा पनप नहीं सकता। इसलिये दान को मुक्ति के मार्ग में प्रथम स्थान दिया गया है।

दान को प्राथमिकता देने का एक कारण यह भी है कि शील, तप, संयम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि अन्य साधनाओं का लाभ तो साधक को स्वयं को ही मिलता है, परन्तु दान का लाभ स्व को, पर को, विश्व को व सबको मिलता है। विशेषत: दीन, दु:खी, अनाथ, रोगी, अपंग, दरिद्र आदि जीव दान से ही उपकृत होते हैं। दानी व्यक्तियों से ही सुन्दर परिवार व समाज का निर्माण होता है। जिस परिवार में ऐसे स्वार्थी व्यक्ति होते हैं जो परिवार के सदस्यों के हित का ध्यान नहीं रखते हैं, अपनी स्वार्थपूर्ति व सुख-सुविधा में लगे रहते हैं, उस परिवार में रात-दिन कलह, संघर्ष, द्वन्द्व व तनावमय वातावरण रहता है, वह घर नरक बन जाता है। इसके विपरीत जिस परिवार में उदारचेता व्यक्ति होते हैं, जो स्वयं दु:ख उठाकर भी परिवार के सदस्यों के लाभ व सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं, उस घर में प्रेम की गंगा बहती है, जिसकी सरसता से सारा परिवार रस में सराबोर हो जाता है। वहाँ स्वर्गीय वातावरण होता है।

इस प्रकार दानी व उदार व्यक्तियों से ही सुन्दर समाज का निर्माण होता है। ऐसे व्यक्तियों से समाज की शोभा बढ़ती है। वे समाज-भूषण होते हैं। उनसे समाज विकसित होता है। मानव-समाज व मानव का विकास दान या परोपकार पर ही निर्भर है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

आप्त-काम का विरुद निभाना

श्री सोहनलाल सिसोदिया

हे प्राणी! मानव-भव पाकर, 'आप्त-काम' का विरुद निभाना।

तप्त मरुस्थल, उथले प्राण, अति दुष्कर जीवन-अभियान।
देख निकट पनघट, तरु-छाया, चरम लक्ष्य को भूल न जाना।
हे प्राणी! मानव-भव पाकर, 'आप्त-काम' का विरुद निभाना।।1।।

सहनशील हो, संकट चूमो, समरस मय, निस्पृह हो झूमो।
साम्य-भाव कौशल में ढलकर- चिदानन्दमय ज्योति जगाना।
हे प्राणी! मानव-भव पाकर, 'आप्त-काम' का विरुद निभाना।।2।।

भौतिक-सुविधा में मत भटको, काम-राग की चादर पटको।
निष्कांक्षितयों- निष्कल्मष हो, सौम्य-चन्द्रिका में घुल जाना।
हे प्राणी! मानव-भव पाकर, 'आप्त-काम' का विरुद निभाना।।3।।

-बैंगलुरु (कर्नाटक)

सामयिक

भारत की स्वतन्त्रता में जैनों का योगदान

डॉ. एस.एल.नागौरी (जैन)

प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ के पुत्र भरत के नाम पर विख्यात भारतवर्ष की समृद्धि में जैन समाज का योगदान अप्रतिम है। भारत के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, दार्शनिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में भी जैन समाज ने सराहनीय योगदान दिया है। दानवीर भामाशाह ने मेवाड़ के महाराणा प्रताप को संकट के समय इतना धन अर्पित किया कि उसकी सहायता से 25,000 सैनिकों का 12 वर्ष तक निर्वाह हो सकता था।

भारतीय स्वतंत्रता किसी एक व्यक्ति अथवा संस्था की बपौती नहीं थी। आजादी के इस संघर्ष में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई एवं पारसियों की भाँति जैनों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया था। उन्होंने भी असंख्य कष्ट सहे, लाठियाँ खाईं, आजीवन कारावास का दण्ड भोगा एवं कुछ को गोलियों का शिकार भी होना पड़ा। वे आजादी के ऐसे दीवाने थे जो हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर झूलकर शहीद हो गये।

आजादी के संघर्ष में फाँसी पर झूलने वाले पहले राजस्थानी जैन अमरचन्द जी बांठिया थे। वे ग्वालियर नरेश के दरबार में खजाँची के पद पर कार्यरत थे। उन्होंने आर्थिक संघर्ष से जूझ रही झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई को दिल खोलकर सहायता दी। अतः अंग्रेज सरकार ने उन पर राजद्रोह का आरोप लगाकर फाँसी की सजा सुनाई। फाँसी पर चढ़ने से पूर्व उन्होंने सामायिक कर अपनी अन्तिम इच्छा पूरी की। सामायिक में उन्होंने णमोकार मंत्र का जाप किया, इसके बाद पैंसठ वर्षीय बांठिया को 22 जून, 1858 ईस्वी को ग्वालियर के सर्राफा बाजार में नीम के एक पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी गई।

तत्पश्चात् अंग्रेजों ने जनता में खौफ बनाये रखने के लिए तीन दिन तक उनका शव पेड़ पर लटकाये रखा। आजादी का यह दीवाना हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर झूल गया। अंग्रेजों ने उनके शव को जलाने के स्थान पर दफना दिया। ग्वालियर में फाँसी वाले स्थान पर श्री अमरचन्द जी बांठिया की प्रतिमा स्थापित कर दी गई है, जहाँ प्रतिवर्ष 22 जून को लोग एकत्रित होकर आजादी के उस दीवाने को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस प्रकार श्री बांठिया जी ने अपना बलिदान देकर आजादी का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

इसी प्रकार 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मुगल सम्राट् बहादुर शाह ज़फर के मित्र श्री हुकमचन्द जैन (हाँसी) तथा उनके भतीजे श्री फकीरचन्द जैन को उन्हीं के मकान के

सामने फाँसी पर लटका दिया गया। इस प्रकार आजादी के इन दीवानों ने संघर्ष को आगे की ओर बढ़ाया।

आजादी की इस जंग में जिन जैनों ने अपने जीवन को न्यौछावर कर दिया था, उनमें मोतीचन्द शाह, उदयचन्द जैन एवं साबूलाल जैन आदि शहीदों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस आन्दोलन में लगभग 5,000 जैन जेल गये, जहाँ उन्होंने अमानवीय यातनाएँ झेलीं। इनमें पंडित बंशीधर जी व्याकरणाचार्य, पंडित फूलचन्द जी सिद्धांत शास्त्री, पंडित खुशालचन्द जी गोरावाल आदि प्रमुख थे।

आजादी के आन्दोलन में जैन महिलाओं ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। इसके अतिरिक्त बाहर से आर्थिक या अन्य किसी तरह का योगदान देने वाले जैनों की संख्या तो अनगिनत है।

अनेक जैन बन्धुओं ने आन्दोलन के दौरान जेल में पर्युषण पर्व की आराधना की थी। अमर शहीद मोतीचन्द ने जेल में अपने खून से पत्र लिखा। पंडित अर्जुनलाल सेठी ने जेल में कहा था कि जब तक मुझे जिन-मूर्ति के दर्शन नहीं होंगे, तब तक मैं भी आहार ग्रहण नहीं करूँगा। इस प्रकार वे 56 दिनों तक वैल्लूर जेल में निराहार रहे।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निजी चिकित्सक डॉ. राजमल कासलीवाल भी राजस्थानी जैन थे तथा श्रीमती रमा बेन आजाद हिन्द फौज की सदस्या थीं। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय की दादी जैन थीं, वे जब तक किसी जैन साधु को आहार नहीं देती थीं, तब तक खाना नहीं खाती थीं।

बाबू ज्योतिप्रसाद जैन (देवबन्द) जैन पत्रिका के पितामह के रूप में विख्यात हुए। 1930 ईस्वी में उनका "भगवान महावीर और महात्मा गाँधी" नामक लेख उर्दू भाषा में देवबन्द से 'जैन प्रदीप' नामक पत्र में अप्रेल-मई-1930 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस लेख के कारण उनकी जमानत जब्त हो गई और पत्र का प्रकाशन बन्द कर दिया गया। श्री कल्याणकुमार 'शशि' की पुस्तक और श्री श्यामलाल पाण्डवीय की पत्रिका भी अंग्रेजों द्वारा जब्त कर ली गई। अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं ने आजादी से सम्बन्धित विशेषांक प्रकाशित किये, जिनमें उन्होंने निर्भीक होकर अंग्रेजों के विरुद्ध समाचार दिये और कुछ ने स्वदेशी भावना सम्बन्धी विज्ञापन भी प्रकाशित किये। इस पर अंग्रेज सरकार ने ऐसे पत्रों की जमानतें जब्त कर लीं। स्वदेशी का प्रचार करने के लिए जैनों ने सूती वस्त्र (हाथ से कते हुए) पहनने पर बल दिया।

श्री छोटेलाल जैन ने भी आजादी के आन्दोलन में चिरस्मरणीय योगदान दिया था। अतः महात्मा गाँधी ने उन पर सम्पादकीय लिखा था। गाँधी की दाण्डी यात्रा में महिलाओं ने

भी खुलकर भाग लिया था, जिनका नेतृत्व सरलादेवी साराभाई ने किया था। श्री रायचन्द नागड़ा (जैन) जेल में एक मात्र ऐसे कैदी थे, जो वहाँ पर रहने वाले समस्त कैदियों के फटे हुए जूते सिलते थे।

भारतीय संविधान के निर्माण में भी जैनों ने बहुमूल्य योगदान दिया था। ऐसी जानकारी प्राप्त हुई है कि संविधान सभा के सदस्यों में 5 सदस्य जैन थे। इनमें श्री रतनलाल मालवीय (जैन), श्री अजितप्रसाद जैन, श्री भवानी अर्जुन खीमजी, श्री बलवन्तसिंह मेहता एवं श्री कुसुमकान्त थे। श्री कुसुमकान्त संविधान सभा के सबसे कम उम्र के सदस्य थे। हमारे संविधान में जैनधर्म के सिद्धान्तों 'अहिंसा परमो धर्मः', 'जियो और जीने दो' एवं 'शांति की नीति' आदि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

श्री मिश्रीलाल गंगवाल तत्कालीन मध्य भारत (अब मध्यप्रदेश) के मुख्यमंत्री को उस समय के लोग ''मालवा के गाँधी'' के नाम से पुकारते थे, वे जीवन पर्यन्त शाकाहारी रहे। भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो के लिए माँसाहारी भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहा तो उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रधानमंत्री को इन्कार कर दिया। आज के युग में कोई भी मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री को नाखुश करने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

आजादी के इन दीवानों से देश की युवा पीढ़ी में देश-प्रेम, त्याग, बलिदान की भावना जागृत होगी एवं उन्हें राष्ट्रीय एकता के आदर्शों के लिए मर-मिटने की प्रेरणा मिलेगी। हम इन शहीदों के उत्कृष्ट आध्यात्मिक आदर्शों को अपने जीवन में उतारें।

-प्रोफेसर इतिहास, बूँदी (राज.), 7597430353

जैन-विश्वगान

श्री मनोज कुमार जैन 'निर्लिप्त'

(तर्ज- जन-गण-मन अधिनायक जय है!)

शिव-मग के परिचायक जय है! मुक्ति सत्पथ-ज्ञाता।
रत्नत्रय 'निर्लिप्त' धारकर; तजा जगत्-दुःख नाता।
वीतराग, सर्वज्ञ, हितैषी; हे भगवन्! विख्याता।।
हम तेरे गुण गाते; बाँचें तेरी गाथा।।
शिवपुर के हे नायक! जय है!
निज-सुख परम प्रदाता।
जय हे!, जय हे!, जय हे!; जय-जय-जय, जय हे!!

-52, पी.डब्ल्यू. डी. कॉलोनी, समद रोड़, अलीगढ़-202001 (उत्तरप्रदेश)

नूतन वर्ष पर

नई चेतना : नव निर्माण

प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी शास्त्री

नये वर्ष की शुभ वेला में, जीवन का उत्थान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।

प्राची से सूरज की किरणें, नव प्रभात को लाई हैं।
उड़े पखेरु गाते-गाते, नव कलियाँ मुस्काई हैं।
त्याग आज प्रमाद भाव को, जीवन को गतिमान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।1।।

तन को अब तक खूब सजाया, आज सजालें निज मन को।
पंक मिटा दें इस धरती का, निर्मल करें नीर पवन को।
नये रूप से अनीति का हम सब ही अवसान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।2।।

अर्थ काम में घिरकर मानव, धर्म मोक्ष को ना भूले।
भीतर जितना उतरे कम है, बाहर-बाहर ना झूले।
लक्ष्य जानकर के जीवन का आओ अनुसंधान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।3।।

कल की अब हम चिंता छोड़ें, कल पर देना न ध्यान है।
राग-द्वेष व घृणा जो मन में, वह अपना अज्ञान है।
जिनवाणी का फहरे परचम, सबको प्रीत प्रदान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।4।।

वीर वाणी जग कल्याणी को, घर-घर तक पहुँचायें।
जीओ और जीने दो से, विश्व शांति हम लायें।
'मुनि गणेश' अध्यात्म जगत में आओ अब प्रस्थान करें।
नई चेतना आज जगाकर, हम अपना निर्माण करें।।5।।

अध्यात्म

ज्ञान के साथ हो आचरण

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी

घर में अंधेरा था! लाइट चालू की! उजाला हुआ।
लाइट के उजाले में घर में पड़ा कचरा दिखाई तो दिया,
पर हाथ में झाड़ू उठाकर कचरे को दूर करने का
यदि कोई प्रयास ही न किया तो?
कचरा घर में ज्यों के त्यों पड़ा रहा!
प्रकाश निरर्थक हो गया!
विशेषावश्यक भाष्य नामक ग्रंथ में ज्ञान को
'अकिंचित्कर' बताया गया है।
ज्ञान आपको जानकारी तो दे देता है, परन्तु
जानकारी देकर वह वहीं रुक जाता है!
ज्ञान से आपको जो कुछ जानने को मिला, उसके लाभ को
पाने के लिए अथवा उसके नुकसान से बचने के लिए
पुरुषार्थ तो आपको ही करना होगा।
ज्ञान वह नहीं कर सकता।
संदेश स्पष्ट है! **जानना अलग है और पाना अलग है।**
देख लेना अलग है और पहुँच जाना अलग है।
जानने के लिए ज्ञान चाहिए, पर पाने के लिए तो आचरण ही चाहिए।
देख लेने के लिए प्रकाश चाहिए, पर
पहुँच जाने के लिए तो पुरुषार्थ ही चाहिए।
वर्तमानयुग में आश्चर्य तो यह सृजित हुआ है कि
सुख को पाने के लिए और दुःख से दूर होने के लिए
इंसान जानकारी के अनुसार पुरुषार्थ कर ही रहा है।
पैसा कमाने के मार्ग को जान लेने के बाद

वह हाथ जोड़कर बैठा नहीं रहता।
बाजार में जाता ही है! ग्राहकों को सम्हालता ही है!
माल खरीदता ही है और बेचता ही है।
उसी तरह, शरीर को रोगमुक्त करने की
जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद
वह चादर तानकर बिस्तर में सो नहीं जाता!
दवाई लेता ही है! पथ्यपालन करता ही है!
आवश्यकता होने पर ऑपरेशन
कराने के लिए भी तैयार हो ही जाता है।
केवल पुण्य-पाप का क्षेत्र, पतन-उत्थान का क्षेत्र और
धर्म-अधर्म का क्षेत्र मनुष्य ने ऐसा रखा है कि जहाँ
वह केवल जानकारी प्राप्त करके संतुष्ट हो गया है,
तदनुरूप आचरण करने पर उसने गौर ही नहीं किया।
कारण? इस क्षेत्र में जानकारी के अनुसार
पुरुषार्थ करने पर शरीर और मन पर नियंत्रण रखने पड़ते हैं।
कष्टों को स्वीकारना पड़ता है, प्रलोभनों को छोड़ना पड़ता है।
जिसके लिए मनुष्य तनिक भी तैयार नहीं है।
किन्तु पढ़ लीजिए यह पंक्ति-
''जिसके होठों पर हंसी और पाँवों में छाले होंगे
मालिक, वो ही तेरे ढूंढने वाले होंगे''
संदेश स्पष्ट है।
रोगमुक्त बनना है?
औषधि की जानकारी ही पर्याप्त नहीं है।
दोषमुक्त बनना है?
उसकी भयानकता की जानकारी पर्याप्त नहीं है
जानकारी का आचरण में परिवर्तन करना ही होगा।

-'सुस्वागतम्' पुस्तक से साभार

English-Section

Need of Comparative study of Prakrit And Indic-religions

Prof. Sagarmal Jain

General Knowledge of different *Prakrits* with their peculiarities and their literature, along with Jain concepts of non-violence, non-possession and non-absolutism is essential for Indic studies. Indian culture consists of two traditions *Śramaṇika* and *Vaidika*. At present *Śramaṇika* tradition has mainly two branches- *Jainism* and *Buddhism*. Though there were some other minor *Śramaṇika* traditions also, such as *Ājīvakas* and others, which were vanished in due course of time or merged in the greater *Hindu* tradition of Indian culture.

Early *Jaina* canonical literature has been written in *Prakrit* languages, so to know Jainism in its original form knowledge of *Prakrit* languages, with their grammar and with their different shades and their literature is necessary. *Buddhist* literature has been written in *Pali* language. In earlier times *Pāli* also had been called as *Māgadhī*, which was one of the shades of *Prakrits*. *Pali* and *Ardha-Māgadhī* languages of *Jain* canonical literature are very near to each other.

Various Prakrits

Prakrit language has various shades such as *Māgadhī*, *Ardhamāgadhi*, *Śauraśenī*, *Mahārāṣṭrī* and *Paiśācī* etc. *Jain* canonical literature of *Śwetamber* sect had been written in *Ardhamāgadhī* and of *Digambar* sect in *Śaurśenī Prakrit*. These two shades of *Prakrit* language are very near to *Pali* and not very far from the *Vedic Sanskṛti* and the language of *Avestā* of *Pārasī* tradition. For the studies of Indian culture as a whole the knowledge of these *Prakrit*- languages is very essential.

Purpose of Prakrits and Jain Studies

The purpose of this Indic-study to teach the basic human values of Indian tradition along with the different *dharmas* of Indian origin and their basic philosophies as well as to understand the unity in diversity of

Indian culture. We cannot understand Indian culture completely without understanding different constituents of it's i.e. *Jainsim, Buddhism* and *Hinduism,* because there are various similarities alongwith their mutual impact, so one thing must be clear in our mind that the studies and researches in the field of *Indic*-studies are not possible in isolation. In fact, *Jainsim, Buddhism* and *Hindusim* are so intermingled and mutually influenced that to have a proper comprehensive knowledge of one, the understanding of the others is essential.

Śramaṇa and Brāhmaṇa traditions of Indian culture

However, two distinct trends have been pre-dominant in Indian culture from its earliest days, known as *Brāhmanic* and *Śramaṇika.* No doubt these two trends are distinguishable, but at the same time we must be aware of the fact that they are not separatable. Though on the basis of some peculiarities in their theories, we can distinguish them, yet in practice, it is very difficult to separate them because neither of the two remained uninfluenced by the others. The earlier *Śramaṇika* trends and their later phases, *Jainism* and *Buddhism,* were influenced by the *Vedic* tradition and vice-a-versa. The concepts of *Tapas* or austerity, asceticism, liberation, meditation, equanimity and non-violence are earlier absent in the *Vedas* and came into existence in *Hinduism* through *Śramaṇika* influence. The *Upaniṣadas* and the *Gītā* evolved some new spiritual definitions of *Vaidika* rituals, these two are the representatives of the dialogue taken place in *Śramaṇika* and *Vaidika* traditions.

Mutual impact of these two traditions

The *Aupaniṣadic* trend of *Hinduism* is not a pure form of *Vaidika* religion. It incorporated in itself various *Śramaṇika* tenets which gave a new dimension to *Vaidika* religion. Thus, we can say that our present *Hinduism* is an intermingling of *Vedic* and *Śramaṇika* traditions. The voice raised by our ancient *Aupanisadic Ṛṣis, Munis* and *Śramaṇas* against the ritualistic and worldly outlook of caste-ridden *Brāhmanism,* because more strong in the form of *Jainism* and *Buddhism* along with other minor *Śramaṇika* sects. In fact the *Aupanisadic* trend as well as *Jainism* and *Buddhism* provided refuge to those, who fed up with

Vaidika ritualism and the worldly outlook. Not only *Jainism* and *Buddhism* but some other sects and schools of Indian thought such as *Ājīvakas* and *Sāṁkhyas* also adopted more or less the same course towards *Vaidika* ritualism. However, *Jainism* and *Buddhism* were more can did and vehement in their opposition towards *Vaidika* ritualism. They out rightly rejected animal sacrifices in *yajñas*, the birth-based caste-system and the infallibility to the *Vaidika* verses. *Mahāvira* and *Buddha*, the most prominent preachers refuted caste-ridden and ritualistic *Brahminism*. They gave a severe jolt to it. *Jainism* and *Buddhism* came forward to sweep away the long accumulated excrescence, grown on Indian culture in the form of rituals, casteism, and superstitions.

But we shall be mistaken if we presume that in their attempt to clear away the dirt of *Vaidika* ritualism, *Jainism* and *Buddhism* remained untouched from it. They were also considerably influenced by *Vaidika* rituals. Ritualism in the new form of *Tāntrika* practices crept into *Jainism* and *Buddhism* and these practices became part and parcel of their religious practices and mode of worship. With the impact of Hindu *Tantricism*, *Jainas* adopted various *Hindu* deities and their mode of worship with some changes, which were suited to their religious temperament, but these deities were aliened to *Jainsim* in its original form. The *Jaina* concept of *Śāsana Devatā* or *Yakṣa-Yakṣis* is nothing but a Jaina version of Hindu deities. As I have pointed out earlier, the influence has been reciprocal. This can be demonstrated by the fact that on one side Hinduism accepted *Ṛṣabha* and *Buddha* as incarnation of God while on the other side *Jainism* included *Rama* and *Kṛṣna* in its list of their *Śalākā Puruṣas*. A number of *Hindu* Gods and Goddesses were accepted as consorts of *Tīrthaṇkaras* such as *Sarasvatī, Kāli, Mahākālī, Cakreśvarī, Ambikā, Padmāvatī* and *Siddhikā*.

The Need of comparative religious studies

The point I intend to mention is that different religious traditions of our great Indian culture have borrowed various concepts from one-another and that is the duty of us to study and highlight this mutual impact, which is the need of the hour and thus we can bridge the gulf,

existing between different religious systems.

To see the mutual impact and to understand the basic unity among these various religions and their canonical works such as a *Prakrit* work *Riṣibhāṣitā (Isibhāsiyāiṃ)* and *Pāli* works such as *Dhammapad* and *thera-gathā* are most essential for the Indic studies, because *Isibhāsiyāiṃ* has the basic teachings along with their philosophies of these three basic constituents of Indian culture i.e. *Jainism, Buddhism* and *Hinduism* along with some minor sects of *Śramaṇika* tradition. It has the basic teaching of two *Jain* thinkers, three *Buddhist* teachers as well as twenty two *Aupanisadic Ṛṣis* along with some other *Ṛṣis* of minor *Śramaṇika* and *Vaidika* traditions. Thus the study of the *Prakrit* language is necessary to understand the unity in diversity in Indian culture along with it's three constituents. To understand early Jainism as well as *Buddhist* canon and mutual impact in these traditions the knowledge of these basic languages i.e. *Pālī, Prakrit* and *Sanskrit* languages and their early literature is essential. The study of mutual impact and unity in diversity among these three systems of Indic culture is the fundamental aim of the scholars of Indology.

The advancement in all the walks of life and knowledge could not sublimate our animal and selfish nature. The animal instinct lying within us is still forceful and is dominating our individual and social behavior and due to this our life is full of excitements, emotional disorders and mental tensions. The more advanced a nation, stronger the grip of these evils of our age over it, the single most specific feature by which our age may be characterized is that of tension. Now a days not only the individuals, but the total human race is living in tension.

Need for the comparative studies of humane values propounded in different Indian religions

Though outwardly we are pleading for peace and non-violence yet by heart we still have strong faith in the law of the jungle, i.e. the dictum- 'might is right'. We are living for the satisfaction of our animal nature only, though we talk of higher social and spiritual values. This duality or the gap between our thought and action is the sole factor disturbing our

inner as well as outer peace. Once the faith in higher values or even in our fellow beings is shaken and we start seeing each and every person or a community or a nation with the eyes of doubt, definitely, it is the sign of disturbed mentality.

The basic problems of present society are mental tensions, violence and conflicts of ideologies and faiths. Jainism had tried to solve these problems of mankind through the three basic tenets of non-attachment or non-possessiveness *(Aparigraha)*, non-violence *(Ahiṃsā)* and non-absolutism *(Anekānta)*. If mankind observes these three principles, peace and harmony can certainly be established in the world.

First of all we are human beings and then any thing else i.e. *Hindus, Buddhists, Christians, Muslims, Sikkhas, Jainas* and the like. To be a real human being, is a pre-condition for being a real *Hindu* etc. Our prime duty is to be a human in its real sense. This spirit is echoed in one of the earlier *Jaina* text *Uttarādhyayana* where in Lord *Mahavira* has laid down four conditions for true religious being. viz- 1. Humanity, 2. Belief in true of religious teachings, 3. Control over senses and 4. Efforts for self-purification. Thus, we see that among these four conditions of a religious being, humanity occupies the first and the foremost position and to be a real human unbiased study of various religious systems and their script is essential.

-Director, Prachya Vidya Peetha, Shajapur (M.P.)

मुक्ति-पथ

श्री महावीर कोठारी

तनाव मुक्त जीना है तो, प्यारे त्यागी बनो।
कषाय रहित जीना है तो, प्यारे वैरागी बनो।
संयमपूर्वक जीना है तो, प्यारे समताधारी बनो।
कर्मरहित बनना है तो, प्यारे तपस्वी बनो।
सम्यक्दर्शी बनना है तो, प्यारे श्रद्धाधारी बनो।
जन से जिनेश्वर बनना है तो, प्यारे जिन पथ पर चलते चलो।।

-सुपुत्र श्री रोशनलाल जी कोठारी, कंठालिया हवेली, सदर बाजार, बड़ी सादड़ी-312403, जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.)

प्रासङ्गिक

स्वच्छता और शाकाहार

डॉ. दिलीप धींग

देश में 'स्वच्छ भारत अभियान' चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 145 वें जन्म-दिन 2 अक्टूबर 2014 से इस अभियान का शुभारंभ किया। तब से लेकर अब तक इस अभियान से आम आदमी जुड़ा तो देश के विभिन्न क्षेत्रों के अनेक जाने-माने व्यक्ति भी जुड़े हैं। मोटे तौर पर स्वच्छता अभियान का सन्देश है कि हमारे घर, गली-मुहल्ले, बाजार, सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर कहीं भी कचरा, गन्दगी और प्रदूषण नहीं हो। कोई भी नागरिक हर कहीं कूड़ा-करकट नहीं फेंके, गन्दगी नहीं करे। जहाँ कहीं कचरा या गन्दगी है, उसे बुहारने या हटाने में किसी को संकोच नहीं होना चाहिये। जिस प्रकार हम हमारे घर को साफ-सुथरा रखते हैं, वैसे ही हमें हमारे गली-मौहल्लों और सार्वजनिक स्थानों को साफ-सुथरा रखना चाहिये। हर व्यक्ति का यह नागरिक-दायित्व है कि वह कहीं भी अस्वच्छता नहीं फैलाए तथा अस्वच्छता का कारण नहीं बने।

इस क्रम में प्रत्येक व्यक्ति, समूह और समुदाय का यह भी दायित्व बनता है कि उसकी जीवन प्रणाली इस प्रकार की हो कि कचरा, गन्दगी और प्रदूषण कम से कम हो। मनुष्य की जीवनशैली और आदतों से भी स्वच्छता और अस्वच्छता की मात्रा और प्रभाव निर्धारित होते हैं। स्वच्छ भारत अभियान के इस दौर में हमें इस बात पर अवश्य विचार करना चाहिये कि ऐसी कौनसी जीवन शैली हो सकती है, जिससे न्यूनतम कचरा और प्रदूषण हो। इस प्रश्न का सरल, तथ्यपूर्ण और सर्वमान्य उत्तर है - शाकाहारी जीवन शैली एवं शाकाहारी संस्कृति। समाजशास्त्र के इस तथ्य को यहाँ फिर से दोहराया जाना चाहिये कि शाकाहार सिर्फ आहार ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण सुविकसित सहअस्तित्वपूर्ण निरापद जीवन शैली है।

यह शुभ संयोग है कि इस अभियान के सूत्रधार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्ण शाकाहारी हैं तथा जिन बापू की जयन्ती एवं प्रेरणा से इस अभियान का आगाज किया गया है, वे स्वयं भी पूर्ण शाकाहारी थे। महात्मा गांधी न सिर्फ शाकाहारी, अपितु अपने समय से लेकर वर्तमान तक शाकाहार व अहिंसा के वैश्विक प्रवक्ता तथा शाकाहारी जीवन शैली के गौरवशाली प्रतिमान के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

शाकाहारी जीवन शैली के अनेक उपयोगी आयाम हैं। उन आयामों में एक महत्त्वपूर्ण आयाम यह है कि शाकाहार एक प्रदूषण-मुक्त स्वच्छ आहार है। स्वच्छता और पर्यावरण

की दृष्टि से शाकाहार और मांसाहार में दिन-रात का अन्तर है। शाकाहार, शाकाहार की उत्पादन-प्रक्रिया, निर्माण-प्रक्रिया और शाकाहारी जीवन शैली स्वच्छता और पर्यावरण के बेहद नजदीक होती है। ठीक इसके विपरीत मांसाहार, मांसाहार की उत्पादन-प्रक्रिया, निर्माण-प्रक्रिया और मांसाहारी जीवन शैली में अस्वच्छता और प्रदूषण की भरमार होती है। यह सुस्थापित तथ्य है कि शाकाहार का स्वच्छता से घनिष्ठ नैसर्गिक सम्बन्ध है।

खेत, खलिहान, बाड़ियाँ, फसलें, पेड़-पौधे, वन, उपवन आदि शाकाहार के सुन्दर माध्यम होते हैं। हरे-भरे खेत, लहलहाती फसलें, खिलते-महकते बाग-बगीचे तथा अन्य सारे माध्यम मन को सुकून देते हैं, कवियों और कलाकारों को मुखर करते हैं और ऋषियों को उनकी साधना में लीन कर देते हैं। ये सारे माध्यम या साधन प्रकृति और संस्कृति को विकृति से बचाते हैं। ये साधन मानव की रचनात्मक वृत्तियों का उत्कर्ष करते हैं। खेतों में मानव और मवेशी मिलकर कार्य करते हैं। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी बने रहते हैं। मनुष्य और पशु-जगत के बीच अहिंसक सम्बन्धों का जीवनक्रम खेती-बाड़ी के साथ जुड़ा हुआ है। अनाज, दलहन, तिलहन तथा अन्य कृषि-उपज से भरे खेत-खलिहान, मण्डियाँ, हाट और बाजार किसी प्रकार की दुर्गन्ध और प्रदूषण के कारण नहीं बनते हैं।

शाकाहार के थाली में आने तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया स्वच्छ व सुरभित होती है, दुर्गन्ध और प्रदूषण से मुक्त होती है। शाकाहारी भोज्य पदार्थ के निर्माण से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थ भी थल, जल और हवा में न्यूनतम या शून्य प्रदूषण के कारण ही बनते हैं। शाकाहार से उत्पन्न अपशिष्ट यदि सड़ता-गलता है तो वह किसी घातक रोग या महामारी का कारण नहीं बनता है। जिन इलाकों में शाकाहारी लोग रहते हैं, वे इलाके अधिक स्वच्छ, प्रदूषण-मुक्त और शान्तिप्रिय होते हैं। यह सुस्पष्ट है कि स्वच्छता का एक आयाम शाकाहारी जीवन शैली भी है और शाकाहारी जीवन शैली का एक सुपरिणाम स्वच्छता भी है। यह तथ्य स्थानीय, नगरीय, राष्ट्रीय और वैश्विक; सभी स्तरों पर लागू होता है।

इसके ठीक विपरीत मांसाहार का उद्गम ही अनेक प्रकार की अस्वच्छताओं और क्रूरताओं से होता है। मांसाहार के लिए मारे जाने वाले प्राणी चीखते-चिल्लाते रह जाते हैं और उनका खून कर दिया जाता है। उनका खून जमीन और नालियों में बहकर प्रदूषण का कारण बनता है। बताया जाता है कि ब्रिटेन के कत्लखानों से प्रतिवर्ष एक अरब किलोग्राम (100000 टन) खून नालियों में बहकर जबर्दस्त प्रदूषण फैलाता है। यह तो सिर्फ खून को लेकर ब्रिटेन की ही बात हुई। मांस उत्पादन अर्थात् पशु-पक्षियों के वध के कारण कई प्रकार की गन्दगी, दुर्गन्ध,. दूषण और प्रदूषण जल, थल और वायुमण्डल में व्याप्त हो जाते हैं।

किसी भी प्राणी का वध करने के बाद उसका मृत कलेवर और मांस बहुत ही तेज गति से सड़ना-गलना शुरू हो जाता है। मानव की मृत्यु पर उसके मृत शरीर के शीघ्र ही अन्तिम संस्कार करने की सार्वभौमिक परम्परा के पीछे यही कारण है कि मृत शरीर तेज गति से सड़ता, बिगड़ता और दुर्गन्ध पैदा करता है। तीव्र सड़न-प्रक्रिया के कारण ही मांस और मांसाहार के रखरखाव और परिवहन में फ्रीजिंग व रेफ्रिजरेटिंग अनिवार्य होता है। ऐसा करने में संसाधनों का भारी खर्च और प्रदूषण होता है। मांस के रखरखाव में बरती जाने वाली थोड़ी-सी लापरवाही भी तीव्र दुर्गन्ध और गन्दगी का कारण बन जाती है। मांस-मछली के बाजारों में भी बहुत सारी अस्वच्छताएँ और दुर्गन्ध होती हैं।

मांस-उत्पादन से उत्पन्न गन्दगी को धोने और अपशिष्ट को धकेलने के लिए भी अनाप-शनाप जल का उपभोग या अपव्यय किया जाता है। चौंकाने वाला तथ्य है कि एक पौण्ड गेहूँ के उत्पादन में जहाँ 25 गैलन जल की खपत होती है, वहीं एक पौण्ड मांस के उत्पादन में 2500 गैलन पानी खर्च होता है। तात्पर्य यह है कि एक इकाई शाकाहार के उत्पादन में जितना पानी खर्च होता है, उससे लगभग सौ गुना अधिक पानी एक इकाई मांसाहार में खर्च हो जाता है। यह अन्तर सामान्य नहीं, असामान्य और अत्यधिक है। स्वच्छता के लिए पानी बेहद जरूरी द्रव्य है। मांसाहार उस अनमोल पानी की बर्बादी का बहुत बड़ा कारण है। अस्वच्छता का एक कारण जल का अभाव है और जलाभाव का एक बड़ा कारण मांसाहारी जीवन शैली है, जो संसाधनों के अनियंत्रित उपभोग पर टिकी है।

इसके अलावा बूचड़खाने अस्वच्छता और प्रदूषण के उद्गम-स्रोत होते हैं। कत्लखानों की अस्वच्छताओं के कारण अनेक बीमारियाँ मानव तक पहुँचती हैं। बूचड़खानों से निकलने वाला अपशिष्ट, अस्वच्छता तथा प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण है। बूचड़खानों से निकलने वाला अपशिष्ट तीव्र दुर्गन्ध और संक्रामक रोगों का कारण भी बनता है। आलम यह है कि मांस से परहेज नहीं करने वाले लोगों को भी बूचड़खाने अच्छे नहीं लगते हैं। रूस के विश्वविख्यात शाकाहारी साहित्यकार टॉल्स्टॉय का निष्कर्ष था कि मांसाहारी लोग भी पशु-पक्षी वध की क्रूर प्रक्रिया और बूचड़खानों के बेहद गन्दे दृश्यों को देखना नापसन्द करते हैं। स्वच्छता, शाकाहार, करुणा और सहृदयता जैसे सुन्दर जीवन-मूल्य सबको अच्छे लगते हैं।

जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर में खुलने वाले बूचड़खाने के विरोध में कहा था-"मैं कसाईखानों को बिल्कुल नापसन्द करता हूँ। मैं जब कभी किसी बूचड़खाने के पास से गुजरता हूँ, मेरा दम घुटने लगता है - वहाँ कुत्तों का झपटना और चील-कौओं का मण्डराना घृणास्पद लगता है।" नेहरू के कथन और प्रबल जन-विरोध पर उस समय विदेशी सरकार

ने एक अस्वच्छता फैलाने वाला अस्वच्छ कारोबार (कत्लखाना) को रद्द कर दिया था। खेत-खलिहानों के सौन्दर्य और बूचड़खानों के बीभत्स दृश्यों में जमीन-आसमान का अन्तर होता है। वक्त की पुकार है कि हमारी अपनी स्वदेशी सरकारें मांसाहार और कत्लखानों पर अंकुश लगाएँ। सरकार, समाज और नागरिकों को चाहिये कि स्वच्छ भारत अभियान के साथ अवध (पशु-पक्षियों का वध नहीं करना) और शाकाहार को भी जोड़ें।

स्वच्छता केवल प्रदर्शन की नहीं होकर वास्तविक और टिकाऊ होनी चाहिये। कुछ स्थानों पर मांसाहार का प्रचलन होने के बावजूद बाहर से सफाई नज़र आ सकती है। उस प्रदर्शित स्वच्छता के लिए पानी तथा अन्य संसाधनों का भारी खर्च किया जाता है। संसाधनों का वह खर्च प्रकृति और पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुँचाता है। धरती के पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने में ऐसी दिखाऊ या बाहरी स्वच्छताओं का भी बड़ा हाथ है। वस्तुत: शाकाहारिता की अवधारणा और स्वच्छता में बुनियादी रिश्ता है। इसके विपरीत मांसाहार स्वच्छता और स्वच्छ वातावरण का अव्वल दर्जे का दुश्मन है। गांधीवादी लेखिका और नाट्य निर्देशिका गोवरी रामनारायण के अनुसार गांधीजी के लिए सफाई सिर्फ भौतिक मामला ही नहीं था, बल्कि इसका उनके लिए मानसिक और आध्यात्मिक अर्थ भी था। स्वच्छता के साथ शाकाहार को जोड़कर स्वच्छता के मानसिक और आध्यात्मिक अर्थों को भी साकार किया जाना चाहिये।

देश का मौजूदा स्वच्छता अभियान पाँच वर्षों के लिए चलाया गया है। यह अभियान महात्मा गांधी की 150 वीं जयन्ती (सन् 2019) तक गतिमान रहेगा। स्वच्छता अभियान एक उद्देश्यपरक जन-जागरूकता अभियान है। इसलिए यह कहा जा रहा है कि इसे किसी भी प्रकार की राजनीति से नहीं जोड़ा जाना चाहिये। चूंकि स्वच्छता और शाकाहार एक-दूसरे के पूरक और पर्याय हैं, अत: स्वच्छता के साथ शाकाहार की बात को भी जन-जागरण का हिस्सा बनाया जाना चाहिये। स्वच्छता और शाकाहार के अन्त:सम्बन्धों को रेखांकित करने वाले कुछ नारे हमारे साझे अभियान के लिए उपयोगी हो सकते हैं। उन्हें यहाँ दिया जा रहा है -

स्वच्छ हरा-भरा संसार।
खेती-बाड़ी शाकाहार।।1।।

शाकाहार से हो उत्कर्ष।
स्वच्छ बनेगा भारतवर्ष।।2।।

शाकाहारी जीवन शैली।
स्वच्छता की प्रिय सहेली।।3।।

स्वच्छ भारत का यह नारा।
शाकाहार के बिना अधूरा।।4।।

गन्दगी के बड़े ठिकाने ?
पॉल्ट्री फार्म, बूचड़खाने।।5।।

कत्लखाने फैलाते भीषण,
बदबू, कचरा और प्रदूषण।।6।।

शाकाहार करें, करवाएँ।
सदा चलेंगी स्वच्छ हवाएँ।।7।।

स्वच्छता के तीन आधार।
श्रम, समता और शाकाहार।।8।।

आओ! स्वच्छता अपनाएँ।
बूचड़खाने बन्द कराएँ।।9।।

इक-दूजे के पूरक यार।
स्वच्छता और शाकाहार।।10।।

स्वच्छता और शाकाहार, दोनों प्राकृतिक और सांस्कृतिक मुद्दे होने के साथ ही वैश्विक और मानवीय मुद्दे भी हैं। स्वच्छता के साथ शाकाहार को और शाकाहार के साथ स्वच्छता को व्यापक अर्थों में आगे बढ़ाया जाना सबका कर्त्तव्य है। ऐसा करके देश-दुनिया के निवासी अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

Tea & Life

Sh. Bhanwarlal Golecha

Life is like making Tea-

1. Boil your ego.
2. Evaporate your worries.
3. Dilute your sorrows.
4. Filter your mistakes and
5. Get taste of happiness.

-17/729, CHB, Jodhpur (Raj.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः91)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा- असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य यदि देवलोक में उत्पन्न होते हैं तो किन-किन देवलोकों में उत्पन्न हो सकते हैं?

समाधान- असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य अर्थात् जिनकी आयु कम से कम एक करोड़ पूर्व वर्ष से लेकर तीन पल्योपम तक की होती है, ऐसे सभी मनुष्य युगलिक कहलाते हैं। ऐसे युगलिक मनुष्य सरलता, कषाय की मन्दता, विकारों की अल्पता आदि के कारण मरकर देवलोकों में ही उत्पन्न होते हैं। देवलोकों में भी भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के देवों में उत्पन्न होते हैं।

जिज्ञासा- किन-किन देवलोकों में उत्पन्न होने के लिए मनुष्य युगलिकों की कितनी-कितनी आयु होना आवश्यक है?

समाधान- भगवतीसूत्र शतक 24 उद्देशक 2 से 11 तक गमा के अधिकार में यह वर्णन मिलता है कि मनुष्य युगलिक अपनी वर्तमान भव की आयु से अधिक आयु देवलोकों में प्राप्त नहीं कर सकते। अपनी वर्तमान भव की आयु के बराबर अथवा उससे कम आयु वे देवलोकों में प्राप्त कर सकते हैं।

जिन मनुष्य युगलिकों की आयु वर्तमान भव में एक करोड़ वर्ष पूर्व झाझेरी की आयु है तो वे भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में उत्पन्न हो सकते हैं, क्योंकि इन देवों में जघन्य आयु दस हजार वर्ष की होती है। ज्योतिषी देवों में उत्पन्न होने के लिए कम से कम पल्योपम के आठवें भाग की, पहले देवलोक में उत्पन्न होने के लिए एक पल्योपम की, दूसरे देवलोक में उत्पन्न होने के लिए एक पल्योपम झाझेरी की तथा पहले किल्विषी में उत्पन्न होने के लिए कम से कम तीन पल्योपम की आयु युगलिकों के वर्तमान भव में होना अनिवार्य है।

जिन-जिन मनुष्य युगलिकों की वर्तमान भव में आयु तीन पल्योपम की

है तो वे भवनपति से लेकर दूसरे देवलोक तक के सभी देवलोकों में उत्पन्न हो सकते हैं।

जिज्ञासा- कितनी-कितनी अवगाहना वाले युगलिक मनुष्य कौन-कौनसे देवलोकों में आकर उत्पन्न होते हैं?

समाधान- युगलिक मनुष्यों की अवगाहना प्रायः स्थिति के अनुपात में होती है। अर्थात् कम से कम 500 धनुष झाझेरी तथा अधिक से अधिक तीन गाउ की अवगाहना मनुष्य युगलिकों की होती है।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिस मनुष्य युगलिक की स्थिति एक करोड़ पूर्व वर्ष झाझेरी की होती है उनकी अवगाहना 500 धनुष झाझेरी की होती है। जिनकी स्थिति एक पल्योपम के असंख्यातवें भाग की होती है, उन मनुष्यों की अवगाहना 800 धनुष की होती है। (अन्तर्द्वीपज मनुष्य) जिन युगलिक मनुष्यों की स्थिति एक पल्योपम, दो पल्योपम, तीन पल्योपम की होती है, उनकी अवगाहना क्रमशः एक गाउ, दो गाउ, तीन गाउ (कोस) की होती है।

इसमें इतना अवश्य समझना चाहिए कि जघन्य गमे से भवनपति-वाणव्यन्तर में आने वाले युगलिक मनुष्य की अवगाहना 500 धनुष झाझेरी की होती है। ज्योतिषी में आने वाले की 900 धनुष झाझेरी, पहले देवलोक में आने वाले की एक गाउ की, दूसरे देवलोक में आने वाले की एक गाउ झाझेरी तथा पहले किल्विषी में आने वाले युगलिक मनुष्य की अवगाहना कम से कम तीन गाउ की होती है। औघिक गमों से आने वाले युगलिक मनुष्यों में उक्त सभी प्रकार की अवगाहना (500 धनुष झाझेरी से लेकर तीन गाउ तक की) मिल जाती है। उत्कृष्ट गमों से आने वाले युगलिक मनुष्यों में उत्कृष्ट अवगाहना (तीन गाउ की) ही मिलती है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि जघन्य व उत्कृष्ट गमों से आने वाले युगलिक मनुष्यों में सभी प्रकार की अवगाहना नहीं मिल पाती, अतः उनमें अवगाहना का नाणत्ता (अन्तर) पड़ता है। जबकि औघिक गमों वालों में सभी प्रकार की अवगाहना मिल जाने के कारण अवगाहना का नाणत्ता नहीं पड़ता है।

जिज्ञासा- युगलिक मनुष्यों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ होती हैं?

समाधान- युगलिक मनुष्यों की कतिपय प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. युगलिक मनुष्य अकर्मभूमिज क्षेत्रों में सदैव पाये जाते हैं। अर्थात् देवकुरु, उत्तरकुरु, हरिवास, रम्यक्वास, हैमवत, ऐरण्यवत और अन्तर्द्वीपज इनमें तो सदैव युगलिक मनुष्य पाये जाते हैं, किन्तु कर्मभूमिज क्षेत्रों में भरत-ऐरवत क्षेत्रों में ही होते हैं। भरत-ऐरवत क्षेत्रों में अवसर्पिणी काल के पहले, दूसरे, तीसरे आरे में तथा उत्सर्पिणी काल के चौथे, पाँचवें, छठे आरे में होते हैं।
2. युगलिक मनुष्य समचतुरस्र संस्थान वाले तथा वज्रऋषभ नाराच संहनन वाले होते हैं। छह माह आयु शेष रहने पर वे एक युगल को जन्म देते हैं। आयु के आखिरी क्षणों में एक को छींक और दूसरे को जंभाई आती है और वे मृत्यु को प्राप्त होकर देवलोक में जन्म लेते हैं। इस क्षेत्र के अधिष्ठाता देव, युगल के मृतक शरीरों को क्षीर समुद्र में ले जाकर विसर्जित कर देते हैं।
3. देवकुरु, उत्तरकुरु, हरिवास, रम्यक्वास, हैमवत, ऐरण्यवत क्षेत्र में उत्पन्न युगलिक मनुष्य सम्यक्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि होते हैं। अर्थात् उनमें सम्यग्दृष्टि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती तथा मिथ्यादृष्टि प्रथम गुणस्थानवर्ती जीवन पर्यन्त रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि उनमें दूसरा व तीसरा गुणस्थान नहीं मिलता। मात्र पहला व चौथा ये दो गुणस्थान ही मिलते हैं।
4. छप्पन अन्तर्द्वीपों में उत्पन्न युगलिक मनुष्य एकान्त मिथ्यादृष्टि होते हैं, अतः उनमें मात्र प्रथम गुणस्थान ही मिलता है।
5. भरत-ऐरवत में उत्पन्न ऐसे सभी युगलिक, जिनकी आयु एक करोड़ पूर्व वर्ष झाझेरी से लेकर एक पल्योपम में एक समय कम तक की होती है, वे सभी एकान्त मिथ्यादृष्टि होने के कारण उनमें मात्र पहला गुणस्थान ही पाया जाता है।
6. अवसर्पिणी काल के पहले, दूसरे, तीसरे आरे में तथा उत्सर्पिणीकाल के चौथे, पाँचवें, छठे आरे में तिर्यंचों में भी स्थलचर तथा खेचरों में युगलिक होते हैं। उनमें वैर नहीं होता, ईर्ष्या नहीं होती, जरा नहीं होती, रोग नहीं होते। वे कुरूप भी नहीं होते। परिपूर्ण अंग-उपांग पाकर सुखोपभोग करते हैं।
7. युगलिक मनुष्यों में अवसर्पिणी काल के पहले आरे में तीन दिन के

अन्तर से, दूसरे आरे में दो दिन के अन्तर से तथा तीसरे आरे में एक दिन के अन्तर से आहार ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

8. अवसर्पिणी काल में पहले आरे में मिट्‌टी का स्वाद मिश्री के समान, दूसरे आरे में शक्कर के समान तथा तीसरे आरे में गुड़ के समान मीठा होता है। युगलिक मनुष्यों का आहार कल्पवृक्षों से प्राप्त फल एवं मिट्‌टी आदि का होता है।

9. युगलिक मनुष्य अवसर्पिणी काल के पहले आरे में तूवर के दाने के बराबर, दूसरे आरे में बेर के बराबर तथा तीसरे आरे में आंवले के बराबर परिमाण में सरस आहार ग्रहण करते हैं।

10. युगलिक मनुष्य अवसर्पिणी काल के पहले आरे में 49 दिन, दूसरे आरे में 64 दिन तथा तीसरे आरे में 79 दिनों तक नवजात युगल की देखरेख, पालन-पोषण करते हैं। उसके बाद वे नवजात युगल समझदार एवं स्वावलंबी हो जाते हैं।

11. अवसर्पिणी काल के युगलिक मनुष्यों में पहले आरे में 256 पसलियाँ, दूसरे आरे में 128 पसलियाँ तथा तीसरे आरे में घटकर 64 पसलियाँ रह जाती हैं।

12. युगलिक क्षेत्रों में मक्खी, मच्छर, बिच्छु आदि क्षुद्र जन्तुओं का उपद्रव नहीं होता है। क्रूर व हिंसक जाति के प्राणी भी क्षेत्रगत व कालगत स्वभाव के कारण शान्त प्रकृति के होते हैं।

13. युगलिक क्षेत्र के मनुष्यों में रोग, शोक, महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि की समस्याएँ नहीं रहती हैं। प्राकृतिक वातावरण रम्य, भव्य एवं मनोहर होता है।

14. अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे की दो कोड़ाकोड़ी सागरोपम की स्थिति में से जब दो भाग व्यतीत हो जाते हैं तथा एक भाग शेष बचता है तब काल स्वभाव के कारण कल्पवृक्षों से पूरी वस्तुएँ प्राप्त नहीं होतीं। इसलिए युगलिक मनुष्यों में परस्पर झगड़ा होने लगता है। इस विवाद को मिटाने हेतु तथा समुचित व्यवस्था बनाने हेतु कुलकरों की उत्पत्ति होती है। ये कुलकर अपने-अपने समय में प्रतापी एवं प्रभावशाली पुरुष होते हैं। ये तत्कालीन समाज के व्यवस्थापक एवं मर्यादा पुरुष कहलाते हैं। **(क्रमशः)**

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

ऋषिभाषित के आलोक में जैन, बौद्ध और वैदिक परम्पराओं में आध्यात्मिक ऐक्य

डॉ. श्वेता जैन

"**परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद् वचो न तु गौरवात्**" गौतम बुद्ध का यह वचन अध्यात्म का प्राण है। बुद्ध कहते हैं- हे भिक्षुओं! मेरे वचनों को परीक्षा कर ग्रहण करो, न कि गौरव से। बुद्ध जानते थे कि यदि ये मेरे गौरव से अर्थात् मेरे प्रभाव से धर्म के इन वचनों को ग्रहण करेंगे तो ये अध्यात्म पथ पर सतत नहीं चल पायेंगे। मेरे नहीं रहने पर इस पथ से विचलित हो सकते हैं। अध्यात्म का पथ अपना होता है, निजी होता है, व्यक्तिगत होता है। अध्यात्म का पथ कौनसा है, यह तो कोई बता सकता है, किन्तु उस पर अपनी अनुभूति के बल से ही आगे बढ़ा जा सकता है। अनुभूति व्यक्ति की स्वयं की होती है, इस स्वानुभूति के प्रकाश में अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त होता चला जाता है। आज अध्यात्म या धर्म के मार्ग पर इसी स्वानुभूति का प्रकाश मन्द पड़ गया है। इस मन्द प्रकाश में सभी धार्मिक सम्प्रदायें अध्यात्म को अपने सही स्वरूप में जीवित नहीं रख पाई हैं। उसी का परिणाम है कि आज धर्म एवं सम्प्रदाय अपनी-अपनी मान्यताओं, रूढ़ियों, सिद्धान्तों, आस्थाओं, क्रियाओं, विधि-विधानों के ढांचे मात्र रह गए हैं, इनमें से अध्यात्म रूपी प्राण नदारद हैं। यह बोध ऋषिभाषित के आलोडन से स्पष्टतया होता है।

ऋषिभाषित में सभी ऋषियों के अनुभूतिगम्य विचार बिना किसी परम्परा या सम्प्रदाय से जोड़कर प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें सभी के विचारों का आदर एवं सम्मानपूर्वक प्रस्तुतीकरण के साथ उनकी आलोचना का कहीं कोई निर्देश नहीं है। यह ग्रन्थ शुद्ध अध्यात्म का परिचायक है, क्योंकि इसमें न केवल जैन, बौद्ध और वैदिक परम्परा के अपितु अन्य श्रामणिक परम्पराओं के ऋषियों के उपदेश भी संकलित हैं। भारत की श्रमण और ब्राह्मण परम्पराओं के ऋषियों के वचनों का संकलन यदि किसी ग्रन्थ में उपलब्ध होता है तो वह ऋषिभाषित ही है। इसका समय ईसा पूर्व की पाँचवीं शती से ईसा की दूसरी शती के मध्य का स्वीकार किया गया है। जैनदर्शन के मूर्धन्य विद्वान् प्रो. सागरमल जैन ने इसकी प्राचीनता को अंगीकार करते हुए कहा है कि यह ग्रन्थ आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध को छोड़कर सम्पूर्ण प्राकृत जैन आगम साहित्य एवं पालि त्रिपिटक से प्राचीन है।[1]

ऋषिभाषित में ऋषिपुष्पशाल, वल्कलचीरी आर्द्रक, कूर्मापुत्र, तेतलिपुत्र, पार्श्व,

वर्द्धमान आदि बारह ऋषि निर्ग्रंथ परम्परा से तथा महाकश्यप, मातंग, साचिपुत्र आदि पाँच ऋषि बौद्ध परम्परा से सम्बन्धित हैं। वैदिक परम्परा के अंगर्षि, अम्बड़, असित देवल, तारायण, याज्ञवल्क्य आदि सतरह ऋषि हैं। शेष का सम्बन्ध अन्य परम्परा से अनुमानित है। ऋषियों की परम्परा का यह विभाजन डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञाजी की पुस्तक इसिभासियाइं[2] के आधार पर किया गया है।

निर्ग्रंथ परम्परा[3] से सम्बद्ध **पुष्पशाल ऋषि** आध्यात्मिक विकास के लिए कषाय-जय और पंच महाव्रत के पालन की आवश्यकता स्वीकार करते हैं। वे मोक्ष-मार्ग में आत्म-पर्यायों का द्रष्टा होना और विनय का पालन करना- इन दो बातों को महत्त्वपूर्ण बतलाते हैं। **ऋषि वल्कलचीरी** कहते हैं कि अनासक्ति और ज्ञान से मुक्ति होती है। **ऋषि कूर्मापुत्र** ने समाधि की प्राप्ति के लिए इच्छा और आकांक्षाओं से ऊपर उठना आवश्यक बतलाया है। **ऋषि तेतलिपुत्र** के अनुसार राग-द्वेष अथवा मिथ्यात्व रूपी ग्रन्थियों का नष्ट हो जाना ही मोक्ष है। **वर्धमान ऋषि** के अनुसार इन्द्रिय-निग्रह का तात्पर्य इन्द्रियों को अपने विषयों से विमुख कर देना नहीं है, अपितु इन्द्रियों के द्वारा अपने विषयों को ग्रहण करते समय उत्पन्न होने वाले राग और द्वेष के मनोभावों पर नियंत्रण रखना है। राग-द्वेष की निवृत्ति से मोक्षगामी होना निश्चित है। **पार्श्व ऋषि** के मत में अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह व्रत का पालन करने वाला साधक अष्ट प्रकार की कर्मग्रन्थियों से विमुक्त हो जाता है और चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण नहीं करता है। अन्य निर्ग्रंथ ऋषियों ने निर्ममत्व, निष्कामता, समभाव, ध्यान, स्वाध्याय आदि को आत्मशुद्धि के आधार बतलाए हैं।

बौद्ध परम्परा[4] के **ऋषि वज्जियपुत्त** कहते हैं- "जन्म-मरण, दुःख, अनिर्वाण तथा कर्म-संतति- इन सभी का कारण मोह है और इस मोह के मूल में व्यक्ति का अज्ञान रहा हुआ है। अतः इस मोह का विनाश ही विमुक्ति है।" **महाकश्यप ऋषि** के अनुसार जन्म-मरण की शृंखला या दुःख से विमुक्त होने के लिए कर्म-बन्धन के मिथ्यात्व, अनिवृत्ति, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग- इन पाँच कारणों का निराकरण आवश्यक है। **मातंग ऋषि** का मानना है कि जो आध्यात्मिक मतों को दूर करके सर्व सत्त्वों के प्रति कारुण्य से युक्त होकर अहिंसा का पालन करता है, वह मुक्ति का अधिकारी बनता है। **ऋषि सारिपुत्त** के अनुसार साधना का लक्ष्य चित्तवृत्ति की समाधि है, न कि भौतिक सुख या दुःख। इसलिए जिन साधनों से भी चित्तवृत्ति का समत्व सधता हो, वे सभी साधना मार्ग के रूप में ग्राह्य हो सकते हैं। अतः सारिपुत्त न तो अरण्यवास पर बल देते हैं और न आश्रम में

निवास पर। **ऋषि इन्द्रनाग** की दृष्टि में आत्मसंयम और आत्मतोष मुक्ति का उपाय है।

वैदिक परम्परा[5] के **ऋषि असित देवल** के अनुसार जो राग-द्वेष और मोहासक्ति का परिज्ञाता होता है, वही जन्म-मरण का नाशकर सिद्धि को प्राप्त होता है। **अंगीरस ऋषि** की दृष्टि में ज्ञान-मुक्ति का आवश्यक अंग है और यह ज्ञान आत्मस्वभाव में जागृत रहने की स्थिति है। शील रथ है और ज्ञान-दर्शन सारथी हैं। ऐसे रथ पर आरूढ़ होकर आत्मा अपने आत्मस्वभाव को उपलब्ध होता है। **नारद ऋषि** शौच को तथा **याज्ञवल्क्य ऋषि** लोकैषणा और वित्तैषणा के परित्याग को मोक्ष का साधन बतलाते हैं। **वारिषेण ऋषि** प्राणातिपात आदि अठारह पापस्थानों से निवृत्ति, **आर्यायण ऋषि** ज्ञान, दर्शन, आचरण की समन्विति, **गर्दभाली ऋषि** ध्यान-साधना, **रामपुत्त ऋषि** ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप, **पिंग ऋषि** तप-संयम-अहिंसा की साधना को मोक्षमार्ग के रूप में स्वीकार करते हैं। **ऋषिगिरि** के अनुसार पंचमहाव्रतों का पालन करना, क्रोधादि चार कषायों पर विजय प्राप्त करना, इन्द्रियों पर संयम रखना मुक्ति के पथ हैं। **उद्दालक ऋषि** मोक्ष मार्ग के प्रतिपादन में कहते हैं कि क्रोध, मान, माया और लोभ के वशीभूत होकर मानव पाप-कर्म को करता है, अतः इन चारों का त्याग करना चाहिए। **तारायण ऋषि** ने क्रोध-विजय पर तथा द्वैपायन **ऋषि** ने अनिच्छा से इच्छा पर विजय प्राप्त करने पर बल दिया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि ऋषिभाषित जैन, बौद्ध और वैदिक परम्परा की आध्यात्मिक अनुभूतियों का बेजोड़ समन्वय है। इस ग्रन्थ में आत्मा अथवा चेतना को बाह्य पदार्थों अथवा घटनाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया है तथा साधना का परम लक्ष्य आत्मविशुद्धि या चित्तविशुद्धि को माना गया है। चित्तशुद्धि के लक्ष्य से कहे गए ऋषियों के कथन साधक के लिए आत्मोन्नति के सूत्र हैं, जिन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

1. अज्ञान से बन्धन और ज्ञान से मुक्ति- गाथापतिपुत्र तरुण ऋषि कहते हैं- "**अण्णाणमूलो संसारो, विविहो सव्वदेहिणं**"[6] अज्ञान ही संसार का अर्थात् बन्धन का मूल कारण है। अज्ञान को क्रियात्मक और फलात्मक दोनों रूपों में समझने की आवश्यकता है। अज्ञान का क्रियात्मक स्वरूप है- विषयों में आसक्ति, निरन्तर इच्छाओं, कामनाओं का उत्पन्न होना एवं उन्हें पूर्ण करने में तत्पर रहना, अहंकार के वशीभूत हो दूसरों का अपमान करना, अपने आपको सबसे श्रेष्ठ समझना एवं दूसरों को हीन मानना, लोभ के वशीभूत होकर दूसरों को ठगना, झूठ बोलकर अपना उल्लू सीधा करना आदि। इस तरह अज्ञान की इन प्रक्रियाओं में रात-दिन आबद्ध रहने से जीव राग, द्वेष, मोह, मान, लोभ की भावनाओं से बन्धने लगता है। इन भावनाओं से बद्ध जीव क्रोध-मानादि कषायों से उपरत

होकर सोचने में स्वतन्त्र नहीं हो पाता। यह परतन्त्रता ही बन्धन है, जो अज्ञान का फलात्मक रूप है।

अज्ञान के क्रियात्मक और फलात्मक स्वरूप के बोध के अभाव में तथा बोध के पश्चात् के अनुभव को गाथापतिपुत्र बतलाते हुए कहते हैं- "**अण्णाणमूलकं खलु भो पुव्वं न जाणामि न पासामि नोऽभिसमावेमि नोऽभिसंबुज्झामि, नाणमूलाकं खलु भो इयाणिं जाणामि पासामि अभिसमावेमि अभिसंबुज्झामि। अण्णाणमूलगं खलु मम कामेहिं किच्चं करणिज्जं, णाणमूलगं खलु मम कामेहिं अकिच्चं अकरणिज्जं।**"[7] अज्ञान होने के कारण पहले मैं न जानता था, न देखता था, न समझता था और न अवबोध रखता था। वर्तमान में ज्ञानी होने के कारण मैं जानता हूँ, देखता हूँ, समझता हूँ और अवबुद्ध होता हूँ। अज्ञान के कारण मैंने कामना के वशीभूत होकर कार्य किया। ज्ञान होने के कारण मेरे लिए कामना के वशीभूत होकर होने वाले कृत्य अकरणीय हो गए।

2. इच्छा को अनिच्छा में बदलो- द्वैपायन ऋषि आत्म-बन्धन का मूल कारण इच्छा को बतलाते हैं- "**इच्छामूलं नियच्छंति, धणहाणिं बंधणाणि य**"[8] लोक में अनेक प्रकार की इच्छाएँ हैं। एक इच्छा के पूर्ण होने पर दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है, दूसरी के पूरी होने पर तीसरी का। इस प्रकार इच्छाओं का यह क्रम जीवन पर्यन्त चलता रहता है। इन इच्छाओं के कारण जीव क्लेश का अनुभव करता है। जो साधक अनिच्छा से इच्छा को जीत लेता है, वह अपने सुख को बढ़ाता है। इच्छा का वशवर्ती व्यक्ति अपने पूज्यजनों का भी अपमान कर देता है। इच्छा करने वालों को इच्छा नहीं चाहती, इच्छा को नहीं चाहने वाले का इच्छा वरण करती है।

3. साधना की दृष्टि से नियति का स्वरूप- ऋषिभाषित के ऋषि मंखलिपुत्र के अनुसार विश्व के पदार्थों की स्वाभाविक नियत व्यवस्था 'नियति' है। इस व्यवस्था को नियति के रूप में जानकर व्यक्ति में कर्तृत्व का अहंकार समाप्त होने लगता है। अहं-विगलन की यह परिणति साधना को पुष्ट करती है। ऋषि गोशालक कहते हैं कि साधक पदार्थों की नियति का द्रष्टा होकर त्राता होता है, आत्मरक्षक होता है- **से एजति वेयति खुब्भति घट्टति फंदति चलति उदीरेति तं तं भावं परिणमति, ण से ताती। से णो एजति णो वेदति णो खुब्भति णो घट्टति णो फंदति णो चलति णो उदीरेति, णो तं तं भावं परिणमति से ताती।**[9] जो व्यक्ति किसी क्रिया को देखकर कम्पित होता है, उसका वेदन करता है, क्षुब्ध होता है, आहत होता है, स्पन्दित होता है, विचलित होता है, उदीरणा करता है और उन-उन भावों में परिणत होता है, वह त्राता (आत्मरक्षक) नहीं होता। जो व्यक्ति क्रिया को देखकर कम्पित नहीं होता, वेदन का अनुभव नहीं करता, क्षुब्ध नहीं

होता, आहत नहीं होता, स्पन्दित और विचलित नहीं होता, उदीरणा नहीं करता तथा उन-उन भावों में स्वयं को परिणत नहीं करता, वह मुनि त्राता-रक्षक कहलाता है।

4. चित्त शुद्धि में सतत पुरुषार्थ अपेक्षित- "**अप्पा ठिती सरीराणं बहुं पावं च दुक्कडं**"[10] अर्थात् कई जन्मों से दुष्कृत पापकर्म बहुत अधिक हैं और उसकी तुलना में शरीर की स्थिति अर्थात् जीवन बहुत अल्प है। यह ठीक वैसे ही है जैसे बहुत सारे भूसे की तुलना में एक छोटी सी चिनगारी। छोटी सी चिनगारी जब तक आग का रूप नहीं लेती तब तक वह भूसा उसके लिए विशालकाय होता है और जैसे ही वह अग्नि का आकार ग्रहण करती है, देखते ही देखते भूसे का ढेर स्वाहा हो जाता है। वैसे ही जीव का पुरुषार्थ संयम, तप, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि के सातत्य से आग का रूप लेकर विशाल पापकर्म समूह को नष्ट करने में समर्थ हो जाता है।

5. कर्म-मुक्ति में नियति और पुरुषार्थ का योग- अपने अच्छे-बुरे कर्मों की जिम्मेदारी स्वयं पर लेना तथा उनके अच्छे-बुरे परिणाम की प्राप्ति होने पर तटस्थ रहना यह आध्यात्मिक जीवन का महत्त्वपूर्ण पहलू है। जो यह सोचकर पुरुषार्थ नहीं करे कि ईश्वरीय इच्छा के होने पर अथवा नियति से या सही काल आने पर मुक्ति हो जाएगी तो ऐसा संभव नहीं है। चित्त-शुद्धि के लिए अथवा मुक्ति के लिए नियति और पुरुषार्थ के समन्वय को, उसके प्रधान-गौण भाव को समझना नितान्त आवश्यक है। अतः ऋषि महाकश्यप नवें अध्ययन में स्पष्ट कहते हैं-

उवक्कमो य उक्केरो, संछोभो खवणं तधा।
बद्धपुट्ठनिधत्ताणं वेदणा तु णिकायिते।।[11]

बद्ध, स्पृष्ट और निधत्त कर्मों का उपक्रम, उत्केर, संक्षोभ-संक्रमण और क्षय हो सकता है, किन्तु निकाचित कर्मों का तो वेदन ही करना पड़ता है। अभिप्राय यह है कि कुछ कर्मों के क्षय, संक्रमण आदि में जीव स्वतन्त्र होता है तथा कुछ कर्मों को नियति मानकर के भोगने में वह विवश होता है। इस प्रकार किन कर्मों के क्षय में पुरुषार्थ की आवश्यकता है तथा किन कर्मों के भोगने में नियति जानकर जागृति की जरूरत है- इसे गहरे ध्यान की अथवा स्वनिरीक्षण की सूक्ष्म प्रक्रिया में जाकर ऋषि महाकश्यप की तरह अनुभव किया जा सकता है।

6. मुक्ति के साधन- लोक में कार्यों की निष्पत्ति हेतु कार्य-कारण की प्रक्रिया को समझना या ग्रहण करना आवश्यक होता है। ठीक वैसे ही मोक्ष-प्राप्ति के योग्य-साधन सामग्री को जानना भी मुक्ति-प्राप्ति के लिए जरूरी है। ऋषि सारिपुत्र मुक्ति के साधनों का वर्णन करते हुएं कहते हैं कि आकर्षक पदार्थों में साधक का लुब्ध न होना, श्रोत्रेन्द्रिय-

चक्षु-नासिका-जिह्वा और त्वचा से प्राप्त विषयों पर राग-द्वेष युक्त न होना तथा अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, तप व दया का पालन करना- मुक्ति के मार्ग हैं।[12] दमित इन्द्रिय वाले व्यक्ति को आश्रम और अरण्य जैसे स्थल अनुकूल या प्रतिकूल नहीं लगते। वे जहाँ कहीं भी प्रसन्नता की अनुभूति करते हैं, वही उसके अरण्य है और वही उसके लिए आश्रम होता है। अच्छे भावों से भावित आत्मा के लिए शून्यगृह, अरण्य और वन- ये सभी ध्यान में साधक हो जाते हैं। लेकिन सशल्य हृदय वाले के लिए ये ही स्थान हृदय में शल्य की पीड़ा देने वाले अर्थात् आर्त्तध्यान के निमित्त बन जाते हैं।[13] अतः मुक्ति के साधन भीतर मौजूद हैं, बाह्य परिस्थितियों में नहीं। सारिपुत्र की दृष्टि में साधक के लिए मुख्य लक्ष्य चित्त की समाधि है, वे सुखानुभूति का विरोध नहीं करते। वे उस प्रकार की सुखानुभूति का विरोध करते हैं, जिसके कारण आसक्ति और तृष्णा बढ़ती हो अथवा चित्त की समाधि भंग होती हो। ऋषिभाषित के उनतीसवें अध्ययन में वर्द्धमान ऋषि कहते हैं कि सच्चा साधक इन्द्रियों के मनोज्ञ विषयों पर न तो आसक्त होता है और न अनमोज्ञ विषयों पर घृणा ही करता है, इस प्रकार जो भोग और त्याग दोनों में जागृत रहकर अविरोध पूर्वक उनका सेवन करता है, वह कर्म-स्रोत को रोक देता है।[14]

7. अध्यात्म में नैतिकता- ऋषिभाषित में हिंसा, झूठ, असत्य, चोरी, व्यभिचार आदि को दुराचार की कोटि में रखा गया है और उनसे विरत रहने का उपदेश दिया गया है। इसी तरह क्रोध, मान, माया, लोभ रूप कषायचतुष्क तथा राग-द्वेष को भी अनैतिक या दुराचार के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है। अतः प्रश्न उपस्थित होता है कि ऋषिभाषित में किसी कर्म के नैतिक या अनैतिक होने का आधार क्या है?

इस प्रश्न पर चिन्तन करने से यह तथ्य परिलक्षित होता है कि सामान्यतः नैतिकता और अनैतिकता के सम्बन्ध में यह दृष्टिकोण है कि जिस कर्म को समाज का समर्थन प्राप्त है वह नैतिक है और जो कर्म समाज के द्वारा अमान्य किया गया है वह अनैतिक है, किन्तु ऋषिभाषित नैतिकता की इस कसौटी को मान्य नहीं करता है। ऋषिभाषित के सातवें अध्याय में कूर्मापुत्र स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जनवाद त्राता नहीं हो सकता है, क्योंकि दुराचरण हमारी समाधि का नाश करता है।[15] चाहे कोई कर्म जनसाधारण के द्वारा अनुमोदित हो, किन्तु यदि वह व्यक्ति की चित्त समाधि को भंग करता है तो वह अनैतिक ही माना जाएगा। ऋषिभाषित के आधार पर कहा जा सकता है कि वे सभी कर्म जो व्यक्ति और समाज की समाधि या शांति में साधक हैं, वे नैतिक हैं और वे सभी कर्म जो व्यक्ति और समाज में अशांति उत्पन्न करते हैं, वे अनैतिक हैं।[16]

ऋषिभाषित के ऋषियों की आध्यात्मिक अनुभूतियों से यह फलित होता है कि प्रत्येक आत्मा अपने-अपने कर्म-संस्कारों से योजित है। इन संस्कारों की प्रगाढ़ता, शिथिलता, न्यूनता और अधिकता का बोध उसे स्वयं समझना होता है। तदनुसार अपने बन्धनों से मुक्ति के लिए पुरुषार्थ करना अपेक्षित होता है। मुक्त पुरुषों के द्वारा बताए गए आत्मोन्नति या मुक्ति का मार्ग पूर्ण रूप से यथावत् उसके लिए लागू होगा, ऐसा कथमपि सम्भव नहीं है। उसका बहुत सा अंश उसके लिए उपयोगी होता है, किन्तु कुछ अंशों में उसे स्व-प्रज्ञा से अपना मार्ग खोजना होता है। अध्यात्म की इसी लोचशीलता को बनाए रखने पर वह जीवित रहता है। जब अध्यात्म को किसी व्यक्ति विशेष या उसके अनुयायियों की परम्परा से जोड़ दिया जाता है तो वह अधिक दिन जीवित नहीं रह पाता है। अतः अध्यात्म के इस स्वरूप के आलोक में अपने आत्मोन्नति का मार्ग अन्वेषण करना चाहिए।

संदर्भः-

1. ऋषिभाषित : एक अध्ययन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, पृ. 4 पर ''ऋषिभाषित का रचना क्रम एवं काल'' शीर्षक के अन्तर्गत।
2. 'इसिभासियाइं'- सम्पादक/अनुवादक : डॉ. समणी कुसुमप्रज्ञा, जैन विश्व भारती, लाडनूँ, वर्ष 2011
3. ऋषिभाषित, अध्याय-5,6,7,8,10,13,14,27,28,29,31,39
4. ऋषिभाषित, अध्याय- 2,9,26,38,41
5. ऋषिभाषित, अध्याय- 1,3,4,12,18,19,22,23,25,30,32,33,34,35,36,37,40
6. ऋषिभाषित, 21.3
7. ऋषिभाषित, 21.2
8. ऋषिभाषित, 40.3
9. ऋषिभाषित, अध्याय 11, गद्यांश 2
10. ऋषिभाषित, 9.14
11. ऋषिभाषित, 9.12
12. ऋषिभाषित, 38.4-10
13. ऋषिभाषित, 38.17-19
14. ऋषिभाषित, 29. 3-10
15. ऋषिभाषित, 7.2
16. द्रष्टव्य- ''ऋषिभाषित का दार्शनिक अध्ययन''- लेखिका : साध्वी प्रमोद कुमारी, प्रकाशक- प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर, वर्ष 2009, पृष्ठ 135

-संस्कृत-विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

प्रासङ्गिक

महान् हस्ती : गुरु हस्ती

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के 105 वें जन्मदिवस पर भावांजलि-गीतिका

हस्ती गुरु को वन्दन-नमन
है भू पर अवतरण प्रसंग।
हर मन की है यह आरजू
छू लें परम ज्ञानी के चरण।
हस्ती गुरु.....।
आगम निधि हुए आप
परम सिद्धि थे आप।
ज्योति पुंज थे आप,
हर अन्तर्मन में हुए प्रकाशित आप।
हस्ती गुरु.....।
माँ रूपा के थे नन्दन आप
केवल के थे कुन्दन आप।
दीनों के थे बन्धु आप
करुणा के थे सिन्धु आप।
हस्ती गुरु.....।
तारणहार बन कर आप
लाखों को उतारा भवसागर पार।
वाणी में स्वाध्याय अमृत गंगा
क्षमा सागर बन पिलाई अमृत बूंद।
तपे तपस्वी संथारे की तपन में
जनमानस को दिया सामायिक का अनुपम संदेश।
हस्ती गुरु को वन्दन-नमन।

-'हुक्म', 5-ए/1, सुभाष नगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

जैन भागवती दीक्षा-महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** की आज्ञा से, **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.** की मंगल मनीषा से **माघ शुक्ला षष्ठी, रविवार, दिनांक 25 जनवरी 2015** को हुबली (कर्नाटक) में तथा **माघ शुक्ला दशमी, गुरुवार, दिनांक 29 जनवरी 2015** गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.) में निम्नांकित मुमुक्षु बहिनों एवं मुमुक्षु भाइयों की **जैन भागवती दीक्षाएँ** सम्पन्न होने जा रही हैं -

25 जनवरी 2015 को होने वाली दीक्षाएँ

(1) हुबली (कर्नाटक) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु सुश्री खुशबू जी बागरेचा **मुमुक्षु सुश्री शिल्पा जी सुराणा**

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका **महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** की सुशिष्या, व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा **महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दीक्षा सम्पन्न होगी।

इस पावन प्रसंग पर राजस्थान केसरी पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री पुष्करमुनि जी म.सा.** की सुशिष्या श्रमणसंघीय **महासती श्री चंदनबाला जी म.सा.,** दक्षिण दीपिका उपप्रवर्तिनी **महासती श्री सत्यप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य का भी लाभ प्राप्त होगा।

29 जनवरी 2015 को होने वाली दीक्षाएँ

(2) गंगापुरसिटी (राज.) में सम्पन्न होने वाली दीक्षाएँ

मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी जैन (ओशो) **मुमुक्षु श्री रविजी जैन**

परम पूज्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 **श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** के मुखारविन्द से तथा महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय **श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा एवं विदुषी महासती **श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.,** विदुषी महासती **श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री सोहनकंवरजी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.,** व्याख्यात्री महासती **श्री रुचिताजी म.सा.** आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दीक्षा सम्पन्न होगी। आयोजित दीक्षा कार्यक्रमों में व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पित कर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

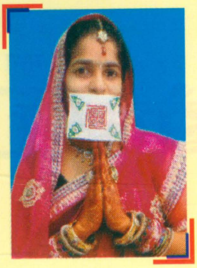

मुमुक्षु सुश्री खुशबूजी बागरेचा

जन्मतिथि- 27 दिसम्बर 1988

जन्मस्थान- हुबली (कर्नाटक)

मूल निवास- कल्याणपुर, जिला-बाड़मेर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री राणमलजी-श्रीमती पानीदेवीजी बागरेचा

पिता-माता : श्री दलीचन्दजी-श्रीमती सुशीलादेवीजी बागरेचा

चाचा-चाची : श्री मदनलालजी-श्रीमती सुशीलादेवीजी बागरेचा, श्री महेन्द्रकुमारजी-श्रीमती नारंगीदेवीजी बागरेचा, श्री राकेशकुमारजी-श्रीमती पिंकीदेवीजी बागरेचा, श्री सुरेशकुमारजी-श्रीमती कवितादेवीजी बागरेचा

भाई-भाभी : श्री कमलेशकुमारजी-श्रीमती जिंकलदेवीजी बागरेचा
श्री धीरजकुमारजी-श्रीमती रिंकीजी बागरेचा, श्री अनिलकुमारजी बागरेचा

भतीजी : सुश्री हितांची बागरेचा

बहिन-बहनोई : श्रीमती पिंकीजी-श्री मुकेशकुमारजी चौपड़ा
श्रीमती सपनाजी-श्री ललितजी पारख

भाणजा-भाणजी: सुश्री वंषिताजी चौपड़ा, सुश्री युविकाजी चौपड़ा, श्री हिदानजी पारख

नाना-नानी : स्व. श्री चम्पालालजी-स्व. श्रीमती मीकादेवीजी ढेलड़िया

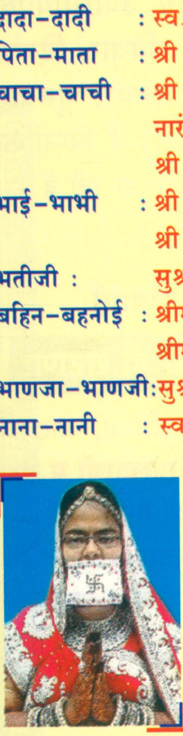

मुमुक्षु सुश्री शिल्पाजी सुराणा

जन्मतिथि- 23 जनवरी 1989

जन्मस्थान- हुबली (कर्नाटक)

मूल निवास- खण्डप, जिला-बाड़मेर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- बी.कॉम. (द्वितीय वर्ष)

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री जेठमलजी-श्रीमती सोनीबाईजी सुराणा

पिता-माता : श्री अमृतलालजी-श्रीमती पुष्पादेवीजी सुराणा

चाचा-चाची : श्री गौतमचन्दजी-श्रीमती ललितादेवीजी सुराणा

भाई-भाभी : श्री संदीपकुमारजी-श्रीमती कविताजी सुराणा
श्री विक्रमकुमारजी-श्रीमती हेमलताजी सुराणा, श्री निशीथजी सुराणा

भतीजा-भतीजी: श्री गर्वितजी, सुश्री लब्धिजी सुराणा,

बहिन-बहनोई : श्रीमती ममताजी (पिंकीजी)-श्री पंकजकुमारजी कानूंगा, सुश्री निकीताजी, सुश्री दर्शिताजी, भानजा-भानजी: श्री आदित्यजी, सुश्री सिद्धिजी कानूंगा

नाना-नानी : श्री अखेराजजी-स्व. श्रीमती जड़ावदेवीजी टिमरेचा

धर्म पिता-माता: श्री सुधीरजी-सुनिताजी सुराणा

धर्म भाई-भाभी: श्री आदर्शजी-ज्योतिजी, श्री आशीषजी-कविताजी, श्री कुलदीपजी-मोनिकाजी

परिवार से पूर्व दीक्षित: श्रमणसंघीय दक्षिण दीपिका उपप्रवर्तिनी महासती श्री सत्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री राजमतीजी म.सा.

वीर परिवार (स्थायी निवास)

श्री दलीचन्दजी कमलेशजी अनिलजी बागरेचा
टी-7, मन मन्दिर, कुसुगल रोड, केश्वापुर
हुबली-580023 (कर्नाटक)
फोनः- 0836-2216440

श्री अमृतलालजी संदीपजी विक्रमजी सुराणा
पुष्कर अगरबत्तीज के ऊपर, पहला माला
कंचगार गली, हुबली-580028 (कर्नाटक)
फोनः- 0836-2216803

धार्मिक अध्ययन-खुशबू जी बागरेचा

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, अणुत्तरोववाईसूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 12 अध्ययन, वीरस्तुति, तत्त्वार्थसूत्र के 5 अध्ययन।

आगम वाचनी : सूत्रकृतांगसूत्र, अन्तगडदशासूत्र, अनुयोगद्वारसूत्र, निरयावलिया पंचक, उत्तराध्ययन सूत्र।

स्तोक कण्ठस्थ : संजया-नियट्ठा, कायस्थिति, इन्द्रियपद, ज्ञानलब्धि, 800 बोल, 50 बोल की बंधी, 14, 32, 98 बोल का बासठिया, नवतत्त्व, कर्मग्रन्थ, गुणस्थानस्वरूप, जीवधड़ा, 25, 67, 33 बोल, लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, गति-आगति, गमा, कायस्थिति आदि।

स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, महावीराष्टक, हीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी, हस्ती चालीसा, मेरी भावना

अन्य : संस्कृतव्याकरण प्रथम भाग, प्राकृत प्रथमा प्रमाण-पत्र, लोक का स्वरूप, षट्दर्शन

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, प्राकृत।

धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड-जोधपुर, कक्षा 1 से 4, ज्ञानार्थी परीक्षा-2

वैराग्यावधि : 3 वर्ष **पर्युषण सेवा :** 2 वर्ष

धार्मिक अध्ययन-शिल्पा जी सुराणा

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, अणुत्तरोववाईसूत्र, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र के कतिपय अध्ययन, वीरस्तुति, तत्त्वार्थसूत्र के 5 अध्ययन

आगम वाचनी : आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांगसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदशासूत्र, अनुयोगद्वार-सूत्र, निरयावलिया पंचक, उत्तराध्ययन।

स्तोक कण्ठस्थ : 25, 66, 33 बोल, पाँच समिति, तीन गुप्ति, गति-आगति, लघुदण्डक, कर्मप्रकृति, नवतत्व, गुणस्थानस्वरूप, जीवधड़ा, 14,32,98 बोल का बासठिया, 800 बोल, 47 की बंधी, गमा, छोटी गतागत, द्रव्येन्द्रिय, ज्ञानलब्धि, कर्मग्रन्थ भाग 1-2

स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, हीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी, हस्ती चालीसा, हीरा चालीसा, मेरी भावना।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड, प्राकृत **पयुर्षण सेवा :** 2 वर्ष

तपस्या : मासखमण, वर्षीतप, सिद्धितप, राजा परदेशी तप, 11 उपवास, 2 अट्ठाई आदि।

धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर कक्षा 1 से 4 ज्ञानार्थी-प्रथम

अन्य : संस्कृत व्याकरण प्रथम भाग, लोक का स्वरूप। **वैराग्यावधि :** 3 वर्ष

हुबली दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम

शोभा यात्रा माघ शुक्ला 5, शनिवार, 24 जनवरी, 2015 प्रातः 8.00 बजे स्थानक भवन से प्रारम्भ होकर मुरुसाविरमठ हाई स्कूल प्रांगण पहुँचेगी।

उद्घाटनकर्त्ता- माननीय श्री दिलीपकुमारजी गाँधी
सांसद (अहमदनगर-महाराष्ट्र), पूर्व मंत्री-भारत सरकार

अभिनन्दन समारोह वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का

समय- दोपहरः 1.30 बजे से

स्थान- श्री मुरुसाविरमठ हाई स्कूल प्रांगण, हुबली

महनीय उपस्थिति- माननीय श्री निरंजन गुरुसिद्ध राजयोगेन्द्र महास्वामीजी
मुरुसाविरमठ, हुबली (कर्नाटक),

अध्यक्षता- श्री पी. शिखरमलजी सुराणा,
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

विशिष्ट अतिथि- श्री एच.के.पाटीलजी, श्री जगदीशजी शेट्टर, श्री प्रल्हादजी जोशी, श्री दिलीपकुमारजी गाँधी, श्री विजयजी संकेश्वर, श्री बसवराजजी होरट्टी, श्री प्रसादजी अब्बय्या, श्री श्रीनिवासजी माने, श्री राजेशकुमारजी मुथा, श्री पुखराजजी संघवी, श्री पारसमलजी बाफणा, श्री अजितजी दिनकर, श्री अरविन्दजी कुबसद गौडर।

अभिनिष्क्रमण यात्रा माघ शुक्ला 6, 25 जनवरी, 2015 को प्रातः 8.00 बजे

वीर परिवारों के निवास स्थान से प्रस्थान कर स्थानक भवन होते हुए हुबली के मुख्य मार्गों से **दीक्षा-स्थल मुरुसाविरमठ हाई स्कूल** प्रांगण पहुँचेगी, जहाँ महासती-मण्डल के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा-पाठ प्रवचन पश्चात् व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.** के मुखारविन्द से

सम्पर्क सूत्र- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (पं.), कंचगार गल्ली, हुबली-580028 (कर्नाटक), फोनः 0836-2216678

दीक्षा समिति- श्री हीराचन्दजी तातेड़-94483-82617, श्री महेन्द्रकुमारजी सिंघी-0836-2216455, श्री गौतमचन्दजी गोलेच्छा-94482-77781, **भोजन व्यवस्था समिति**- श्री बाबूलाल जी पारख- 90197-89131, श्री सुमेरमलजी सुराणा-94803-69716, **आवास निवास समिति**- श्री अमृतलालजी छाजेड़- 94491-18893, श्री विजयराजजी भंसाली- 94484-60921, **वैयावच्च समिति**- श्री पारसमलजी पटवा-93416-95151, श्री गौतमचन्दजी भुरट-90362-95632, **वाहन व्यवस्था समिति**- श्री शेखरजी कोठारी-97419-88388, श्री भँवरजी ढेलड़िया-94482-99633, **प्रचार-प्रसार समिति**- श्री बाबूलालजी पालगोता-94483-68176, श्री सुभाष जी डंक-99002-69151, **शोभायात्रा समिति**- श्री वर्धमान नवयुवक मण्डल, हुबली, **स्वागत सहयोगी**- श्री वर्द्धमान जैन नवयुवक मण्डल, श्री चन्दनबाला बहुमण्डल, श्री गुरु पुष्कर जैन मित्र मण्डल, श्री मृगावती महिला मण्डल, श्री नवकार नवयुवक मण्डल, श्री कौशल्या सासु मण्डल, श्री प्रभावती बालिका मण्डल-हुबली

वीर परिवार एवं अन्य सम्पर्क सूत्रः-श्री दलीचन्दजी बागरेचा-94480-41222, श्री कमलेशजी बागरेचा-98865-15113, श्री महेन्द्रजी बागरेचा-96630-33321, श्री राकेशजी बागरेचा-98802-66176, श्री अनिलजी बागरेचा-97434-97004, श्री धीरजजी बागरेचा-99164-57372, श्री मदनलालजी बागरेचा-94489-58148, श्री संदीपजी बागरेचा-98804-54304, श्री केवलचन्दजी बागरेचा-98252-77041, श्री रमेशजी बागरेचा-99807-75290, श्री अमृतलालजी सुराणा-94483-62030, श्री गौतमजी सुराणा-94488-22551, श्री संदीपजी सुराणा-98440-62524, श्री विक्रमजी सुराणा-90350-49661, श्री जितेन्द्रजी छाजेड़-94480-62716, श्री सोहनजी तातेड़-94484-74824, श्री राकेशजी पारख-98449-50939

मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी जैन (ओशो)

जन्मतिथि- 7 दिसम्बर 1995

जन्मस्थान- मौजपुर (जिला-अलवर)

वर्तमान निवास- पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

व्यावहारिक शिक्षा- नवमी

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री सुखदेवप्रसादजी-श्रीमती किरणदेवीजी जैन
पिता-माता : श्री महावीरप्रसादजी-श्रीमती मंजूजी जैन
चाचा-चाची : श्री नरेन्द्रकुमारजी-श्रीमती राजश्रीजी जैन, श्री गिर्राजप्रसादजी जैन
भाई : श्री प्रशान्तकुमारजी, श्री मोहितकुमारजी जैन (चिन्मय)
बहिन-बहनोई : श्रीमती लताजी-श्री कमलेशजी मेहता
भानजा : श्री हितांशजी मेहता
नाना-नानी : स्व. श्री किशोरीलालजी-स्व. श्रीमती अंगूरीदेवीजी जैन
स्व. श्री फूलचन्दजी-श्रीमती इन्द्रादेवीजी जैन

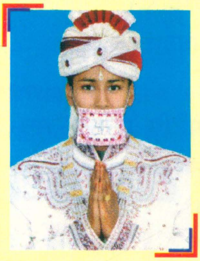

मुमुक्षु श्री रविजी जैन

जन्मतिथि- 16 मार्च 1997

जन्मस्थान- हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राज.)

वर्तमान निवास- जलगांव (महा.)

व्यावहारिक शिक्षा- आठवीं

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी : स्व. श्री प्रभुलालजी-श्रीमती अंगुरीदेवीजी जैन
बड़े पिता-माता: श्री लक्ष्मणप्रसादजी-श्रीमती मधुबालाजी जैन
श्री हेमराजजी-श्रीमती विमलाजी जैन
पिता-माता : श्री राजेशजी-श्रीमती सुनीताजी जैन
चाचा-चाची : श्री शत्रुंजयजी-श्रीमती अलकाजी जैन
भाई : श्री यशजी जैन
बहन : सुश्री ऋषिकाजी जैन
नाना-नानी : श्री कजोड़मलजी-श्रीमती मायादेवीजी जैन

वीर परिवार (अस्थायी निवास)

श्री महावीरप्रसादजी, मोहितकुमारजी जैन
द्वारा श्री त्रिलोकचन्दजी जैन, प्लॉट नं. 175,
नसियाँ कॉलोनी, गंगापुरसिटी,
जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

श्री राजेशकुमारजी, यशकुमारजी जैन
द्वारा श्री हेमन्तकुमारजी जैन, प्लॉट नं. 176,
नसियाँ कॉलोनी, गंगापुरसिटी,
जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

धार्मिक अध्ययन-ओशो जी जैन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, सुखविपाकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, नन्दीसूत्र, आचारांगसूत्र, निशीथसूत्र 1,2,3 अध्ययन, तत्त्वार्थसूत्र, पुच्छिंस्सु णं।

आगम वाचनी : आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांगसूत्र, स्थानांगसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, पन्नवणासूत्र, भगवती सूत्र आदि।

स्तोक कण्ठस्थ : 25, 67, 33 बोल, समिति-गुप्ति, कर्मप्रकृति, नवतत्त्व, लघुदण्डक, गति-आगति, संज्ञा, पाँच देव, जीवधड़ा, उपयोग, रूपी-अरूपी, श्वासोच्छ्वास, जयंतीबाई के प्रश्न, 98 बोल का बासठिया, गुणस्थान स्वरूप, 14 गुणस्थान का बासठिया, 32 बोल का बासठिया, 102 बोल का बासठिया, विरहद्वार, 24 ठाणा, सवणे-णाणे, सुपच्चक्खाण, दुपच्चक्खाण, 47 बोल की बंधी, 50 बोल की बंधी, 800 बोल की बंधी, कायस्थिति, ज्ञानलब्धि, द्रव्येन्द्रिय, अजीव-पर्याय, गमा, भवभ्रमण, निर्ग्रंथों का सुख, छोटी गतागत, संजया, नियंठा, 256 राशि का ढीगला, आयुष्यबंध, समकित के 12 बोल, दिशाणुवाय, सान्तर निरन्तर, उत्पात स्वस्थान समुद्घात, 8 आत्मा, असंयत, भव्यद्रव्यदेव, 6 काया, अबाधाकाल, योनिद्वार, कर्मग्रन्थ 1 से 4

स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, कल्याणमन्दिर, महावीराष्टक, शोभाष्टक, गजेन्द्राष्टक, हीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी, रत्नाकर पंचविंशति, वैराग्य कुलकम्, मेरी भावना।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत **वैराग्यावधि** : 4 वर्ष

धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, कक्षा 1 से 6, स्तोक वारिधि 1 से 5, संत-सती पाठ्यक्रम 1 से 4 ज्ञानार्थी 1 से 2 **पर्युषण सेवा** : 4 वर्ष

धार्मिक अध्ययन-रवि जी जैन

आगम कण्ठस्थ : दशवैकालिकसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र के 14 अध्ययन, सुखविपाकसूत्र, नन्दीसूत्र, पुच्छिंस्सु णं आचारांगसूत्र के दो अध्ययन, तत्त्वार्थसूत्र

आगम वाचनी : आचारांगसूत्र, दशवैकालिकसूत्र,पन्नवणासूत्र, भगवतीसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र आदि।

स्तोक कण्ठस्थ : 25, 67, 33 बोल, समिति-गुप्ति, कर्मप्रकृति, लघुदण्डक, संज्ञा, उपयोग, श्वासोच्छ्वास, रूपी-अरूपी, गति-आगति, 5 देव, जीवधड़ा, 98 बोल का बासठिया, 32 बोल का बासठिया, 14 गुणस्थान का बासठिया, गुणस्थानस्वरूप, आत्मा, ज्ञानलब्धि, भव-भ्रमण, सवणे-णाणे, सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, श्रमण निर्ग्रंथ सुख का थोकड़ा, कर्मग्रन्थ भाग 1-2, नवतत्त्व, विरह द्वार, योनिद्वार।

स्तोत्र कण्ठस्थ : भक्तामर, कल्याणमंदिर, महावीराष्टक, शोभाष्टक, गजेन्द्राष्टक, हीराष्टक, रत्नाकर पच्चीसी, रत्नाकर पंचविंशति, प्रार्थना पच्चीसी, मेरी भावना।

भाषा ज्ञान : हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत, मराठी, अंग्रेजी।

धार्मिक परीक्षा : आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, कक्षा 1 से 4, स्तोक वारिधि 1,2 संती-संत पाठ्यक्रम 1, ज्ञानार्थी 1 से 3 तक

पयुर्षण सेवा : 2 वर्ष **वैराग्यावधि** : 2 वर्ष छह मास

गंगापुर दीक्षा-महोत्सव-कार्यक्रम

शोभा यात्रा माघ शुक्ला 9, बुधवार, 28 जनवरी, 2015 प्रातः 9.00 बजे

पल्लीवाल मैरिज गार्डन, हीरो शोरूम के पास, उदेई मोड़ से प्रारम्भ होकर गंगापुर सिटी के प्रमुख मार्गों से होती हुई जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के श्रीचरणों में नसियाँ कॉलोनी स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेंगी।

अभिनन्दन समारोह वीर परिवार एवं दीक्षार्थियों का

समय- दोपहरः 1.00 बजे से

स्थान- श्री दिगम्बर जैन मन्दिर प्रांगण, नसियाँ कॉलोनी, गंगापुरसिटी

अध्यक्षता- श्री ज्ञानेन्द्र बाफना
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मुख्य अतिथि- माननीय न्यायमूर्ति श्री सज्जनसिंहजी कोठारी,
पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय, सम्प्रति-लोकायुक्त राजस्थान,

विशिष्ट अतिथि- माननीय श्री ज्ञानचन्दजी डागा (एफ.सी.ए.),
पूर्व निदेशक, विपणन- इन्डियन ऑयल लिमिटेड, सम्प्रति-चेयरमेन लुबरिजोल इन्डिया प्रा. लि.

अभिनिष्क्रमण यात्रा माघ शुक्ला 10, 29 जनवरी, 2015 को प्रातः 9.00 बजे

वीर परिवार के अस्थायी निवास प्लॉट 175 एवं 176 नसियाँ कॉलोनी से प्रस्थान कर दीक्षा-स्थल पहुँचेगी, जहाँ जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., आदि सन्त-सतीमण्डल के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा-पाठ प्रवचन पश्चात् जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मुखारविन्द से

दीक्षा स्थल- राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय न.3 प्रांगण, नसियां कॉलोनी, गंगापुरसिटी

वीर परिवार सम्पर्क सूत्र

श्री महावीरप्रसादजी जैन-084321-23052, श्री गिर्राज प्रसादजी जैन-096673-91742, श्री प्रशान्तकुमारजी जैन-099108-83521, श्री मोहितकुमारजी जैन-098876-94504, श्री कमलेशजी मेहता-094142-67824,

श्री लक्ष्मणप्रसादजी जैन-094147-54844, श्री हेमराजजी जैन- 096024-96409, श्री राजेशकुमारजी जैन-077986-92806, श्री शत्रुंजयजी जैन-090210-43220, श्री यशजी जैन-077910-97167

सम्पर्क सूत्र- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, महावीर भवन, बालाजी चौक के पास, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.), फोनः- 094140-32058

दीक्षा समिति- श्री राजीवकुमारजी पल्लीवाल-94140-32058, श्री भागचन्दजी जैन-94611-51969, **भोजन-व्यवस्था समिति-** श्री पदमचन्दजी जैन (हलवाई)- 93519-16112, श्री धर्मेशकुमारजी जैन (घाट वाले)-94130-64888, **आवास-व्यवस्था समिति-** श्री राकेशकुमारजी पल्लीवाल-84420-50327, श्री हेमन्तकुमारजी जैन (गहनोली वाले)-83024-89136,

आहार-विहार सेवा समिति- श्री कोमलचन्दजी जैन-90243-37246, श्री हेमन्तकुमारजी जैन (थानेदारजी)-94143-78341, प्रचार-प्रसार समिति- श्री आशीषकुमारजी जैन (वछामदी वाले)-94608-31993, श्री उमेशकुमारजी जैन (घाट वाले)-94612-78165, स्वास्थ्य-सेवा समिति- वैद्य श्री सतीशचन्दजी जैन (आयुर्वेदाचार्य)-94604-40490, श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन (मेडिकल वाले)-94140-32147, यातायात-सेवा समिति- श्री शीतलचन्दजी जैन (कैमरी वाले)-97821-18182, श्री संजीवजी जैन (करौली वाले)-97832-10206, स्वागत सहयोगी- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न बहु-बालिका मण्डल, गंगापुर सिटी

अन्य सम्पर्क सूत्रः- श्री अमीरचन्दजी जैन-75974-83527, श्री रेवतीप्रसादजी जैन-94135-03959, श्री नत्थीलालजी जैन-94609-91205, श्री अजीतकुमारजी जैन-94601-73768, श्री शीतलकुमारजी जैन-96676-83100, श्री धर्मेन्द्रजी जैन-94130-64888, श्रीमती कमला जी जैन-74632-32275, श्रीमती आरतीजी जैन-94629-45747

विनीत

मोफतराज मुणोत संयोजक-संरक्षक मण्डल	ज्ञानेन्द्र बाफना राष्ट्रीय अध्यक्ष	पी.शिखरमल सुराणा राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	आनंद चौपड़ा राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आयोजक

छगनलाल भुरट अध्यक्ष	जवाहरलाल बाफना कार्याध्यक्ष	अशोककुमार कोठारी मंत्री

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (पं.), हुबली

हीराचंद तातेड़ गौरवाध्यक्ष	महेन्द्रकुमार सिंघी अध्यक्ष	गौतमचंद गोलेच्छा मंत्री

दीक्षा समिति- हुबली

अमीरचन्द जैन परामर्शदाता	राजीव पल्लीवाल अध्यक्ष	रेवतीप्रसाद जैन मंत्री	नत्थीलाल जैन कोषाध्यक्ष	भागचन्द जैन दीक्षा मंत्री

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गंगापुर सिटी (राज.)

निवेदक- वीर परिवार

शा. मोहनलाल, दलीचन्द, मदनलाल, अमृतलाल, बेटा पोता राणमलजी छोगाजी बागरेचा
हुबली (कल्याणपुर)

शा. सुमेरमल, अमृतलाल, गौतमचन्द बेटा पोता जेठमलजी मुन्नीलालजी सुराणा
हुबली (खण्डप)

महावीरप्रसाद, नरेन्द्रकुमार, गिर्राजप्रसाद, प्रशान्त, हिमांशु, मोहित जैन
मौजपुर-पीपाड़शहर

लक्ष्मणप्रसाद, हेमराज, राजेशकुमार, शत्रुंजयकुमार, यशकुमार जैन
हिण्डौनसिटी-जलगाँव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन/फैक्स- 0291-2636763, 2641445

दीक्षा-समिति

कांतिलाल चौधरी-धुलिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मो. 98231-72765	बुद्धिप्रकाश जैन-कोटा राष्ट्रीय मंत्री मो. 94141-77139

सम्पर्क-सूत्र

मानेन्द्र ओस्तवाल राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री मो. 94141-32521	राजेन्द्रकुमार चोरडिया क्षेत्रीय प्रधान-कर्नाटक संभाग मो. 98450-14684	राजेश जैन क्षेत्रीय प्रधान-पल्लीवाल संभाग मो. 95290-83690

बाल गीत

श्रेष्ठ बनेंगे श्रेष्ठ बनेंगे

डॉ. धर्मचन्द जैन

श्रेष्ठ बनेंगे श्रेष्ठ बनेंगे, हम सब बालक श्रेष्ठ बनेंगे

आलस दूर भगाकर जड़ से, श्रम को गले लगायेंगे।
काम स्वयं करेंगे अपना, घर का मान बढायेंगे ।।1।। श्रेष्ठ.....

बात-बात में नहीं बिगड़ेंगे, बुरा कभी ना मानेंगे।
मन से साफ रहेंगे हरदम, बोली मीठी बोलेंगे।।2।। श्रेष्ठ.....

पढ़-लिखकर विद्वान् बनेंगे, समय व्यर्थ नहीं खोयेंगे,
खेलेंगे हम सच्चे मन से, मित्रों से नहीं झगड़ेंगे।।3।। श्रेष्ठ.....

मांस-मदिरा, गुटखा, बीड़ी, कभी नहीं अपनायेंगे।
शाकाहार का सेवन कर, हृष्ट-पुष्ट हो जायेंगे।।4।। श्रेष्ठ.....

विनय, सरलता और सादगी, से जीवन चमकायेंगे।
करुणा मैत्री मुदिता से हम जीवन सरस बनायेंगे।।5।। श्रेष्ठ.....

बुरा नहीं सोचेंगे मन में, बुरा न बाहर बोलेंगे।
बुरा नहीं करेंगे हम सब, गुण-ग्राहक बन जायेंगे।।6।। श्रेष्ठ.....

निन्दा रस में नहीं डूबेंगे, सत् का साथ निभायेंगे।
अनुशासन में रहकर हम तो, गुण अपने विकसायेंगे।।7।। श्रेष्ठ.....

कुव्यसनों से दूर रहेंगे, आदत अच्छी डालेंगे।
सन्तों के हम वचन सुनेंगे, नैतिकता अपनायेंगे।।8।। श्रेष्ठ.....

बोर नहीं होंगे जीवन में, लक्ष्य उत्तम साधेंगे।
इण्टरनेट, मोबाइल युग में, कभी न धोखा खायेंगे।।9।। श्रेष्ठ.....

प्रसन्न रहेंगे समभावों में, कष्टों को हम जीतेंगे।
सदा शान्ति सन्तोष वरेंगे, लोभ मोह को छोड़ेंगे।।10।। श्रेष्ठ.....

-3 के, 24-25, कुडी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

कविता

पथ प्रशस्त करो स्वयं अपना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

निराश न मन को करो,
ध्यान की राह में धीरज धरो,
पथ प्रशस्त करो स्वयं अपना,
अपूर्व शान्ति ध्यान दिलाएगा
नहीं ये कोई सपना,
निज गौरव का नित नित ज्ञान रहे,
हर जीव परमात्मा बन सकता है ध्यान रहे,
सजगता से विचारों की भटकन को पार करें,
मनुज जन्म अब व्यर्थ न हो
मन मंदिर में गुंजित ये गान रहे,
कदम दर कदम बढ़ते रहें मंजिल के करीब,
तीव्र संकल्प से लिख लें स्वयं अपना नसीब,
कभी थकना नहीं, रुकना नहीं
मंजिल का सहारा है,
लक्ष्य से पहले जो बैठा वो ही तो हारा है,
हार से लेकिन मत घबराओ,
आगे की सुध लेकर अग्रिम चरण बढ़ाओ,
मिला है अवसर फिर नई शुरुआत करेंगे,
आज जो मेहनत करेंगे, वो ही कल फल मीठा चखेंगे,
लड़खड़ा गए जो पहले कदम पर ही
आगे वो फिर कैसे चलेंगे?
हर बाधा सहज ही हटेगी
समर्पित हो जब कर्म करेंगे,
विश्वास हो कुछ कर गुजरने का
तो हर छंद गीत है,
हौंसले अपने बुलन्द हो तो हार में भी जीत है।

-मुम्बई (महा.)

सामयिक

अल्पसंख्यक होने से जैनों को लाभ

श्री उदयमुनिजी म.सा.

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम, 1992 की धारा 2 (सी) में प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने जैन समुदाय को अल्पसंख्यक घोषित करते हुए अधिसूचना जारी कर दी। विगत 20 वर्षों में जैनी ही परस्पर अंतर्विरोधग्रस्त थे। कोई कहता, होना चाहिए, कोई विरोध करता। विरोधकर्त्ता मानते थे कि इससे जैन लोग राष्ट्रीय मुख्य धारा से कट जाएँगे, उन्हें फिर हिंदुओं का समर्थन नहीं मिलेगा। जैनी बुद्धि, बल, धन वैभव सम्पन्न हैं, फिर उन्हें अन्य अल्पसंख्यकों जैसा, अनुसूचितजाति, जनजाति, पिछड़ों जैसा या विपन्न गिना जाएगा। वे भयग्रस्त थे कि ऐसी घोषणा से जैनों की प्रतिष्ठा गिरेगी। जिन-जिन राज्यों में जैन समुदाय जागृत और संगठित था, उनमें उनकी राज्य सरकारों ने उन्हें अल्पसंख्यक घोषित कर दिया। सतत पुरुषार्थ से अब केन्द्रीय सरकार ने जैनों को अल्पसंख्यक घोषित कर दिया। केन्द्र सरकार का अध्यादेश सभी राज्यों में लागू हो गया।

भारत बहुल हिन्दूधर्मवादी देश है। बहुसंख्यक अल्पसंख्यकों पर हावी न हो जाएं, अतः संविधान-निर्माताओं ने प्रत्येक भारतवासी को धर्म-स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार दिया। प्रत्येक भारतवासी अपनी आस्था, श्रद्धा के अनुरूप धर्मकार्य में स्वतंत्र रहेगा। राज्य उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। (अनुच्छेद 25) यदि किसी धर्म के अनुयायियों का समूह (सम्प्रदाय, संघ) धर्म कार्यों की पूर्ति में किन्हीं संस्थाओं की स्थापना करे तो स्थापना, प्रबंधन, व्यवस्थापन में अनुयायी पूर्णतः स्वतंत्र रहेंगे। राज्य उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। (अनुच्छेद 26)

आजादी के पूर्व सैकड़ों वर्षों से जैनों की सैकड़ों संस्थाएँ रहीं, जिन्होंने भव्य एवं इतिहास प्रसिद्ध मन्दिरों, धर्म-स्थानकों, परोपकारी संस्थाओं में करोड़ों रुपए लगाये। उनमें भरपूर समय और शक्ति लगा दी। उनका लाभ जैनों ने ही नहीं लिया, लाखों सामान्य मनुष्यों ने लिया। पशु-पक्षियों और प्रकृति या पर्यावरण को भी मिला। इन संस्थाओं के धन, ऐश्वर्य, सम्पन्नता और वर्चस्व से सरकारी प्राधिकारियों और राजनेताओं ने अनावश्यक लाभ लिया। कई कानूनों और संवैधानिक प्रावधानों में जैन और जैन संघटनाएँ (संस्था, धर्म संघ, न्यास) पराधीन रहीं। कारण क्या रहा? जैन धर्मावलम्बी अल्पसंख्या में होते हुए भी धर्म की अपेक्षा अल्पसंख्यक नहीं माने गए। इसलिए जैन विद्यालय या महाविद्यालय यदि जैन धर्म की शिक्षा दें, हिन्दी को बढ़ावा दें तो उन्हें मान्यता और अनुदान

नहीं मिला। धर्म-निरपेक्ष राज्य में धर्म की पढ़ाई निषिद्ध रही। कर्मचारी-शिक्षक-प्रधानाचार्य का चयन करने हेतु सरकार के एवं विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि बैठते रहे। निर्धारित योग्यतानुसार एक कुसंस्कारी, कुव्यसनी, भिन्न धर्म वाले मांसाहारी का चयन हुआ। अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग को भर्ती करने, पद नियुक्ति देने आदि में आरक्षण दिया गया। करोड़ों रुपए तो जैनों के लगे हैं और आरक्षण से योग्य जैन बच्चे भी वंचित रहे। जैन धर्म के मानने वाले अल्पसंख्यक नहीं माने गए, इसलिए इतनी हानियाँ हुईं।

जैन हर राज्य में, पूरे भारत में अल्पसंख्यक हैं। अब केन्द्रीय सरकार ने ऐसा मान्य कर लिया, अतः हर राज्य के जैनों को वे सभी लाभ मिलेंगे, जो मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, सिक्ख, पारसी धर्म समूहों को प्राप्त हैं। अनुच्छेद 25 और 26 के धार्मिक-मौलिक अधिकार तो समस्त भारतवासियों को प्राप्त हैं, परन्तु अल्पसंख्यक धर्मवालों को अनुच्छेद 29 और 30 में विशिष्ट संरक्षाएँ मान्य की गईं।

अनुच्छेद 29 में आया-यदि कोई अल्पसंख्यक समुदाय अपने धर्म, अपनी संस्कृति और भाषा की संरक्षा हेतु कोई भी संगठन (संघ, संस्था, समिति, न्यास, संघटना) की स्थापना करना चाहे तो वे उसकी स्थापना, प्रबंधन, व्यवस्थापन में स्वतंत्र रहेंगे। अर्थात् राज्य उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। अनुच्छेद 25-26 में प्रत्येक भारतवासी को अपना-अपना धर्म मानने का मौलिक अधिकार है। अनुच्छेद 29 में विशिष्ट धर्म-भाषा-संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का मौलिक अधिकार है। संगठन की सामान्य-सुव्यवस्था हेतु राज्य मापदंड दे सकता है, शिक्षक यावत् प्रधान अर्थात् निदेशक, आचार्य, प्राचार्य, कुल सचिव, कुलपति की अर्हताएँ (योग्यताएँ) निर्धारित कर सकता है, जो राज्य में लागू हैं वे लागू रहेंगी, परन्तु चयन में नियुक्ति से अन्तिम तक किसी भी कार्य में सरकार या सरकारी प्राधिकारी, विश्वविद्यालय का प्रतिनिधि नहीं बैठेगा। संगठन के व्यवस्थापन हेतु बनी कार्यकारिणी, प्रबंध समिति आदि में सरकार का हस्तक्षेप नहीं होगा, उनका प्रतिनिधि नहीं बैठेगा। चयन में अब जैन संस्थान में अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग को आरक्षण नहीं देना पड़ेगा। आयुर्विज्ञान, यांत्रिकी, शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं में स्थान (भर्ती संख्या) सरकार निर्धारित कर सकती है, परन्तु उसमें अन्य को आरक्षण-प्राथमिकता देने की कोई बाध्यता नहीं रहेगी। जैसे प्रवेश के लिए इतने स्थान, इतने प्रतिशत अंक आदि तो सरकार के मापदंड लागू रहेंगे, परन्तु सभी स्थान जैनों से भरे जा सकते हैं। सोचें-अल्पसंख्यक घोषित होने से इतना लाभ मिलेगा।

जाति से भले ही जैन हिन्दू माने जाते हों, परन्तु धर्म की अपेक्षा जैन धर्म अपना पृथक्, स्वतंत्र, सनातन स्वरूप रखता है। वह हिन्दू धर्म से निकला या उसकी शाखा या अंग नहीं है।

पृथक् वैशिष्ट्य है। अब जैन अपने धर्म, दर्शन, श्रमण संस्कृति, विशिष्ट भाषा (प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, शुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिन्दी) की संरक्षा हेतु कोई भी गतिविधि, संगठन, संस्था चलाकर इनका प्रचार-प्रसार-प्रभावना करने में पूर्ण स्वतंत्र होंगे, राज्य हस्तक्षेप नहीं करेगा। जैसे कोई जैन शिक्षण संस्था है, वह जैन धर्म की पढ़ाई से लगाकर शोध तक में स्वतंत्र है। कोई राज्य सरकार या उनका निकाय, शिक्षा मण्डल, विश्वविद्यालय या वि.वि. अनुदान आयोग यह नहीं कह सकता कि आप जैन धर्म की पढ़ाई भी कराओगे तो हम मान्यता या अनुदान नहीं देंगे। निर्धारित मापदंडों-मानकों की पूर्ति करें तो अन्य सामान्य संस्था को जो मान्यता, अनुदान, सुविधा दी जाती है, वे सभी जैन शिक्षण संस्था को भी मिलेगी। भेदभाव नहीं करेंगे। (अनुच्छेद 29) विशेषः यदि उस जैन संस्था में अन्य मतावलंबी भी पढ़ते हैं तो उन्हें जैन धर्म की पढ़ाई करने हेतु बाध्य नहीं किया जा सकता। जैन संस्थाएँ चाहे किसी भी प्रकार की सेवा-सुविधा दे रही हों, लाभार्थी को प्रवेश देते समय, लाभ-सुविधा देते समय अनिवार्य कर सकते हैं कि वह मद्य-मांस का सेवन न करे, तो देंगे।

जैन या अन्य मत, धर्म वाले यह न मानें कि अल्पसंख्यक जैन भी अब अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्गों जैसे सरकारी या उनसे मान्यता प्राप्त अर्ध-सरकारी निकाय में किसी प्रकार की नियुक्ति-पदोन्नति के लिए आरक्षण के अधिकारी होंगे। राज्य या किसी निकाय में, चुनाव में आरक्षण नहीं मिलेगा। कोई अध्यवसाय-ठेकों में किसी प्रकार की प्राथमिकता, वरीयता नहीं मिलेगी। फिर स्पष्ट कर दें, किसी भी विशिष्ट विधा में उपाधि हेतु प्रवेश आदि में इस घोषणा से कोई आरक्षण नहीं मिलेगा। जैन अपनी संस्थाएँ बनाएँ तो सारे स्थान जैन युवक-युवति से भर सकते हैं।

इस घोषणा से कोई हीनता-तुच्छता का भाव भी नहीं आना चाहिए, समस्त भारतवासियों ने जो संविधान बनाया, उसमें अल्पसंख्यक-धर्मियों को उनकी विशिष्ट संस्कृति, उनके धर्म और विशिष्ट भाषा की संरक्षा का मौलिक अधिकार दिया गया। अभी तक जैन धर्म उससे वंचित रहा। कड़े संघर्षों के बाद अब नवीन घोषणा से मिला है। जैन-समुदाय यह न माने कि किसी राजनेता या दल ने जैनियों पर अहसान किया है। इस्लाम-ईसाई धर्मानुयायियों के पश्चात् जैनियों को अल्पसंख्यक का दर्जा देकर सरकार ने अपनी भूल सुधारी है।

अन्त में, अनुरोध नहीं,चेतावनी दे रहा हूँ कि जैन समुदाय जैन धर्म-दर्शन के अनुसार आत्मसाधना करने में, श्रमण संस्कृति, भाषा, धार्मिक अनुष्ठान, धर्म स्थानकों, धर्म-तीर्थ-स्थलों पर सरकार या कोई भी निकाय अवरोध पैदा करे, आक्षेप-उपेक्षा-निंदा करे, क्षति पहुँचाए, संचालन-प्रबंधन, व्यवस्थापन में हस्तक्षेप करे तो डटकर मुकाबला करें।

बहुसंख्यक या उनके प्रतिनिधि राज्य हम अल्पसंख्यक जैनों पर हावी न होने पाए।

दूसरी चेतावनी- यदि कहीं कोई राज्य-निकाय अल्पसंख्यक धर्मावलंबियों-व्यक्तियों को व्यावहारिक शिक्षा हेतु, चिकित्सा, आर्थिक सुविधाएँ, रियायतें आदि देते भी हों तो जैनों को चाहकर या याचक बनकर हाथ नहीं पसारना है। वैभव सम्पन्न, अर्थ सम्पन्न, बुद्धि सम्पन्न, हर क्षेत्र में जैन समर्थ हैं। यदि कोई साधर्मी विपन्न-रोगी-संकटापन्न स्थितियों में हों तो अरबों रुपयों वाले न्यास-परोपकारी संस्थाएँ कोट्यधीश श्रेष्ठी चुपचाप, गुप्तरूप से उनकी सहायता करें। यदि अन्य धर्मानुयायियों के संस्थानों को उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए राज्य या कोई भी निकाय रियायती दरों पर भूमि दे रही है, आमतौर पर जैन समूह को भी देते हैं, पर न दें तो अपना अधिकार जताकर लड़कर ले सकते हैं। याचक बनकर नहीं।

चिरकाल से जैन धर्म में संलेखना-संथारा अन्तिम काल की परमोत्कृष्ट आत्मसाधना है, भिक्षाचरी विशिष्ट तपःसाधना है, केशलोच विशिष्ट संयम-साधना है, तीर्थस्थान जैन धर्म के प्राणस्थान हैं। ये श्रमण संस्कृति के मूलभूत अंग हैं। प्राकृत-संस्कृत के आगम एवं शास्त्र जैन धर्म के, ज्ञानार्जन के अमूल्य खजाने हैं, सरकार अन्य कोई भी प्राधिकारी, निकाय जनहित जनस्वास्थ्य, जन-सुरक्षा के नाम पर हस्तक्षेप करे तो जैनों को संगठित होकर उसका डटकर मुकाबला करना है। धर्मस्थानों-तीर्थस्थलों की पवित्रता-अध्यात्मिकता अक्षुण्ण बनी रहे, यह सजगता रखनी है। किसी भी जैन को याचक बनकर सुविधाएँ-रियायतें नहीं मांगनी है।

अनमोल सूत्र

(मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के द्वारा प्रवचन सभा में प्रदत्त चिंतनसूत्र)

1. मोह मिटाऊँ, मुक्ति पाऊँ।
2. खुद को देखूँ, खुद को बदलूँ।
3. मैं शान्त बनूँ, मैं संत बनूँ।
4. जिनवाणी का करूँ ज्ञान, तोड़ूँ मोह अज्ञान।
5. मौका है इस बार, छोड़ूँ पाप अठारह।
6. ऐसा काम करूँ, न जन्मूँ न मरूँ।
7. चलूँ संभल कर, पाप से डर कर।
8. धारूँ धर्म, काटूँ कर्म।

-संकलनकर्त्ता- श्री नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री,
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

नव वर्ष में नए संकल्प

श्री अभयकुमार जैन

जीवन में जो भी बुराइयाँ, उनका करें बहिष्कार।
नववर्ष में सद्‌गुणों को, सहज ही करें स्वीकार।।
सद्‌गुणों, संकल्पों से अपनी पहचान बनाएँ।
नववर्ष को नव संकल्पों से आदर्श बनाएँ।।

नव वर्ष की वेला पर अतीत से सीखना होगा, वर्तमान का सदुपयोग करना होगा तथा भविष्य के लिए आशान्वित होना होगा।

एक साल बीत गया- फिर नया साल आया,
जरा सोचिये मन में क्या खोया, क्या पाया?
क्या मन में शांति रही और हृदय में प्रेम रहा?
क्या हाथ काम में लगे रहे और मन प्रभु से जुड़ा रहा?
क्या रोते घुटते ही बिताया या हिम्मत से जीवन को जीया?
क्या कुछ साहस दिखाया? नया कुछ करके दिखाया?
आइये प्रार्थना करें प्रभु से, नया वर्ष बहुत शुभ हो।
सब तरह से आगे बढ़ें, जीवन गौरवमय हो।

नया वर्ष नई उमंग, नव उत्साह, नव उल्लास, नये संकल्प, नई उम्मीद, नये स्वप्न लेकर आता है। नव वर्ष की मंगलमय घड़ियों में हम आत्म-चिन्तन करें, आत्म-विश्लेषण करें, अपने जीवन का मूल्यांकन करें। जीवन का अर्थ मात्र जीना, मौज-मस्ती, खाना-पीना ही नहीं है, अपितु जीवन का अर्थ है उसे किस तरीके से जीया जा रहा है। आपकी जीवन शैली कैसी है? आपका पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन कैसा है? आप कितने लोकप्रिय हैं, आपके सामाजिक संबंध कैसे हैं?

चिन्तन में बदलाव लायें:- पुरानी असफलताओं से नाता तोड़ लेना ही समझदारी है, अन्यथा उनसे उत्पन्न आत्महीनता और आत्मग्लानि हमें स्नायुदुर्बलता का शिकार बना सकती है। जिन व्यक्तियों के प्रति आपकी नाराजगी है, जिनसे आपका वैरभाव है, ईर्ष्या है, मन-मुटाव है, जिन्होंने आपको हरदम, हरपल व हर प्रकार से नुकसान पहुँचाया हो, उसको मन में से निकालें तथा नये सिरे से सम्पर्क स्थापित करें। यदि आप स्वस्थ, स्वच्छ व

सद्भावना से उनसे मैत्री स्थापित करेंगे तो निश्चित है, आपके मधुर सम्बन्ध स्थापित होंगे तथा दोनों पक्ष तनाव रहित हो जाएंगे।

कुछ बातें विशेष ध्यान रखने की:-

1. लोगों को स्नेहपूर्वक अभिवादन करें।
2. बहस चाहे कितनी भी गरमागरम हो जाये, लेकिन कभी भी अपमानजनक और चोट पहुँचाने वाली भाषा व शब्दों का प्रयोग न करें। मतभेद को मनभेद में परिवर्तित न करें।
3. किसी का कोई भी रहस्य या जानकारी अपने मन की अतल गहराइयों में रखें, उसे कभी बाहर न आने दें।
4. जो व्यक्ति आपकी ओर सहायता के लिए निहारते हैं, उनके साथ व्यवहार कुशलता, सहानुभूति, प्रेम व सद्व्यवहार रखना है।
5. दूसरों के विवेक और उपलब्धियों को मान्यता देने और उनकी प्रशंसा करने में उदारता बरतें।

सुखी जीवन के लिए नववर्ष में स्वीकारने योग्य संकल्प:-

1. मैं दूसरों के साथ स्वयं की तुलना नहीं करूँगा।
2. मैं यथासम्भव किसी से सेवा और सुख-सुविधाओं की माँग नहीं करूँगा।
3. मैं सादगी को अपना आदर्श मानूँगा। 'सादा जीवन उच्च विचार' का जीवन में पालन करूँगा।
4. मैं यथासम्भव सुझाव व अनुरोध की भाषा बोलूँगा, आदेश की नहीं।
5. प्रतिकूल परिस्थिति में भी ठीक है, इस शब्द का प्रयोग करूँगा।
6. मैं खाने-पीने व बोलने में संयम रखूँगा।
7. प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन करूँगा, काम टालने की प्रवृत्ति का पूरी तरह त्याग करूँगा।
8. मैं अपमान व असफलता के प्रसंगों को ध्यान में नहीं लाऊँगा तथा प्रतिशोध, ईर्ष्या की भावना यदि है तो धीरे-धीरे कम करूँगा।

चिन्तन योग्य बिन्दु:-

1. जो कार्य आपके सामने हो, उसे पूरी निष्ठा से करें। ऐसा करने से आप कार्य में सफल भी होंगे तथा इससे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। फलतः आप खुद को पहले से अधिक प्रसन्न पाएँगे।
2. कुछ गलतियाँ आपसे हुई होंगी, जिसका परिणाम भी आपको ही भुगतना होगा, फिर दुःख किस बात का? यह तो एक मौका है खुद को सुधारने का और जीवन में अनुभव

लेने का।

3. आत्मसम्मान सबसे महत्त्वपूर्ण है। जब आप अपने भीतर के इंसान का सम्मान नहीं करेंगे तो दूसरे क्यों आपको सम्मान देंगे? कभी अपने आपको दूसरों से कम न समझें। पर हाँ, घमण्ड से भी बचें।
4. हर व्यक्ति का अपना अलग स्वभाव होता है, इस बात को समझते हुए पूरी कोशिश करें कि सबके साथ आपके सम्बन्ध मधुर हों। अगर आपको कोई भला-बुरा कह भी दे तो उसे नज़र अन्दाज करने का प्रयत्न करें। किसी की गलत बात पर चिढ़ने से आपको ही तकलीफ होगी।
5. अपने परिवार, अपने दोस्तों व कार्य के बीच तालमेल बिठाने का प्रयास करें और सबको पर्याप्त समय दें। आखिर इन्हीं की वजह से आपकी खुशियाँ व महत्त्व है।
6. अपने सहकर्मियों की सफलता पर उनसे जलने से बेहतर है कि सफलता के लिए अपने प्रयासों को और गति दी जाए। दूसरों से जलने से आपके हाथ में सिर्फ दुःख और चिड़चिड़ापन ही आएगा।
7. अपने आपको हमेशा बताते रहें कि आपमें आत्मविश्वास है और आप कोई भी कार्य करने में सक्षम हैं।
8. अपने हर कार्य को बेहतर ढंग से करने का प्रयास करें, लेकिन यह भी समझ लें कि इस दुनियाँ में कोई भी परिपूर्ण नहीं हो सकता।

नववर्ष सभी को नीरोग, दीर्घायु व स्वस्थ रखे, इसके लिए हम सबको चाहिए कि अपने जीवन में कोई भी व्यसन, बुराई या गलत आदत है तो उसे छोड़ें तथा किसी भी अच्छे कार्य का शुभारम्भ करें। बड़ों को पूरा सम्मान दें तथा छोटों को असीम प्यार बांटें, कभी किसी के लिए बुरा न सोचें, किसी को दुःख, क्लेश एवं पीड़ा नहीं पहुँचाएँ।

इसी संदर्भ में सन्तप्रवर श्री चन्द्रप्रभ व ललितप्रभ सागरजी द्वारा रचित "जीवन की वर्णमाला" को नववर्ष में अपनाकर सुखी जीवन का निर्माण किया जा सकता है।

अ से : अदब करो।	**च** से : चरित्रवान बनो।	**ब** से : बलवान बनो।
आ से : आत्मविश्वास रखो।	**छ** से : छलो मत।	**भ** से : भलाई करो।
इ से : इबादत करो।	**ज** से : जलो मत।	**म** से : महान् बनो।
ई से : ईमानदार बनो।	**झ** से : झगड़ो मत।	**य** से : यकीन करो।
उ से : उत्साह रखो।	**ट** से : टकराओ मत।	**र** से : रहम करो।
ऊ से : ऊर्जावान बनो।	**ठ** से : ठगो मत।	**ल** से : लक्ष्य प्राप्त करो।

ए से : एकता रखो।
ऐ से : ऐश्वर्यवान बनो।
ओ से : ओजस्वी बनो।
औ से : औरों की सेवा करो।
अं से : अंग प्रदर्शन मत करो।
क से कर्म करो।
ख से : खरे बनो।
ग से : गरिमा रखो।
घ से : घमण्ड मत करो।
ड से : डरो मत।
ढ से : ढलना सीखो।
त से : तत्पर बनो।
थ से : थको मत।
द से : दया करो।
ध से : धर्म करो।
न से : नरम बनो।
प से : परिश्रम करो।
फ से : फर्ज निभाओ।
व से : वचन निभाओ।
स से : समय के पाबन्द बनो।
श से : शर्म रखो।
ष से : षड्यन्त्र मत रचो।
ह से : हँसमुख बनो।
क्ष से : क्षमा करो।
त्र से : त्राहि-त्राहि मत मचाओ।
ज्ञ से : ज्ञानी बनो।

-'तृप्ति', बंदा रोड़, भवानी मण्डी-326502, जिला-झालावाड़ (राज.)

प्रभावना

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

प्रभावना क्या है? प्र+भू+णिच्+युच् से प्रभावना शब्द बनता है- प्रकर्ष रूप से भावना, प्रकर्ष की भावना, प्रमोद की भावना आदि की अभिव्यक्ति हो सकती है। समकित के 67 बोल के आठवें बोले में प्रभावना आठ बताई। आचरण द्वारा नहीं, आज द्रव्य देकर व्यक्ति जड़ द्वारा धर्म की प्रभावना करना चाहता है। द्रव्य से प्रलोभन जग सकता है और धर्म की विपरीत दिशा में गमन हो सकता है, उसे प्रभावना कैसे कहा जा सकता है? पढ़ने को मिला, सुनने को मिला- "आर्ष मार्ग में दोष लगाना अप्रभावना है, बेटा! अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है।"

निर्दोष चर्या के द्वारा अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है। वक्ता बोलकर भाव जगा सकता है, उससे तात्कालिक प्रभावना प्रतीत हो सकती है, पर उसी के विपरीत आचरण की जानकारी होने पर प्रभावना की प्रतीति समाप्त हो जाती है, बल्कि भीषण नुकसान या अप्रभावना हो जाती है। सुदर्शन, अहन्नक, कामदेव जैसे श्रमणोपासकों ने बिना उपदेश दिए भी अपने आचरण से कितनी महान् प्रभावना की, आज भी उनके कथानक प्रेरित करते हैं, प्रभावना करते हैं।

प्रतिपालन से ही प्रतिपादन संभव है, आचार युक्त प्रचार ही धर्म की प्रभावना कर सकता है। दूसरे शब्दों में आत्महित के द्वारा ही परहित सध सकता है। *-संकलित*

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (6)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(चौदहवाँ अध्ययन : इषुकारीयः)

राज्य मान्य था भृगु पुरोहित, पत्नी यशा थी सुन्दर,
वैभव था पर पुत्र नहीं था, दुःख था मन के अन्दर,
प्रेरक गाथा छः आत्मा की, सुनकर बोधि जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।107।।
श्रमण वेष में दो देवों ने, कहा भृगु से सुनलो,
जन्मेंगे दो पुत्र तुम्हारे, खुशियाँ मन में धरलो,
लेकिन होंगे दीक्षित दोनों, बाधा कोई न डालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।108।।
जन्म लिया फिर उन देवों ने, भृगु के घर में आकर,
समझाया भृगु ने पुत्रों को, रहना मुनि से डरकर,
करें क्रूरता बालक संग वे, उल्टी सीख को टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।109।।
खेल रहे थे इक दिन दोनों, देखा मुनिजन आते,
चढ़ गये एक पेड़ पर भय से, खुद को उनसे छिपाते,
करुणा-जगी मुनि चर्या से, भय की धुंध हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।110।।
मुनिजन ने आहार किया तब, बच्चों ने उनको देखा,
सात्त्विक था आहार सभी का, नहीं थी द्वेष की रेखा,
मिट गये सारे भय बच्चों के, मन में शान्ति बसालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।111।।

पूर्व जन्म का ज्ञान हुआ जब, देखी मुनि की करुणा,
तरुतल आकर करी वंदना, शुद्ध भावों का झरना,
संतों से सद्‌बोध को पाकर, जीवन साज सजालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।112।।

जन्म-ज़रा-मृत्यु के भय से, आकुलता दिल छाई,
जन्म-मरण का चक्र तोड़ने, साधकता मन भाई,
अनासक्त बन काम-भोग से, सारे दुःख मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।113।।

थोड़ी है आयुष्य यहाँ और, रोग-विघ्न हैं सारे,
मुनि चर्या अपना करके अब, मुक्ति पथ सम्भारें,
मात-पिता की अनुमति पाकर, दीक्षा-पथ सम्भालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।114।।

बिना पुत्र के मुक्ति न होती, कहते वेद विज्ञाता,
पढ़ो वेद फिर ब्रह्म-भोज दो, रमणी से हो नाता,
गृहीभार पुत्रों को दे फिर, अरण्यवास बितालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।115।।

वेदज्ञान नहीं रक्षा करता, ब्रह्मभोज ना तारे,
पुत्र कभी सद्‌गति नहीं देते, धर्माचरण उबारे,
कैसे मानें बात आपकी, इनको दिल से निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।116।।

काम-भोग क्षण का सुख देते, दीर्घकाल दुःख देते,
मुक्ति में होते हैं बाधक, अशुभ जानकर चेतें,
तृष्णा की अग्नि में जलकर, खुद को आज बचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।117।।

धर्मधुरी के अधिकारी को, भोग न लगते अच्छे,
भिक्षा का आश्रय ले विचरें, अणगारी बन सच्चे,
निःस्पृह गुण के धारक बनकर, सारी चाह मिटालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।118।।

बनती देह पंचभूत से, चेतन उत्पन्न होता,
देह नाश के साथ जानलो, चेतन सत्ता खोता,

भृगु ने कथन किया पुत्रों से, मिथ्या मैल निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।119।।
इन्द्रियाँ जान नहीं सकती हैं, निराकार चेतन को,
राग-द्वेष भावों से चेतन, पाता भव बन्धन को,
अमूर्त सदा शाश्वत होता है, बन्ध के हेतु छुड़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।120।।
अब तक रोका अब न रहेंगे, मोह किया था हमने,
धर्म से हम अन्जान रहे थे, पाप लगे अब दुःखने,
मत दोहरावो पाप कर्म को, कल पर बात न टालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।121।।
ज़रा मृत्यु से पीड़ित जग है, बीती रात न आती,
धर्मी की जो रातें बीतीं, सफल सभी हो जातीं,
धर्म बिना निष्फल सब रातें, मन में इसे जमालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।122।।
पहले हम सब साथ रहेंगे, फिर व्रत को धारेंगे,
दीक्षित होंगे वृद्ध होने पर, निराबाध विचरेंगे,
बात मानलो पुत्रों मेरी, संशय सभी निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।123।।
कल पर करे भरोसा वो ही, मौत को सच न माने,
मृत्यु संग नहीं संभव मैत्री, ज्ञानवान यह जाने,
पल भर भी अब देर करो ना, संयम भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।124।।
पुत्रों से बोधित हो भृगु ने, पत्नी से ये कथन किया,
पुत्र बिना क्या शोभा अपनी, पंख बिना जिम चिड़िया,
उचित नहीं अब घर में रहना, संयम दीप जलालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।125।।
भोग भरी मनुहार को सुनकर, पत्नी को समझाया,
आस नहीं परभव के सुख की, समता धर्म सुहाया,
व्यर्थ गया जीवन भोगों में, अब तो सार निकालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।126।।

परीषह जब आयेंगे संयम में, याद करोगे घर की,
अरति से मन खिन्न बनेगा, चाह जगेगी पर की,
पड़े ना तुमको फिर पछताना, सोच समझकर चालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥127॥

सर्प केंचुली जैसे छोड़े, चले पुत्र इस घर से,
क्यों न बनूं उसका अनुगामी, संयम को मन तरसे,
काम गुणों को त्याग सर्वथा, भिक्षा पक्ष अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥128॥

पति-पुत्र को देख यशा ने, अपना मन समझाया,
मोह नाल को काट चले ये, क्यों घर मुझे सुहाया,
चली संग में पति पुत्र के, घर का मोह भगालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥129॥

सुत वनिता संग चला पुरोहित, संयम पथ अपनाने,
सुनी बात तब राजा ने तो, लुब्ध हुआ धन पाने,
त्यक्त संपत्ति राजकोष की, इसका लोभ हटालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥130॥

रानी बोली क्यों चाहते हो? परित्यक्त उस धन को,
धन ही नहीं तजा है उसने, छोड़ दिया परिजन को,
वमन किये को क्यों खाते हो? अपकीर्ति को टालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥131॥

जग का सारा धन मिल जाए, फिर भी होगा कमती,
रक्षा नहीं कर पाये वह भी, कभी न देखी तृप्ति,
धन-जन की आसक्ति छोड़ो, अपना मन समझालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥132॥

काम-भोग सब छोड़ मरोगे, कोई न होगा त्राता,
मृत्यु आने पर हे राजन्! धर्म ही है परित्राता,
अन्य नहीं कोई भी रक्षक, धर्म ध्वजा फहरालो।
जीवन धन्य बनालो.....॥133॥

पिंजरे के पंछी ज्यूँ मुझको, ये जग बन्धन लगता,
तोड़ मोह मैं बनूं अकिंचन, लाऊँ मन में सरलता,

आरम्भ-परिग्रह से निवृत्त हो, संयम स्वाद चखालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।134।।
अन्य को जलते देख आग में, ईर्ष्यालु हर्षाते,
राग-द्वेष से जलता जग ये, क्यों नहीं मन समझाते,
पक्षी सम आकाश में उड़कर, खुद को मुक्त करालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।135।।
मुख में माँस दबाये पक्षी, अन्य से पीड़ा पायें,
माँस पिण्ड तज देने पर वो, निराकुल हो जाये,
भोग रूप आमिष को छोड़ो, निर्भय कदम बढ़ालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।136।।
गिद्ध समा ये काम भोग हैं, भव का भ्रमण बढ़ाते,
सांप गरुड़ से डरकर जैसे, शंकित हो कतराते,
वैसे यतना से जी करके, दुष्कर्मों से बचालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।137।।
जैसे बन्धन तोड़ के हस्ती, चलते अपने घर को,
कर्म काट कर वैसे ही हम, पावें अब अक्षर को,
ज्ञानीजन कहते हैं राजन्, श्रेय पथ अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।138।।
रानी की ललकार सुनी तो, राजा का मन जागा,
दुर्जय काम-भोग सब छोड़े, धन-वैभव भी त्यागा,
श्रुत-चारित्र धर्म अपनाकर, पौरुष भाव जगालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।139।।
युगल पुत्र संग भृगु यशा, और राजा रानी सारे,
अनित्य भावना से भावित हो, सर्व दुःखों को टारे,
कथा-वार्ता को सुनकर के, शाश्वत सुख को पालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।140।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

नारी-स्तम्भ

माँ से मेरी प्रार्थना

श्रीमती माया कुम्भट

माँ! मत सुनाओ मुझे परी कथाएँ
मत घोलो अपने दूध में मीठे-मीठे सपनों की खुशबू
मत बनाओ मुझे छुई-मुई नाजुक
परी कथाओं की परी सी।
मत रोको अपने आँचल से तपती धूप की आँच को।
माँ! मेरे
पाँवों में भर दो वह साहस की ताकत कि
जमाने के सामने डग-मगाऊँ नहीं
मेरे हाथों में भर दो माँ निर्माण
हुनर का कि जमाने को दिखा सकूँ
मैं सक्षम हूँ हर काम में।
माँ! मेरी सोच को इतना परिपक्व बना दो
निर्णय लेने व देने में किसी की मोहताज नहीं रहूँ।
तुम्हारे अनुभव की धरोहर का साहस भर दो
ताकि मैं तुम्हारे सपनों को सच कर सकूँ
मेरे दिमाग को सुन्दर विचार से सशक्त कर दो
कि मैं दुनिया, समाज, परिवार को दिशा दे सकूँ
समाज में नयी क्रान्ति ला सकूँ
इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों में मैं अपना नाम दर्ज कर सकूँ
तो फिर माँ! मुझे जीवन जीने का हक मिले
भ्रूण हत्या फिर कोई नहीं करेगा
क्योंकि मैं ही तुम्हारे सुख-दुःख में काम आऊँगी
तुम मेरी अच्छी दोस्त बन जाओगी
तो ज़िन्दगी गुलिस्ताँ हो जायेगी।

-अम्बामाता स्कीम, उदयपुर (राज.)

धारावाहिक

लगन की वेला (10)

आचार्य श्री उमेशमुनि जी 'अणु'

मैं जैन बना

नवयुवकों का एक दल मुनिराज धर्मप्रियजी के सन्मुख बैठा था। वे अपने प्रश्न मुनिराज के समक्ष रखते थे और मुनिराज उनकी शंकाओं का यथायोग्य समाधान कर रहे थे। प्रचण्ड के प्रसंग के निमित्त से नवयुवकों में भी श्रद्धा का विशेष संचार हुआ था।

कापालिक उस घटना के दूसरे दिन ही आचार्यदेव के दर्शन करने आया। मुनिराज धर्मप्रियजी ने उसका परिचय गुरुदेव से करवाया। गुरुदेव की शान्त-मुद्रा से वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसके बाद प्रायः वह दर्शन करने के लिये आ जाया करता था, परन्तु जब कोई नहीं होता, तभी वह आता। गुरु का सान्निध्य पवित्र भावों का स्रोत है। उसे गुरु के सान्निध्य में यह प्रतीत हुआ कि मैंने अज्ञान के कारण पाप का रास्ता पकड़ा, जिससे मैंने बहुत पाप किये हैं। अन्तरंग हृदय से पाप पाप-स्वरूप लगता है, तब मनुष्य को अपने किये हुए पापों का पश्चात्ताप होता है और पश्चात्ताप ही पाप से विरत होने के मार्ग पर लगाता है। अब प्रचण्ड को भी पाप पाप-रूप में लगे। अतः पूर्वकृत पापों का उसके हृदय में पश्चात्ताप जागा। एक दिन उसने गुरुदेव से पूछ लिया- "हे मेरे प्रभु के प्रभो! आपकी वाणी से मैं समझा हूँ कि मैंने बहुत पाप किये हैं। मैं क्या इन पापों का विनाश कर सकता हूँ?"

"हाँ!" -आचार्य महाराज ने संक्षेप में फरमाया- "संयम और तप कर्म-क्षय का ही मार्ग है। इस मार्ग से करोड़ों भवों के संचित पाप विनष्ट हो जाते हैं।"

"प्रभो! मैं इस मार्ग को ग्रहण कर सकता हूँ?"

"हाँ, देवानुप्रिय!"

"यह मार्ग गुरु से ही ग्रहण करना पड़ता है?"

"हाँ भाई! गुरु बिना ज्ञान नहीं।"

"तो, प्रभो! मैं क्या मेरे प्रभु धम्मा का शिष्य बन सकता हूँ?"

"हाँ, बन सकते हो"- गुरुदेव ने इस बात की और पुष्टि करते हुए फरमाया- "और तुम्हें उन्हीं का शिष्य बनना चाहिये, क्योंकि वे ही तुम्हारे उपकारी हैं। अतः कृतज्ञतापूर्वक उनकी चरणोपासना तुम्हारे आत्म-विकास में प्रबल कारण बन सकती है।" यह सुनकर उसे परम संतोष हुआ, क्योंकि उसे धर्मप्रियजी के प्रति अत्यधिक राग था। वह धर्मप्रियजी मुनिराज के पास पहुँचा और गुरुदेव से हुई बात को कहकर उनसे निवेदन करने लगा- "ओ

मेरे प्यारे भगवन्! आप मुझ पापी को शिष्य रूप में अवश्य स्वीकार कर लेना। मैं युवावस्था में आपका अंगरक्षक था। बाद में आपसे दूर हो गया और इस संसार-कानन में भटक गया। अब इस वय में इस भव-वन से आप मेरा उद्धार करो। आपकी सेवा करते हुए यहाँ से महाप्रयाण करूँगा तो ही मुझे शान्ति प्राप्त होगी।''

मुनिराज धर्मप्रियजी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा- ''देवानुप्रिय! इस मार्ग को समझो और अपनी शक्ति को तौलो। फिर इस मार्ग पर चलने के लिए उद्यत होना।'' यह बात सुनकर वह हँसा।

पश्चात् वह सविनय बोला- ''देव! मेरे धर्म-कर्म, मेरी समझ और मेरी शक्ति सब कुछ आप ही हो। भगवन्! फिर भी मैं सोचता हूँ कि जो मुझमें पाप करने की शक्ति है तो क्या आप प्रभु की कृपा से उसका नाश करने की शक्ति नहीं आ सकेगी? मैं जल्दी ही आपके श्रीचरणों में आने वाला हूँ।'' संयोग से उस दिन भी अरुण वहीं बैठा था। उसने यह दृश्य देखा। उसके हृदय पर इसका अमिट प्रभाव पड़ा।

उस दिन अरुण जब घर पहुँचा, तब सागरचन्द्र अकेले बैठे हुए थे। वे गादी पर तकिये के सहारे विश्राम की मुद्रा में बैठे थे। अरुण ने झाँककर पिता की ओर देखा। तब सागरचन्द्र का ध्यान उसकी ओर गया। उन्होंने सहज ही पूछ लिया- ''अरुण! क्या बात है?'' वह अपने तात के सन्मुख जाकर बैठ गया। आज बहुत दिनों में उसे पिता से बात करने का अवसर मिला था। यों तो वह रोज पिता को प्रणाम करने जाता था। परन्तु वह समय प्रातः का रहता था। अतः सभी अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहते थे। इसीलिये उस समय कोई भी बात करना नहीं चाहता था। आज सागरचन्द्र का मन भी उससे बात करने का हो रहा था। अतः उन्होंने पूछा- ''अरुण! तुम बोल नहीं रहे हो। क्या किसी से कुछ विवाद हो गया है?''

वह बोला- ''तात! किसी से भी विवाद नहीं हुआ। मैं एक बात सोच रहा था।'' सागरचन्द्र ने तब हँसते हुए कहा- ''आजकल तुम बहुत सोचने लग गये हो।'' वह पिता की बात का आशय नहीं समझा। अतः अपनी ही धुन में बोला- ''तात! तीर्थंकर भगवान के पास सिंह भी शान्त हो जाता है?'' ''हाँ, अरुण तीर्थंकर भगवान परम शान्त होते हैं। उनके आस-पास शान्ति के झरने-झरते रहते हैं। अतः क्रूर-से-क्रूर जीव भी उनके समीप आकर शान्त हो जाते हैं।''

''आज मैंने ऐसा ही दृश्य देखा, तात!''-नगरश्रेष्ठी जिज्ञासा से उसकी ओर देखने लगे- वह कह रहा था-''आपने प्रचण्ड का नाम तो सुना ही है। वह कितना भयंकर मनुष्य है? हमें तो उसका नाम सुनकर ही डर लगता है। हम जब रोते तब हमें कहा जाता- देख, वह प्रचण्ड बाबा आया। उस समय हम उसका नाम सुनते ही बकरी जैसे बनकर भय से चुप

हो जाते। आज वही प्रचण्ड स्थानक में आया था। वह गुरुदेव के सामने बिल्कुल शान्त बैठा था और मैं भी निर्भय होकर बैठा था। जैसे भगवान के समवसरण में सिंह और बकरी बैठते हैं, बिल्कुल वैसे ही हम बैठे थे।''

सागरचन्द्र उसकी बात सुनकर मुस्कराये। वे बोले- ''अरुण आजकल तू बहुत समझदार हो गया है। कभी-कभी तो तू विद्वानों जैसी बातें करता है।''

''तात! मैं यह तो नहीं जानता कि मैं कैसी बातें करता हूँ? पर जीजी भी ऐसा ही कहती है। तात! सच कहता हूँ कि मैंने देखा वह भयंकर प्रचण्ड गुरुदेव के सामने बकरी जैसा बन गया।''

''वत्स! मुनिराज ने प्रचण्ड को शान्त बनाकर, इस जनपद पर ही नहीं, परन्तु समीप के समस्त जनपदों पर भी बहुत बड़ा उपकार किया है।'' यह बात सुनकर अरुण खिल गया। उसने आचार्यश्री और मुनि धर्मप्रियजी से हुई प्रचण्ड की बात का पूरा वर्णन सागरचन्द्र को सुना दिया। सागरचन्द्र उसकी बातें सुनकर, आश्चर्यचकित रह गये और मौन ही बैठे रहे। अरुण को यह अच्छा नहीं लगा। अतः वह बोला- ''तात! आप किस विचार में पड़ गये?''

सागरचन्द्र विचार-तन्द्रा से जागे और बोले- ''वत्स! तुम ठीक कह रहे हो! मैं गहरे विचार में खो गया था। हमने आचार्यदेव और मुनि धर्मप्रियजी की महिमा बहुत सुनी थी, पर वे सुनी-सुनाई बातें ही थीं। अब हमें इन महापुरुषों की महत्ता का साक्षात् अनुभव हो रहा है। अरुण! सचमुच में गुरुजी पारसमणि के सदृश हैं जिनके चरण-स्पर्श से लोहे- से जीव सुवर्ण हो रहे हैं, परन्तु हमारे ये युवक तो नींद में ही सो रहे हैं।'' उनका स्पष्ट संकेत अपने बड़े पुत्रों की ओर था। अरुण बोला- ''तात! अब तो बहुत से लोग छोटे गुरु महाराज के पास आते हैं। हाँ, भ्राताओं को वहाँ आते कभी नहीं देखा।''

अरुण ने यह बात अपने भाइयों से कह दी। अब वे भी नवयुवकों में सम्मिलित हो गये। नरादित्य और गुरुदत्त तो उस दल में प्रमुख ही बन गये थे। आज नवयुवकों के उस दल में उनके साथ अरुण के भाई भी बैठे थे। चर्चा में प्रसंगवशात् नरादित्य ने पूछा- ''भन्ते! हम क्या जैन नहीं हैं?''

''आज तुम्हारे मन में यह प्रश्न क्यों उठा?''

''यह प्रश्न तो हमारे हृदय में उसी दिन उठ गया था, जब गुरुदेव ने प्रचण्ड के प्रसंग को श्रवण करने के बाद लघु प्रवचन फरमाया था।''

''गुरुदेव का संकेत श्रद्धा की शिथिलता की ओर था। क्या तुमने देव, गुरु और धर्म के स्वरूप को समझा है?''

''नहीं समझा, पर उनके प्रति श्रद्धा तो है।''

"बस, जैनधर्म में और अन्य धर्मों में यही अन्तर है। अन्य धर्म मात्र श्रद्धा करने की बात करते हैं। परन्तु जैन धर्म अपने आराध्य, उपास्य और आराधना के स्वरूप को समझकर उन पर श्रद्धा करने की बात कहता है। क्या तुमने आराध्य रूप में अरिहन्त को, उपास्य रूप में निर्ग्रंथ गुरु को और धर्म के रूप में जिन प्रज्ञप्त तत्त्व को माना है?"

"ऐसी प्रतिज्ञा तो की है- गुरुदत्त बोला- "पर बस प्रतिज्ञा करके ही रह गये। आगे कुछ समझे नहीं।"

"देवानुप्रिय! जब तक व्यक्ति स्वयं समझकर, निर्णय नहीं लेता है, तब तक उसकी श्रद्धा सही और दृढ़ नहीं हो सकती। यह समझ ही श्रद्धा की दृढ़ता का कारण है।"

नरादित्य बोला- "श्रद्धा तो हमारी कहीं-न-कहीं होती ही है।"

"आयुष्मन्! श्रद्धा-विहीन तो जीव हो नहीं सकता। क्योंकि श्रद्धा जीव का गुण है, परन्तु प्रत्येक जीव की श्रद्धा सम्यक् नहीं होती और मिथ्या श्रद्धा से जीव की मिथ्या परिणति होती है। इसीलिए ज्ञानियों ने सम्यक् श्रद्धा पर जोर दिया है"- बात को स्पष्ट करते हुए मुनि धर्मप्रियजी कहने लगे-"सम्यक् श्रद्धा अर्थात् आवरण, विकार और विघ्न से रहित अनन्तता-अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तसुख और अनन्तवीर्य में रममाण निर्विकार आत्मा ही आराध्य है, उस आराध्य को लक्ष्य बनाकर, उसकी उपलब्धि के लिये समग्रभाव से रत आत्मा ही उपास्य है और आराध्य के द्वारा निर्दिष्ट निर्विकारता का मार्ग ही स्वीकार्य है- ऐसा अचल निर्णय-विश्वास।"

"इसका आशय यह हुआ कि जीव के सिवाय ईश्वर या देव नाम का कोई अलग तत्त्व नहीं है"- गुरुदत्त ने कहा।

"हाँ, भद्र! निर्विकार चैतन्य ही अपने समग्र गुणों को प्रकट कर लेता है और वही चैतन्य परमात्मा है, जिन है, अरिहंत है। उन्हीं को कहना चाहो तो परमेश्वर और देव भी कह सकते हो। यथार्थ द्रष्टा साधक अपने आराध्य में अंश मात्र दोष को भी स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि दोष मात्र-आचरण, विघ्न और विकार से उत्पन्न होते हैं और इन तीन मलों से युक्त सत्ता- चाहे वह जीव हो- चाहे ईश्वर हो- अनन्त गुणों की स्वामी नहीं हो सकती। ऐसी वीतराग सत्ता न किसी पर रुष्ट होती है, न तुष्ट।"

"फिर ऐसे देव की आराधना क्यों करें?" -अरुण के अग्रज ने पूछा।

"आयुष्मन्! आराधना तो आराधक की क्रिया है। आराध्य को उससे क्या मतलब? वे आराधना से तुष्ट और विराधना से रुष्ट क्यों होवें? जो आराधना से प्रसन्न हो जाये तो वह आराध्य ही कैसा? आराध्य चापलूसी को पसन्द करे तो वह साधारण जीव जैसा ही है।"

"भन्ते! वे वीतराग हमें कुछ नहीं देते, तभी हमें अन्य देवों को मानना पड़ता है।"

"यह अच्छी तरह से समझ लो कि देव हो या कोई भी हो, अपने पुण्य नहीं हो तो कोई भी कुछ नहीं दे सकता है।"

"गुरुदेव! दुनिया का अनुभव तो इससे विपरीत ही है।"- अरुण का अग्रज बोला- "देवों को सुगंधित धूप लगाया, नैवेद्य चढ़ाया- इतनी क्रिया मात्र से कई लोगों की आशा फल जाती है। हमारे त्यागी संतों का आश्रय सुखकर नहीं होता, परन्तु घृणित विद्यावाले- जिनमें तप-त्याग का कुछ भी तेज नहीं है- के आशीर्वाद मात्र से लोगों को सन्तति, वैभव आदि इष्ट पदार्थ की प्राप्ति हो जाती है और भूत-प्रेतादि की बाधा टल जाती है।"

"वहाँ पर भी लोगों की श्रद्धा ही फलती है- पुण्यबल हो तो। सभी को इच्छित पदार्थ प्राप्त नहीं होते। कई बेचारे जीवनभर देवों के द्वार पर भटकते रहते हैं। रही प्रेत बाधा की बात। जिसका मनोबल दृढ़ होता है, उसे भूत-प्रेत की बाधा होती ही नहीं है और कदाचित् पूर्व-वैरादि के कारण उसे ऊपरी बाधा होती है। जब तक उस (भूतादि) की वैर की निवृत्ति नहीं होती, तब तक वह बाधा बनी ही रहती है। मंत्रादि का भी कोई विशेष प्रभाव नहीं होता। प्रत्युत गृहस्थ मंत्रादि के नाम पर ठगाता रहता है। आराधना में ही- मुनित्व या जैनत्व में ही- जिसका मन सतत लगा रहता है, उसकी भूत, प्रेत या देव कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं, बल्कि वे उसे नमस्कार करते हैं- यही उस दिन गुरुदेव का संकेत था।"

"अपनी साधना में कितना बल होता है?"- गुरुदत्त ने पूछा।

"वस्तुतः बल तो अपनी साधना का ही होता है। धूप, दीप, नैवेद्यादि कौन करता है?" "भक्त ही तो!" "जो भक्त नहीं होते हैं, उन पर देव प्रसन्न होते हैं कि नहीं।" "नहीं", होते हैं "तो इष्ट फल की प्राप्ति किसका फल हुआ?" "भक्ति का ही।" "तो फिर सोचो देव ने क्या दिया?" "कुछ नहीं।" नरादित्य ने समीकरण करते हुए कहा- "जब हमारी आराधना ही फलती है, तब हम किसी की भी आराधना करें, उसमें क्या अन्तर पड़ता है? फिर निर्दोष आराध्य का ही आग्रह क्यों?"

"आयुष्मन्! सदोष आराध्य को आराध्य मानने से उसके प्रसन्न होने की भावना बनती ही है, जिससे आराधना निर्दोष रह ही नहीं सकती और सदोष आराधना सही फल प्रदान कर ही नहीं सकती है। कारण के अनुरूप ही कार्य होते हैं। आराध्य निर्दोष तो आराधना निर्दोष और आराधना निर्दोष तो फल भी निर्दोष होगा।"

जब इस प्रकार ज्ञान के प्रसंग उपस्थित होते, तब अरुण भी कहीं न कहीं से वहाँ आ जाता था। आज भी अरुण वहीं था। नवयुवक लोग तो कुछ देर बाद मुनिवरों को वंदना करके चले गये। पर अरुण के मन में इस चर्चा से कई प्रभाव हुए। यद्यपि सब बातें तो वह नहीं समझ सका, फिर भी जितना वह ग्रहण कर सका उतना उसने अपनी बुद्धि में भली-

भाँति संजो लिया और उस पर उसका चिन्तन-मनन प्रारम्भ हो गया। एक-दो दिन बाद आचार्यदेव से वह सविनय बोला- "गुरुदेव! मुझे जैन बना दो।"

"तुम अभी क्या समझोगे?"- आचार्यश्री ने उसकी मति की गहराई जानना चाही।

"गुरुदेव! छोटे गुरुदेव तो यों फरमा रहे थे कि गर्भ के मास सहित आठ वर्ष वाला मनुष्य साधु बन सकता है। मैं तो लगभग दस वर्ष का हूँ। फिर मैं जैन क्यों नहीं बन सकता?"

उसकी आँखों के भावों को पढ़कर, आचार्यदेव किंचित् मुस्कराए। फिर उसके मन का समाधान करते हुए- "अच्छा, वत्स! बन सकते हो।"

"तो फिर कृपा करके, मुझे जैन बना दीजिये न!"

"तुम जैन नहीं हो क्या?"- फिर गुरुदेव ने परीक्षा की।

"हूँ तो! परन्तु आपने एक दिन फरमाया था कि जैन कुल में जन्म लिया है, इसलिये हम जैन हैं- गुण से नहीं। अभी तक मैंने धर्म को स्वीकार नहीं किया है। अब आप प्रतिज्ञा करवा देंगे तो कुल से जैन होने के साथ संकल्प से भी जैन बन जाऊँगा और फिर कुछ समझूँगा तो गुण से भी जैन बन जाऊँगा।" (क्रमशः)

Secrete of Fitness

Compiled by - Dr. Dileep Dhing

I (Akshya Kumar, an actor) don't eat after 6.30 – 7 p.m. in the evening. I am a Punjabi and love sweets, but after my evening meal, I don't touch sweets. Your body gets used to it. It's also written in our *Shastras* that we should not be eating at night. And there is a scientific reason for it. We need 3-4 hours to digest what we eat. So, if we eat late at night, all your body parts go to sleep, except your stomach, that needs to keep working to digest the food that you have eaten. While your body gets rest, your poor stomach does not get as much rest as when you get up, you again need to eat. And we all know that all our problems start from our stomach. You need to ideally eat by 7 p.m., so that you have given the body four hours to digest so that the stomach gets complete time to rest along with the body when you sleep. Even if you can't exercise, walk everyday and eat by 7 p.m. and see how it changes your life.

-The Times of India, 25th Nov. 2014

स्वास्थ्य-आलेख

रात्रिभोजन और स्वास्थ्य

डॉ. के.एल. पोकरना

स्वस्थ रहने के मौलिक सूत्रों में चार सूत्र महत्त्वपूर्ण हैं-1. हितभुक्- हितकारी सात्त्विक भोजन करना, वही खाना खाओ जो हितकारी है। 2. मितभुक्- भूख से कम खाना, सीमित भोजन करना। 3. ऋतुभुक्- ऋतु के अनुसार भोजन करना। 4. दिवाभुक्- दिन में भोजन करना, रात में भोजन नहीं करना।

रात्रिभोजन-त्याग सम्बन्धी तथ्य

1. सूर्यास्त के पश्चात् दूसरे दिन सूर्योदय तक चार प्रहर की रात्रि मानी जाती है। इन चार प्रहर में किया गया भोजन अर्थात् सूर्यास्त के बाद सूर्य उदय होने की अवधि में किया गया भोजन रात्रिभोजन कहलाता है। रात्रिभोजन-त्याग रखने से 24 घंटों में से लगभग 12 घंटों तक भोजन का त्याग होता है, जिससे भोजन संबंधी नियमितता का पालन होता है, जो स्वास्थ्य के लिए उपयोगी व हितकारी है।
2. रात्रिभोजन-त्याग के लिये सर्वोत्तम समय बताया गया है कि सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व ही भोजन कर लेना चाहिये तथा सूर्योदय के 48 मिनट बाद ही खान-पान करना चाहिए। सूर्यास्त के पश्चात् किसी प्रकार का भोजन नहीं लेना चाहिए।
3. रात्रिभोजन के त्याग का उद्देश्य है कि न केवल रात्रि में ही भोजन का त्याग करना चाहिये, अपितु दिन में भी जहाँ आलोक (प्रकाश) का भलीभांति प्रसार न होता हो तो ऐसे अंधकार वाले स्थान में भी भोजन नहीं करना चाहिये और साथ ही सांयकाल के समय, जब सूर्य का प्रकाश मंद पड़ जाता है, भोजन का त्याग करना चाहिये। कहा भी है-

   दिवस्याष्टमे भागे, मन्दीभूते दिवाकरे।
   नक्तंतु तद्विजानीयान्न नक्तं निशि भोजनम्।।

   अर्थात् रात्रि में भोजन करना ही रात्रिभोजन नहीं है, वरन् दिन के आठवें भाग में, सूर्य का प्रकाश मन्द हो जाने पर भोजन करना भी रात्रिभोजन की गणना में सम्मिलित है, क्योंकि रात्रिभोजन संबंधी दोष उस समय भी होते हैं।

*** आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 11 एवं 12 अक्टूबर 2014 को कोटा में आयोजित 'रात्रिभोजन : समस्याएँ और समाधान' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रस्तुत एवं संवर्धित आलेख।**

4. रात्रि में भोजन बनाना, रात्रि में बना भोजन करना आदि का त्याग करना चाहिये। रात्रिभोजन-त्याग छठे व्रत के रूप में शास्त्रों में वर्णित है और प्रत्येक श्रावक को व्रत-रक्षा के लिये रात्रिभोजन त्याग करना चाहिए।
5. जैन न्याय के 'रत्नाकरावतारिका' ग्रंथ में कहा है- 'जैनेन रात्रिभोजनं न भजनीयं' जिनेश्वर देव के अनुयायी को रात्रिभोजन नहीं करना चाहिये।

रात्रिभोजन का त्याग धार्मिक- आध्यात्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक व स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से हितकारी है। यहाँ पर रात्रिभोजन-त्याग की विवेचना स्वास्थ्य दृष्टिकोण से प्रस्तुत की जा रही है।

रात्रिभोजन-त्याग व स्वास्थ्य

(अ) सूर्य का प्रकाश व पाचन

1. प्रायः कहा जाता है कि जब भूख लगे तब भोजन करना चाहिये, किन्तु यह एक प्रकार की गलत आदत है, कुसमय भोजन करने से भूख शान्त होगी, परन्तु स्वास्थ्य को हानि पहुँचायेगी, अतः अपनी भूख की आदत के समय को परिवर्तित करना तथा स्वास्थ्य को सुरक्षित रखना अपने वश की बात है। सूर्य का प्रकाश हमारे आरोग्य को नवजीवन प्रदान करता है। हमें अच्छा स्वास्थ्य देता है। आयुर्वेद का अभिमत है कि शरीर में दो कमल होते हैं- हृदयकमल और नाभिकमल सूर्यास्त हो जाने पर ये दोनों कमल संकुचित हो जाते हैं। रात्रिभोजन रोगोत्पादक है। अतः रात्रिभोजन नहीं करना चाहिये। आचार्य माघव मुनिजी ने पद्य रचना द्वारा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है-

   लिखा चरक में रात्रि को, हृदय कमल सकुचाय।
   अतः रात्रिभोजन करने में, अजीर्णांश बढ़ जाय।
   सहे जासे नर कठिनाई, तजो निशि भोजन दुःख दाई।।

   वास्तव में रात्रिभोजन दुःखदायी है। यह अनेक रोगों को पैदा करने वाला है तथा पाचन क्रिया की दृष्टि से भी हानिप्रद है।
2. सभी प्राणियों के शरीर के विकास के लिये सूर्य की किरणें बहुत महत्त्वपूर्ण व उपयोगी होती हैं। सूर्य की किरणों से जो तत्त्व फैलते हैं, वे पाचन क्रिया को सक्रिय बनाने में सहायक होते हैं, क्योंकि भोजन पचाने वाला केन्द्र सूर्य की ऊर्जा से सक्रिय होता है, जिससे भोजन आसानी से पच जाता है। सूर्यास्त के बाद सूर्य ऊर्जा के अभाव में तेजस केन्द्र की पाचन शक्ति मंद पड़ जाती है।
3. उदर (पेट) व आंतों में पाचन सूर्य के प्रकाश में सुगमता से हो जाता है। सूर्यास्त के पश्चात् पाचन शक्ति दिन की अपेक्षा रात में मंद पड़ जाती है। अतः रात में भोजन

करने से पेट व आंतों संबंधी व्याधियाँ होना संभव है- यथा कब्ज, अपच, अम्लता (acidity) गैस की समस्या आदि।

(ब) आहार कब करना चाहिये ?

1. शरीर की पाचन शक्ति भी प्रभात के समय बलवती होती है। तीसरे प्रहर वह कम हो जाती है तथा सूर्यास्त होने पर उसमें और भी कमी आ जाती है। इससे प्रमाणित होता है कि हमें अपना आहार दिन के प्रथम भाग में ले लेना चाहिये। दिन के बाद के भाग में भोजन के लिये कुछ अंश शेष रखना चाहिये और सूर्यास्त के बाद किसी प्रकार का भोजन नहीं लेना चाहिये।
2. Healing by water के लेखक श्री टी.हार्टली हेनसी A.R.C.A. का कथन है कि मानव देह पर सूर्य की रश्मियों का प्रभाव अद्भुत होता है। अतः सूर्यास्त के पूर्व भोजन कर लेना हितकर है और बाद में आराम करना अच्छा है। जहाँ सूर्य का प्रवेश है, वहाँ डॉक्टर, वैद्यों का आगमन नहीं हो सकता।
3. रसायन शास्त्र, शरीर विज्ञान तथा हाईजीन के भूतपूर्व प्रोफेसर एलबर्ट बेलोज एम.डी. ने The philosophy of Eating में लिखा है कि श्रम करने वाले व्यक्ति को अच्छा और पोषक गरिष्ठ भोजन दो-तीन बार और वह भी सूर्योदय के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पहले ले लेना चाहिए। शाम को सारे दिन के परिश्रम के कारण व्यक्ति श्रांत हो जाता है। उस समय भोजन पेट में जाकर गड़बड़ी पैदा करता है। अतः आरोग्य व पूरी तरह नींद की सुरक्षा तथा स्फूर्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए भोजन दिन में ही करना चाहिए।
4. डॉ. लैफ्टेनेन्ट कर्नल ने Tuberculosis and the Sun Treatment पुस्तक में सन स्कूल के विवरण के साथ लिखा है कि सन संस्था शाम के समय छः बजे भोजन कर लेती है। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त अनुकूल है। सूर्यास्त के बाद का भोजन प्रतिकूल है।
5. डॉ. एस.पेरेट एम.डी. ने 'स्वास्थ्य और जीवन' नामक पुस्तक में एक हृदय रोगी की कहानी का वर्णन करते हुए लिखा है कि इस रोगी को रात्रिभोजन के कारण बहुत बेचैनी थी। हृदय में पीड़ा होती थी। उसके आहार के समय में परिवर्तन करने से स्वास्थ्य में सन्तोषजनक सुधार हुआ। उसने सूर्यास्त के उपरांत भोजन करना छोड़ दिया, फलतः हृदय आदि ठीक काम करने लगे। दोपहर को कम खाने वाला और रात को ठूंस-ठूंसकर खाने वाला हृदय वेदना का शिकार बन जाता है।
6. डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र ने लिखा है कि भारत में पेट के रोगों के लिए अनुपयुक्त भोजन उसमें भी सूर्यास्त के बाद का भोजन उत्तरदायी है। अधिकतर रोग रात्रिभोजन तथा

अनियमित खान-पान से होते हैं।

(स) अयोग्य-तामसिक आहार अनेक स्वास्थ्य विकारों का मूल है। सात्त्विक व पौष्टिक आहार लेना जितना आवश्यक है, उतना ही नियत समय पर भोजन लेना। हर घंटे केसर वाला दूध या घी मिला दूध पीने से व्यक्ति पहलवान नहीं बन सकता। इसके लिये भोजन संबंधी नियमों का पालन आवश्यक है, रात्रिभोजन का त्याग आहार का एक नियम है।

(द) रात्रि में भोजन करने से पेट भारी-भारी हो जाता है, चाहे हम कम खायें, चाहे केवल एक गिलास दूध पीयें, पेट के भारी होने से बेचैनी होती है। इसे दूर करने, पचाने के लिये मनुष्य को अकारण चूर्ण, दवा आदि का सेवन करना पड़ता है। अतः पाचन तंत्र को सही रखने के लिये रात्रिभोजन का त्याग आवश्यक है। शाम का भोजन सूर्य अस्त होने के 48 मिनट पहले कर लेना चाहिये तथा शाम के भोजन के पश्चात् 4 घंटे बाद सोना चाहिये जिससे भोजन का आसानी से पाचन हो जाता है तथा गहरी नींद आती है, जो स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

(य) रात्रि में भोजन पकाने व खाने के कारण भोजन जनित Allergy, food poisoning, Gastro Enteritis आदि रोग हो जाते हैं। जब रात्रि में सामूहिक भोज पकाने व खाने का कार्य धार्मिक-सामाजिक आयोजनों के लिए होता है तब बहुत अधिक संख्या में दस्त व उल्टी, पेटदर्द (आंत्रशोथ) के रोगियों की संख्या बढ़ जाती है। संक्रामक रोग चिकित्सालय जयपुर में रात्रि में धार्मिक-सामाजिक आयोजन के समय होने वाले सामूहिक भोज के कारण ये रोगी अधिक संख्या में आते हैं। यह सामूहिक रात्रिभोजन का ही कारण होता है। अतः रात्रिभोजन का पूर्ण रूपेण त्याग करना आवश्यक है, क्योंकि रात्रिभोजन से स्वास्थ्य बिगड़ता है, अजीर्ण होता है, प्रमाद व आलस्य बढ़ता है, प्रातः उठने का मन नहीं होता है, विविध रोग होते हैं।

(र) दशवैकालिकसूत्र में भगवान का कथन है-"**संति मे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा, जाइराओ अपासंतो कहमेसणियं चरे।**"

संसार में बहुत से त्रस और स्थावर प्राणी अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। वे रात्रि अंधकार में देखे नहीं जा सकते। Where there is a darkness there are germs, even in artificial powerful light, insects start flying all over the space and they can fall in the food also. कोई भी कृत्रिम प्रकाश सूर्य प्रकाश के समान नहीं हो सकता है। रात्रिभोजन में हमारे स्वास्थ्य को तो हानि पहुँचती ही है साथ ही हम जीव हिंसा के निमित्त बनते हैं। इसलिए भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है-"**राइभोयणविरओ, जीवो भवइ अणासवो।**" रात्रि भोजन-सम्बन्धी त्याग से जीव रात्रिभोजन के पाप से

अनास्रव हो जाता है।

(ल) रात्रिभोजन के विरुद्ध जैनाचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. ने रात्रिभोजन त्यागने हेतु अनमोल पद्यों द्वारा प्रभावी प्रेरणा दी है। पूज्य आचार्य रत्नचन्द्र जी म.सा. ने कहा है कि जब चिड़ी, कबूतर, तोता आदि पक्षी भी रात में चुगने के लिए बाहर नहीं आते, तब तू नर देह धारण कर रात में क्यों खाता है? क्योंकि इसमें त्रस प्राणी मारे जाते हैं और कीट-पतंगें आ-आकर तुम्हारे भांडे में पड़ते हैं।

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरि जी के अनुसार-

"सूरज साक्षी से करे, खानपान ईशान।
जयंत सेन विमलमना, स्वास्थ्य सुरक्षित जान।।"

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने रात्रिभोजन-त्याग हेतु प्रेरणादायक प्रवचनों के माध्यम से अभियान चलाया है, आपके प्रवचन का प्रेरक कथन है- "शरीर व्याधि मंदिर है, उन व्याधियों से व्यथित बनना है तो रात्रिभोजन करिए, नहीं बनना है तो रात्रिभोजन त्याग कीजिए।" आज के वैज्ञानिकों ने ही नहीं, विदेशी कवियों ने भी रात्रिभोजन के त्याग का अनुमोदन किया है। इटली के एक कवि की कविता का सारांश यह है कि- "पाँच बजे उठना और नौ बजे भोजन करना, पाँच बजे भोजन करना और नौ बजे सो जाना।" इस जीवन क्रम से व्यक्ति 99 वर्ष तक जीवित रह सकता है। अतः सूर्य की प्रथम किरण के साथ रसोईघर के द्वार खोलें एवं अन्तिम किरण के साथ बंद करें। रात्रिभोजन-त्याग से हमारे सर्वहित सधेंगे, हम स्वस्थ रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. आहार शुद्धि- संपादक मुनिश्री जयानंदविजयजी, रात्रिभोजन अभक्ष्य, रात्रिभोजन त्याग क्यों? सायं का भोजन कब करना चाहिए, प्रकाशक- श्री गुरु रामचन्द्र प्रकाशन समिति, भीनमाल, पृ. 84-85
2. आहार-संयम और रात्रिभोजन-त्याग- प्रवचनकार-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., तृतीय संस्करण 2006, प्रकाशक- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, पृ. 8,10,39,44,60
3. जैनतत्त्व प्रकाश- लेखकः पू. अमोलकऋषिजी महाराज, 19 वीं आवृत्ति, जनवरी-फरवरी-2005, प्रकाशक- श्री अमोल जैन ज्ञानालय, धुले (महा.), पृ. 455
4. निर्ग्रंथ प्रवचन- संग्राहक और अनुवादक श्री जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पं. मुनिश्री चौथमलजी म.सा., प्रकाशक- श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशन समिति, रतलाम, वि.सं.2001, पृ. 288
5. रात्रिभोजन महापाप- शाश्वत धर्म हिन्दी मासिक अक्टूबर-2006, मानद सम्पादक श्री भंवरलाल कटारिया, मेन्स एवेन्यू, वाय मिलन, प्रथम मंजिल, शिवानंद मार्केट, डी.के. लेन, चिकपेट, बैंगलोर, पृ. 26

- बी-174, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

गीत

चातुर्मास कोटा में हुआ

श्री हुकमचन्द चण्डालिया

(परम श्रद्धेय श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के कोटा चातुर्मास के समापन के प्रसंग पर प्रस्तुत भावाभिव्यक्ति।-**सम्पादक**)

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी का, अभिनन्दन हम करते हैं,
चातुर्मास कोटा में हुआ, अब विदा आपको करते हैं।

चातुर्मास दो हजार चौदह का हमको किस्मत से मिला,
कोटा के जन-जन का सोया, अन्तर्मन ज्यूं कमल खिला,
लोगों में उत्साह है भारी, धर्म-ध्यान सब करते हैं।।1।।

आचार्य का चातुर्मास तो, पुण्यशालियों को मिलता,
आगमवाणी के श्रवण से, सबका रोम-रोम खिलता,
बालक, वृद्ध, युवाजन, महिला, आपके दर्शन करते हैं।।2।।

अध्यव्यसायी श्री महेन्द्रमुनिजी ने, लाभ बताया पाटे का,
सुनकर श्रावक पाट बिराजो, सौदा नहीं यह घाटे का,
सेवाभावी नन्दीषेणजी, संग आपके आये हैं।।3।।

मुनि योगेशजी और मुनि मनीषजी, आगम का वर्णन करते हैं।
गुरुवर की सेवा के खातिर, मुनि देवेन्द्रजी आये हैं,
मुनि आशीषजी गुरुवर की, सेवा तन-मन से करते हैं।।4।।

मासक्षपण तप नौ हो गये, नौ की लड़ियाँ यहाँ लगी,
जप-तप करने वालों के मन, तप करने की लगन लगी,
सौ के लगभग आठ और नौ की तपस्याएँ कहती हैं।।5।।

तेले, बेले हुए अनगिनत, सामूहिक एकासन भी,
दीक्षा, जन्म और पुण्यतिथि, मनी कई महापुरुषों की,
बाहर से आकर साधकजन, साधना यहाँ करते हैं।।6।।

भक्तामर का हुआ विवेचन, दशवैकालिक सूत्र सुना,
महावीराष्टक की गाथा का, विश्लेषण भी खूब हुआ,
आगमशास्त्र से जिनवाणी मय, नित व्याख्यान ये करते हैं।।7।।

चातुर्मास तो बीत गया, जाने कब बातों ही बातों में,
धर्म-ध्यान, जप-तप जो हुआ, वो लिख गया अपने खातों में,
शीलव्रत धारी जोड़ों का भी अभिनन्दन करते हैं।।8।।

धन्य भाग कोटा श्रीसंघ के, जन-जन धन्य हुआ भारी,
चार महीनें प्रवचन सुनने, आते थे नर-नारी,
श्रावकजन और हुकमचन्द भी, क्षमायाचना करते हैं।।9।।

-162, दादाबाड़ी विस्तार, कोटा (राज.)

कर देता जीवन उजियारा

श्री अखिल जैन

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर में होनहार छात्रों के आवास, आहार एवं अध्ययन की समुचित व्यवस्था है तथा विद्यालयीय एवं महाविद्यालयीय शिक्षण की भी सुविधा उपलब्ध है। संस्कारों के साथ शिक्षा का राजस्थान की राजधानी में यह केन्द्र लोकोपकार एवं जीवन-निर्माण का कार्य कर रहा है। संस्थान में अध्ययनरत छात्र अखिल जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत की है।**-सम्पादक**

साधना भवन है नाम तुम्हारा,
कर देता जीवन उजियारा।
यहाँ पर रहना मिल-जुल करके,
है यह संस्कारों की शाला।।1।।

संस्थान है एक बहार,
मिलता है सबको प्यार।
होता आत्मा का कल्याण,
यही है जीवन का आधार।।2।।

संस्थान है एक खजाना,
यहाँ है धर्म का दवाखाना।
यहाँ पर जीवन महकता है,
जीवन को यहाँ महकाना।।3।।

संस्थान में माँ का प्यार,
यही है सब घर-बार।
संस्थान जैसा कोई और नहीं,
यहाँ है गुरु का द्वार।।4।।

कल्पतरु है सिद्धान्तशाला,
यहाँ है मोक्ष उजाला।
जीवन को यहाँ धन्य बनाओ,
'अखिल' का जीवन बदल डाला।।5।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

उद्बोधन

विकास का स्वर्णिमकाल है विद्यार्थी-जीवन

एक साध्वी

विद्यार्थी-जीवन जीवन का वह स्वर्णिम काल है जब उमंगों, आकांक्षाओं से भरपूर मानवीय व्यक्तित्व कुछ-न-कुछ ग्रहण करने को लालायित रहता है। नई कल्पनाएँ अँकुराती हैं, नई आशाएँ कोंपलों की भाँति उग आती हैं, नई उपलब्धियों की कलियाँ फूल बनकर खिलखिलाती हैं। दिवास्वप्नों में डूबे किन्तु शक्ति व संभावनाओं से भरपूर इस छात्र-जीवन पर अभिभावकों का ही नहीं, पूरे परिवार एवं समाज का ध्यान केन्द्रित रहता है। सीखने, कुछ जानने, कुछ बनने का सतत सार्थक प्रयास इसी समय में होता है।

प्रत्येक छात्र को यह विचार करना चाहिए कि वह एक ऐसी अवधि से होकर गुज़र रहा है, जो उसके भाग्य और भविष्य निर्माण करने की निर्णायक भूमिका अदा करेगी। इन दिनों श्रेष्ठ विचार, सद्भावनाओं व सत्प्रवृत्तियों का अभ्यास किया जाता रहे तो उसका प्रभाव जीवन भर बना रहता है और सुख शांति की संभावनाएँ साकार होती हैं।

विद्यार्थीकाल में मित्रों का आकर्षण अपनी चरम सीमा पर रहता है। अच्छे साथी मिलें तो विकास एवं प्रसन्नता की वृद्धि में सहायता ही मिलती है। हर समझदार छात्र का कर्त्तव्य है कि मित्रता से पूर्व हजार बार सोचे। सच्चरित्र मित्रों, श्रेष्ठ पुस्तकों और महापुरुषों का ही संग करे। सद्विचारों की नोटबुक बनाए। जब भी कोई अच्छी बात पढ़े, सुने तो नोट करे। समय-समय पर दोहराए। आदर्श व्यक्तियों का, महापुरुषों का ध्यान व उनके चरित्र का चिंतन-मनन करे।

युवावस्था जीवन का वसंत काल है। ऊर्जा, शक्ति, उत्साह और उमंग से भरपूर यह जीवन बचपन और वयस्कावस्था की संधि वेला होता है। इस आयु में यदि जीवन-निर्माण का सही मार्गदर्शन मिल जाए तो जीवन के उपवन में अनेक उपलब्धियों के पुष्प खिलते चले जाते हैं।

स्वास्थ्य-संरक्षण के लिए भी यह समय सबसे अधिक उपयुक्त है। प्राकृतिक नियमों, आहार-विहार, सोने-जागने आदि का यदि ठीक ध्यान रखा जाए तो तंदुरुस्ती ऐसी बन जाएगी जो जीवन भर साथ दे सकती है।

अधिकतर अकुशल छात्र ही अनुशासनहीन हुआ करते हैं। पढ़ने-लिखने में उनका मन नहीं लगता। अच्छे विद्यार्थी के लक्षणों से रहित होने के कारण गुरुजनों के प्रति उनकी श्रद्धा नहीं होती। वे श्रेणी, श्रेय अथवा सराहना के योग्य नहीं होते। वे आगामी जीवन के

उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ रहते हैं। उनके जीवन का कोई विशेष लक्ष्य नहीं होता। इसी प्रकार की मानसिक शून्यताओं से जन्मी हीनभावना को दबाने के लिए अकुशल एवं अयोग्य छात्र अनुशासनहीनता को शान समझते हैं। जिन विद्यार्थियों के लक्षण पढ़ने के होते हैं, वे बेकार की खुराफातों में नहीं पड़ते।

आत्मनिर्भरता, दूसरों की सहायता, धर्म का सदुपयोग, समय का सुनियोजन एवं सदुपयोग, मानसिक संतुलन, सत्साहित्य का स्वाध्याय, कठिन परिश्रम, दृढ़ संकल्प, स्वच्छता, सुव्यवस्था, सुसंगति, सकारात्मक विचार, स्वस्थ जीवन, शालीनता, सज्जनता, हँसमुख, शिष्ट व विनम्र व्यवहार युवावस्था को अलंकृत करने वाले सद्गुण हैं। विद्या का सम्यक् अभ्यास नवयुवक यदि करने लगें तो उनके भीतर ऐसी विशेषताएँ आती चली जाएँगी, जिनके द्वारा उनका भविष्य स्वर्णिम और शानदार बन जाएगा।

-आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी द्वारा श्री जैन रत्न जवाहरलाल बाफना उ.प्रा. कन्या पाठशाला, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.) में प्रदान प्रवचन का आशुलेखन एवं संकलन-श्री किशोर जाखड़-प्रधानाध्यापक द्वारा किया गया।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनिजी

मैं हूँ कर्मों से भिन्न

मैं कर्मों का कर्त्ता हूँ,
मैं कर्मों का भोक्ता हूँ,
यह सत्य है इसके साथ
यह भी विचारें कि
मैं कर्मों से भिन्न हूँ,
आत्मगुणों से अभिन्न हूँ,
इस सोच के आते ही
जीव नहीं होगा फिर खिन्न,
इसी सोच से किया है
साधकों ने कर्मों को छिन्न,
और हुए हैं वे आत्मिक गुणों से अभिन्न,
हो गए हैं वे सदा काल के लिए
स्व से स्व में प्रसन्न।

शुद्ध चैतन्य

द्रव्य और गुण तो कभी नहीं बदलाय,
मात्र पर्याय में ही होती है
प्रति समय नवीन-नवीन आय।
तू शुद्ध चैतन्य द्रव्य का ही कर ध्यान,
मत लगा और कहीं आँख और कान,
तू भी बन जाएगा परमात्म समान।

समभाव

कोई कैसा भी सुनाये चुप रह,
वापस कुछ मत कह, समभाव से सह।

वर्धमान समान

बनना चाहते हो वर्धमान समान,
तो सम समझो सम्मान व अपमान।

-संकलित

बाल-स्तम्भ

आटे के मुर्गे की बलि

डॉ. पवनकुमार जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 फरवरी 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

जीव जो क्रिया करता है उसका नाम कर्म है- 'क्रियते इति कर्म'। जैन दर्शन के अनुसार संसारी जीव जब राग-द्वेष युक्त मन, वचन, काया से जो भी क्रिया करता है उससे उसके आत्म-प्रदेश में एक विशेष प्रकार का स्पंदन होता है, उत्तेजन होता है, जिससे लोक में रहे हुए कार्मण-वर्गणा के पुद्गल उसकी आत्मा से चिपक जाते हैं, इन्हें कर्म कहा जाता है। ये आत्मा की अनन्त शक्ति को आच्छादित कर लेते हैं।

जिस प्रकार पृथ्वी के गर्भ में अनन्त खनिज सम्पदा भरी हुई है, लेकिन उसे प्राप्त करने के लिए बहुत प्रयास करना होता है। इसी प्रकार आत्मा में अनन्त शक्ति रही हुई है, लेकिन वह अनेक प्रकार के आवरणों से मलिन बनी हुई है, इन्हीं आवरणों को कर्म कहा जाता है। यदि मुख्य रूप से कर्म-बंध के कारणों पर विचार किया जाय तो उत्तराध्ययन सूत्र (32.7) में भगवान् महावीर स्वामी ने फरमाया है- **"रागो य दोसो वि य कम्मबीयं"** अर्थात् राग और द्वेष ही कर्म के बीज हैं। जैसे अनुकूल वायु आदि प्राप्त होने पर बीज पल्लवित होता रहता है एवं इनकी शृंखला बढ़ती जाती है, इसी प्रकार राग और द्वेष के बीज कर्मों का अनन्त विस्तार करते रहते हैं। कर्मों के कारण ही जीव सुख-दुःख का भागी होता है।

संसार में इतना दुःख और वैषम्य क्यों है? कई चिन्तकों ने दुःखों, विषमताओं और विचित्रताओं का कारण बाह्य जगत् में ढूंढा और इनके निवारण के लिए विभिन्न अनुष्ठानों का निरूपण किया। लेकिन जैन दार्शनिकों ने इन दुःखों और विचित्रताओं का कारण बाहर

नहीं ढूंढ कर आन्तरिक जगत् में ढूंढा और इसके लिए व्यक्ति के कर्म को ही इसका उत्तरदायी माना। अतः जैन दार्शनिकों ने कर्म सिद्धान्त का विस्तार से विवेचन किया।

सामान्यतया करना कर्म से संबंधित है और होना प्रकृति से संबंधित है, हम जो कुछ भी करते हैं उसका हमारी चेतना पर प्रभाव पड़ता है। प्राकृतिक नियम है कि सूर्य का ताप सभी प्राणियों पर समानरूप से पड़ता है, लेकिन उस ताप से सुख-दुःख अनुभव करना, उसके प्रति क्रिया-प्रतिक्रिया करना जीव के कर्म का परिणाम है। इससे यह सिद्ध होता है कि यदि जीव में प्रतिक्रिया का भाव नहीं उठता है, वह समता भाव में स्थित रह जाता है तो कर्मबंध नहीं होता है। अतः कर्म करना या नहीं करना यह कर्त्ता की इच्छा पर निर्भर है। लेकिन उसका फल भोगना कर्त्ता के अधीन नहीं है। जैसे कि ज़हर खाने या न खाने में कर्त्ता स्वतंत्र है, लेकिन ज़हर खाने के बाद उसका असर न हो यह कर्त्ता के हाथ की बात नहीं है। अतः जो भी कार्य होता है या परिस्थिति का निर्माण होता है उसमें कर्त्ता का योगदान रहता है। इस संबंध में एक कथा यहाँ प्रस्तुत है, जिसमें बताया गया है कि जीव अपने द्वारा बांधे गये कर्मों का किस प्रकार फल भोगता है।

भरत क्षेत्र में यौधेय देश की राजपुर नामक राजधानी थी। वहाँ का राजा मारिदत्त था। एक बार राजा ने देवी को प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार के छोटे-बड़े प्राणियों को जोड़े सहित बलि देने के लिए एकत्रित किया। अब मात्र एक मनुष्ययुगल की आवश्यकता थी। राजकर्मचारियों ने ढूँढते-ढूँढते जैन साधु-साध्वी को पकड़ कर राजा के सामने उपस्थित किया। साक्षात् सामने मौत खड़ी थी, पर साधु-साध्वी के मुखमंडल पर चिंता, भय आदि की एक लकीर तक नहीं थी, वे समभाव में खड़े थे। यह देखकर राजा को आश्चर्य हुआ कि मौत सामने है, लेकिन इनको जरा भी भय नहीं है। ये कौन हैं? बलि देने से पहले इनका परिचय प्राप्त करना चाहिए। राजा के द्वारा उनका परिचय पूछने पर उन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया-

अवन्ति देश की उज्जयिनी नामक राजधानी थी। वहाँ का राजा यशोधर एवं रानी अमृतमती थी। राजा ने एक बार अपनी रानी को राजकर्मचारी के साथ रास लीला रचाते हुए देख लिया। इस झूठे संसार का यह तमाशा देख कर राजा का मन वैराग्य से रंजित हो गया और उन्होंने संन्यास लेने का निर्णय किया। इसके लिए वह राजमाता चन्द्रमती से आज्ञा लेने के लिए पहुँचा। माता ने पुत्र की मनःस्थिति देखी तो लगा कि इस पर कोई बाहरी हवा का प्रकोप हो गया, इसलिए यह ऐसी बातें कर रहा है। माता ने उसे कहा कि यदि तुम मेरी एक बात मानो तो मैं तुम्हें संन्यास की आज्ञा दे सकती हूँ। राजा ने पूछा, क्या? तो माता ने कहा कि तुम्हें देवी के सामने पशु की बलि देनी होगी (माता ने विचार किया कि शायद बलि देने

के बाद देवी की कृपा से इसकी मति सुधर जाए और यह संन्यास न ले)। राजा ने इसका विरोध किया तो माता ने कहा- कम से कम आटे का मुर्गा बनाकर तो उसको देवी के सामने चढ़ा दो। राजा ऐसा करके अपने पुत्र यशोमति को राज्य देकर संन्यास लेने को तत्पर हुआ।

इधर सारा वृत्तांत रानी को मालूम हुआ तो उसने सोचा कि राजा को मेरे कुकृत्यों का पता चल गया है, अतः राजा को मार देना चाहिए। इस निमित्त से उसने राजा का बहुत अनुनय किया और कहा कि कम से कम एक बार मेरे महल में भोजन करने पधारें, उसके बाद आप संन्यास ले लेना। राजा और राजमाता महल में आये तो रानी ने जिस आटे के मुर्गे की बलि दी थी, उसमें विष मिलाकर दोनों को प्रसाद के रूप में खिला दिया। इससे दोनों की मृत्यु हो गई।

राजा और राजमाता द्वारा संकल्पपूर्वक भाव हिंसा से आटे के मुर्गे की बलि दी और दिलवाई उसके निमित्त से अशुभ कर्मों का बंध करके तिर्यंच गति को प्राप्त हुए और लगातार छह भव तक तिर्यंच गति में दुःख भोगे। उसके बाद कुछ पुण्यवानी का उदय आया तो पुनः राजा (यशोधर का जीव) और राजमाता (चन्द्रमती का जीव) अपने पुत्र और पौत्र यशोमति के यहाँ कुसुमावलि रानी की कुक्षि से भाई-बहिन के रूप में उत्पन्न हुए। बाल्यकाल में ही सुदत्त अनगार का संयोग मिला उनसे अपने पूर्व भवों को जाना तो वैराग्य उत्पन्न हो गया और बचपन में ही संयम ग्रहण कर लिया।

हे मारिदत्त राजन्! हम दोनों ही राजा यशोमति के पुत्र एवं पुत्री हैं। हे राजन्! हमने संकल्प पूर्वक आटे के मुर्गे की बलि दी, जिसके कारण हमें इतना दुःख भोगना पड़ रहा है। संसार के अशाश्वत बंधनों में बंधना पड़ा है। तुम तो साक्षात् जीवों की संकल्पपूर्वक हिंसा कर रहे हो तो तुमको कितना दुःख भोगना पड़ेगा विचार करिए। किए हुए कर्मों का फल भोगे बिना जीव की मुक्ति नहीं है। आगे तुम्हारी इच्छा, तुम जो भी करना चाहो बलि के लिए हम तैयार हैं। मारिदत्त राजा ने यह सारा वृत्तांत सुना तो उसकी आँखें खुल गई और उसने उनके चरणों में गिर कर माफी मांगी और सभी जीवों को अभयदान दे दिया।

यह तो मात्र एक उदाहरण है। कथा साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जायेंगे जहाँ जीव ने अपने कृत कर्मों का फल भोग कर ही मुक्ति प्राप्ति की, या करेंगे। अतः यह सिद्धांत अटल है कि जीव को अपने किए हुए शुभ-अशुभ कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। अतः कहा है कि-

जो ना देखे स्वयं को वही बांधता बंध।
जिसने देखा स्वयं को काट लिए दुःख द्वन्द्व।।

प्रश्नः-

1. कर्म के बीज क्या हैं?
2. कर्म करना और भोगना किनके अधीन हैं?
3. मारिदत्त के विचारों में परिवर्तन कैसे हुआ?
4. भाव हिंसा से क्या तात्पर्य है?
5. राजा यशोधर की मृत्यु कैसे हुई?
6. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

-6 यू.जी., आदेश्वर टावर, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ [नवम्बर-2014] का परिणाम

जिनवाणी के नवम्बर-2014 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'त्याग करो रात्रिभोजन का, जैनों की पहचान है' रचना के प्रश्नों के उत्तर 20 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	प्रखर गांधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	25.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	कविश जैन-चौथ का बरवाड़ा (राज.)	25
तृतीय पुरस्कार- 200/-	प्रियदर्शना जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	24.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	पूर्वांशी जैन-जोधपुर (राज.)	24
	आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.)	23
	पीयूष कुमार जैन-जयपुर (राज.)	22
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	22
	प्रणत धींग-चेन्नई (तमिलनाडु)	21.5

न लगाएँ जीवन में बट्टा

संकलित

1. F&O का धन्धा मत करना आप, नहीं तो करना पड़ेगा पश्चात्ताप।
2. NCDEX में बड़े-बड़े करोड़पति भी आ गए रोड़ पर,
   सुख पाएगा इस धंधे को छोड़कर।
3. जुआं में युधिष्ठिर ने सब कुछ गंवाया,
   पत्नी व राज्य को भी दाँव पर लगाया।
4. राजा नल की खराब हो गई जुएँ में मति,
   छोड़ गया बिलखती दमयंती सती।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

धम्मकहाणुओगो (भाग 1 एवं 2)- संकलनकर्ता एवं सम्पादक- उपाध्यायप्रवर श्री कन्हैयालालजी महाराज, ***सह-सम्पादक***- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी महाराज 'वागीश', ***प्रकाशक***- आगम अनुयोग ट्रस्ट, स्थानकवासी जैन संघ, स्थानकवासी सोसायटी, नारायणपुरा क्रोसिंग, अहमदाबाद-380013, फोनः 079-27551426, ***पृष्ठ***-1472+55+160, ***मूल्य***-500+500 रुपये, सन्-2013

"सूत्रस्यार्थेन सहानुकूलं योजनमनुयोगः" अर्थ के साथ सूत्र की अनुकूल योजना अनुयोग कहलाती है। आगमों में यत्र-तत्र बिखरी हुई सामग्री में से अर्थ या विषय के अनुरूप सूत्रों का संकलन कर अनुयोग चतुष्क निर्मित किए गए हैं। आगमों में वर्णित कथाओं को एकत्र कर धर्मकथानुयोग का संयोजन किया गया है। यह अनुयोग दो भागों एवं स्कन्धों में निबद्ध है। प्रथम श्रुतस्कन्ध में तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आदि के चरित्र कथानक; द्वितीय श्रुतस्कन्ध में महाबल, चित्तसम्भूति, थावच्चापुत्र, नमिराजर्षि मृगापुत्र, उदायनराज आदि श्रमणों के जीवन एवं साधना के कथानक; तृतीय स्कन्ध में नौ श्रमणियों एवं सुभद्रा, जयन्ती आदि श्रमणोपासिकाओं के कथानक; चतुर्थ स्कन्ध में सोमिल ब्राह्मण, नंदमणियार, आनन्द आदि दश उपासकों के कथानक; पंचम स्कन्ध में सप्त निह्नवों का वर्णन तथा षष्ठ स्कन्ध में प्रकीर्णक-कथाएँ एवं ज्ञातासूत्र की कथाएँ वर्णित हैं। प्रस्तुत संस्करण में पूर्व संस्करण में छूटे हुए पाठों को सम्मिलित किया गया है। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी शास्त्री की शताधिक पृष्ठों में विस्तृत एवं महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना प्रकाशित है। अन्त में परिशिष्ट भी दिए गए हैं। यह ग्रन्थ उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी महाराज 'कमल' की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में पुनः प्रकाशित हुआ है। उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी 'वागीश' का इस कार्य में भूयान् श्रम रहा है।

प्रथम सोपान : जैन दर्शन की ओर- संचेती आसूलाल एवं भण्डारी माणकमल, ***अनुवादक***- डॉ. ललिता संचेती, ***प्रकाशक***- चन्द्रप्रकाश संचेती, बी-80, शास्त्रीनगर, जोधपुर (राज.), फोनः 0291-2618266, 098290241666, ***पृष्ठ***-168+32 चित्रों से युक्त, ***मूल्य***-600/-रुपये अंकित है, किन्तु 100/-रुपये में उपलब्ध है। सन् 2014

प्रस्तुत पुस्तक "First steps to Jainism" का हिन्दी अनुवाद है, जिसके लेखक प्रबुद्ध विचारशील श्रावक श्री आसूलाल संचेती एवं श्री माणकमल भण्डारी थे। पाठकों द्वारा पसन्द की गई, इसलिए श्री संचेतीजी के सुपुत्रों ने अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करवाया। जैन दर्शन के सम्बन्ध में जिज्ञासा रखने वाले प्रारम्भिक पाठकों के लिए यह प्रथम स्तरीय एवं रुचि जागृत करने वाली पुस्तक है। पुस्तक में विषय को सरलता और आधुनिक उद्धरणों के साथ जोड़कर समझाने का प्रयास किया गया है। इसमें लोक, सप्त तत्त्व, त्रिरत्न, पंच-परमेष्ठी, कर्म-सिद्धान्त, अनेकान्तवाद, पंचसमवाय आदि विषयों पर दस अध्यायों के अन्तर्गत लेखन हुआ है। अन्त में 32 चित्रों का एक सुन्दर संकलन भी योजित किया गया है, जिसमें जैसलमेर, रणकपुर, बैल्लूर, श्रवणबेलगोला, माउण्ट आबू, गुजरात आदि के जैन मन्दिर, उनके शिल्प तथा भगवान् महावीर का जन्म, 14 स्वप्न, कल्पसूत्र की कलाकृतियाँ आदि रंगीन चित्र भी सम्मिलित हैं।

विनय बोधि कण (भाग- 5,6,7 एवं 13)- विनयमुनिजी म.सा., ***प्रकाशक***- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, जैन स्थानक भवन (शांति गुरु गार्डन के पास) लोअर बाजार, ऊटी (तमिलनाडू) उदगमंडलम्-643001, ***प्राप्ति स्थान***- श्री उत्तमचन्द जी चोरड़िया, बैंगलोर-080-25510040, श्री रिखबचन्द जी चोरडिया, चेन्नई-044-26415299, ***पृष्ठ***- 308+26, ***मूल्य***- सदुपयोग, सन् 2014

दक्षिण भारत में सम्पन्न ऊटी (सन् 2002), शांतिनगर-बैंगलोर (सन् 2003), मैसूर (सन् 2004) एवं शिवाजीनगर-बैंगलोर (सन् 2010) के चातुर्मासों में तपस्वीराज के सुशिष्य श्री विनयमुनिजी म.सा. 'खींचन' के प्रवचनों से संकलित 'बोधि कणों' का संयोजन इस ग्रन्थ में प्रस्तुत है। कतिपय शीर्षक इस प्रकार हैं- सफलता के सात सूत्र, नीति के अनमोल बोल, आगम के अनमोल मोती, पच्चीस क्रिया, आगमिक प्रश्नोत्तर, गुणस्थान गणित, धर्म का दुश्मन द्वेष, नव तत्त्व विवेचना आदि। पुस्तक के अन्त में पाठकों के विचार भी उद्धृत हैं।

समीक्षार्थ प्राप्त पुस्तकें

1. **आगम का संक्षिप्त ज्ञान व महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य (भाग 1)- संग्राहक व सम्पादक-** जेठमल गुलेचा, **प्राप्ति स्थान-** 269, सरदारपुरा चौथी बी रोड़, जोधपुर (राज.), मो0 093513-15749, **पृष्ठ-**164, **मूल्य-** स्वाध्याय, सन् 2014
2. **गीतों की गुणमाला-** पुखराज मुनिजी, **प्रकाशक-** श्री स्थानक जैन संघ, 11, अल्पना सोसायटी, अल्कापुरी गोधरा रोड़, हालोल-389350 (गुजरात), **पृष्ठ-**36, **मूल्य-**उल्लेख नहीं, सन्- 2014

समाचार विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(31 दिसम्बर, 2014)

- **जिनशासन-गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 4** का बजरिया से सूरवाल की ओर विहार हुआ है,आगे गंगापुर पधारने की संभावना है। **सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3** चौथ का बरवाड़ा से विहार कर जयपुर की ओर पधार रहे हैं।
- **परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पंडितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5** सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं। जोधपुर में विचरण सम्भावित है।
- **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5** जयपुर के महावीर नगर स्थानक विराज रहे हैं। कुछ सन्तों के साथ गंगापुर की ओर विहार की सम्भावना है।
- **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.आदि ठाणा 15** सिद्धान्तशाला पावटा, जोधपुर में विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 11** घोड़ों का चौक विराज रहे हैं।
- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5** बजरिया, सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं।
- **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** शिवदासपुरा से आगे ढाणी में विराज रहे हैं। गंगापुर की ओर विहार चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 3** अजमेर से भिनाय पधारे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7** जयपुर से नसिया कॉलोनी गंगापुरसिटी पधारे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3** बजरिया, सवाईमाधोपुर विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9** राजस्थान उपासरा, ढोर बाजार के पास, अहमदाबाद विराज रहे हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 12** कोपल विराज रहे हैं, गदग

होते हुए हुबली की ओर विहार संभावित है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4** इलकल पधारे हैं। हुबली की ओर विहार संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5** गोका विराज रहे हैं। हुबली की ओर विहार सम्भावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4** मल्लपुरा-आगरा में विराज रहे हैं। आगरा में विचरण सम्भावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 5** नसिया कॉलोनी, गंगापुरसिटी पधारे हैं।

आचार्यप्रवर का अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर होते हुए गंगापुर की ओर विहार

आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्मदिवस हेतु सूरवाल संघ को स्वीकृति

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-स्वाध्याय, व्यसन-मुक्ति एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 का दो सिंघाडों में कोटा से विहार हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर के आगे सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा 3 का विहार अलीगढ़-रामपुरा की ओर हुआ। पूज्य आचार्यप्रवर एवं महान्अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 इन्द्रगढ़ से 1 दिसम्बर को जयनगर, 2 दिसम्बर को बाबई, 3 दिसम्बर को गलवानिया, 4 दिसम्बर को सोप, 5 दिसम्बर को सोलतपुरा होते हुए 6 दिसम्बर को अलीगढ़-रामपुरा पधारे। अलीगढ़-रामपुरा का समूचा संघ विहार-समय पर अगवानी हेतु सोलतपुरा तक पहुँचा। जय-जयकार के साथ पूज्य आचार्यप्रवर का अलीगढ़-रामपुरा पदार्पण हुआ। संघ की भक्ति, सेवाभावना एवं समर्पण भावना बेजोड़ है। यहाँ पर 18 दिसम्बर तक वीतराग वाणी का वर्षण हुआ। 11 दिसम्बर को मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी एवं मुमुक्षु श्री रविकुमारजी की शोभायात्रा उत्साह एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुई। शोभायात्रा में 10 स्थानों पर स्वागत हुआ। मुमुक्षु बंधुओं का अभिनन्दन करने के साथ वीर माता-पिता एवं सम्बन्धियों का भी उत्साहपूर्वक सम्मान एवं अभिनन्दन किया गया। चौथ का बरवाड़ा संघ प्रायः प्रतिदिन गुरुभगवन्त की सन्निधि में उपस्थित हुआ। सवाईमाधोपुर शहर, बजरिया, हाउसिंग बोर्ड, कुश्तला, खोह, खेरली, प्रतापनगर जयपुर एवं सूरवाल संघ पूज्य श्री की सन्निधि में विनति लेकर उपस्थित हुआ। यहाँ धर्माराधन की अच्छी लगन देखी गई। पौष बदि अष्टमी 14 दिसम्बर को 52 एकाशन व्रत की आराधना हेतु आह्वान

किया गया, किन्तु संघ की ऐसी भक्ति रही कि एकाशन की संख्या 139 पहुँच गयी। 17 दिसम्बर को पौष बदि दशमी पर पार्श्वनाथ जयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर निकटवर्ती अनेक ग्रामनगरों से श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ। अलीगढ़-रामपुरा संघ की आतिथ्य सेवा सराहनीय रही। यहाँ 10 दिन कोहरे का प्रभाव बना रहा।

18 दिसम्बर को दोपहर पश्चात् 2 बजे पूज्य आचार्यप्रवर का विहार गडवास की ओर हुआ। वहाँ से 19 दिसम्बर को चौथ का बरवाड़ा पदार्पण हुआ। यहाँ 22 दिसम्बर तक विराजे। 21 दिसम्बर को मुमुक्षु श्री ओमप्रकाशजी एवं मुमुक्षु श्री रवि जी की शोभायात्रा का सुन्दर आयोजन हुआ। इस अवसर पर लगभग 800 की उपस्थिति रही। 22 दिसम्बर को चौथ का बरवाड़ा से विहार कर एकड़ा, डेकवा होते हुए 24 दिसम्बर को कुश्तला पधारे। सेवाभावी श्री नन्दीषेणजी म.सा. आदि ठाणा 3 का विहार चौथ का बरवाड़ा से जयपुर की ओर हुआ। कुश्तला में पूज्य आचार्यप्रवर ने सूरवाल संघ की विनति पर पौष शुक्ला चतुर्दशी का पावन प्रसंग सूरवाल संघ के लिए स्वीकृत किया। यहाँ से गम्भीरा होते हुए 26 दिसम्बर को हाउसिंग बोर्ड पदार्पण हुआ। 27 दिसम्बर को दोपहर पश्चात् विहार कर सवाईमाधोपुर शहर पधारे एवं 28 को प्रवचन फरमा कर दोपहर पश्चात् आलनपुर पदार्पण हुआ। यहाँ 29 दिसम्बर को दोपहर पश्चात् महावीर नगर मण्डी पधारे, जहाँ मुमुक्षु बहिन खुशबू जी बागरेचा दर्शनार्थ उपस्थित हुई। 30 दिसम्बर को अपराह्न में आपका बजरिया पदार्पण हुआ।

यहाँ से पूज्य आचार्यप्रवर का विहार सूरवाल की ओर सम्भावित है, जहाँ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. का जन्मदिवस तप-त्यागपूर्वक मनाकर गंगापुर की ओर विहार संभावित है।

उपाध्यायप्रवर का पावटा पदार्पण एवं महासती मण्डल का जोधपुर में विचरण

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9, व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10, सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 का विहार जोधपुर के उपनगरों में चल रहा है। पूज्य उपाध्यायप्रवर 1 दिसम्बर को जालमविलास से विहार कर पावटा सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे। 2 दिसम्बर को मौन एकादशी की आराधना की गई। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर जीवन जीने के अनमोल सूत्र परोस रहे हैं तथा श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. दशवैकालिक सूत्र को आधार बनाकर प्रवचन फरमा रहे

हैं। 17 दिसम्बर को पार्श्वनाथ जन्म-कल्याणक दिवस एकासन, तप एवं संवर-साधना के साथ मनाया गया। 18 से 22 दिसम्बर तक श्राविका मण्डल के द्वारा धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया। 25 से 27 दिसम्बर तक स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायियों का प्रतिक्रमण विषयक शिविर आयोजित हुआ तथा 28 दिसम्बर को कार्यशाला आयोजित की गई। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. मौन एकादशी के दिन से मौन व्रत की साधना कर रहे हैं।

साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. पावटा स्थित सिद्धान्तशाला पधारे हैं। सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा सिद्धान्तशाला विराज कर उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविका जी की सेवा का लाभ ले रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. पावटा से विहार कर घोड़ों का चौक, प्रतापनगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, सुभाषनगर, गुलाबनगर, शास्त्रीनगर, नेहरूपार्क होते हुए 31 दिसम्बर को घोड़ों का चौक स्थानक पधारे हैं। यहाँ से पावटा पधारने की संभावना है।

तत्त्वचिन्तक मुनिश्री का जयपुर के उपनगरों में विचरण

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में मालवीय नगर की मौजी कॉलोनी में 7 से 14 दिसम्बर 2014 तक पूर्व ध्यान-साधकों का ध्यान शिविर आयोजित हुआ। फिर तत्त्वचिन्तक मुनिश्री मानसरोवर के महावीर भवन एवं पोरवाल भवन विराजे। वहाँ से सांगानेर एवं प्रतापनगर क्षेत्र फरसते हुए बुद्धसिंहपुरा पधारे। यहाँ सुबोध कॉलेज के प्रांगण में 20 से 30 दिसम्बर तक वीतराग ध्यान-साधना शिविर आयोजित हुआ। जिसमें 165 साधकों ने ध्यान-साधना की।

ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र प्रतियोगिता हेतु विशेष निर्देश

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में ''आओ स्वाध्याय करें'' शीर्षक के अन्तर्गत **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र विषयक** ''द्विमासिक आगम-प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता'' की दूसरी कड़ी के प्रश्न दिसम्बर 2014 के अंक में प्रकाशित हुए हैं। इसके आवश्यक नियम इस प्रकार हैं:-

1. प्रस्तुत प्रतियोगिता में एक अकेला व्यक्ति अथवा पाँच व्यक्तियों का समूह, जो सामूहिक सामायिक करता हो भी उत्तर प्रेषित कर सकता है।
2. उत्तर भेजने वालों को अपनी उम्र का उल्लेख अवश्य करना है और ग्रुप में भेजने वालों को ग्रुप का नाम एवं प्रत्येक सदस्य की उम्र लिखना अनिवार्य है।
3. प्रस्तुत प्रतियोगिता में प्रश्न 'श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन 11 से 19 एवं द्वितीय श्रुतस्कंध के आधार पर दिये गये हैं।
4. प्रश्न क्रमांक 1 से 10 तक के उत्तर अन्त्याक्षरी क्रम में दिए जायेंगे। प्रथम प्रश्न के उत्तर के

अंतिम अक्षर से दूसरे प्रश्न का उत्तर प्रारम्भ होगा, इसमें मात्रा की कोई प्रधानता नहीं है।

5. उत्तर-पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 10 फरवरी, 2015 है।

नोट- अक्टूबर-2014 में आयोजित प्रतियोगिता का परिणाम फरवरी-2015 के अंक में प्रकाशित होगा।

उत्तर भेजने का स्थान- श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर-342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141-40373

प्रश्न-समाधान हेतु सम्पर्क-सूत्र- श्री राजीव जी नाहर, सूरत-093751-65765

विशेष- समाधान Whatsapp पर श्री राजीव जी नाहर से प्राप्त किया जा सकता है।

'बनें आगम अध्येता' (4)
नन्दीसूत्र प्रतियोगिता में भाग लें

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु प्रारम्भ 'बनें आगम अध्येता' अनुष्ठान के अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, अन्तगडदसा सूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। इसमें श्रावक-श्राविका वर्ग भाग ले सकता है। स्वाध्याय हेतु साधु-साध्वी भी भाग ले सकते हैं। अब चतुर्थ आगम परीक्षा के रूप में पाँच ज्ञान के परिचायक आगम 'नन्दीसूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। इसके लिए आवश्यक जानकारी इस प्रकार हैः-

1. सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तक नन्दीसूत्र व मूल्यांकन प्रश्न-पत्र को मंगवाकर उसे घर पर हल करके भिजवाने की अन्तिम तिथि 31 जनवरी 2015 रखी गई है।

2. नन्दीसूत्र की समापक परीक्षा 12 अप्रेल, 2015 को आपके स्थानीय स्थानकों में परीक्षकों की उपस्थिति में होगी जो कि 90 अंकों की होगी तथा इस परीक्षा में आप नन्दीसूत्र की पुस्तक भी साथ में रख सकते हैं।

3. मूल्यांकन उत्तरपुस्तिका को जाँचकर उसमें प्राप्त अंकों को 10 प्रतिशत करके उन अंकों को समापक परीक्षा में प्राप्त अंकों में जोड़कर परीक्षार्थी के कुल प्राप्तांक होंगे और कुल प्राप्तांक के आधार पर प्रथम तीन श्रावक-श्राविकाओं को **नन्दीसूत्र आगम अध्येता** की उपाधि से अलंकृत करने के साथ प्रथम विजेता को रुपये 31000/-, द्वितीय को 21000/- तथा तृतीय को रुपये 11000/- से पुरस्कृत किया जाएगा। परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया जायेगा।

आप सभी श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि आगमज्ञान अभिवर्धन की इस परीक्षा में भाग लें। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हल करके भिजवाने वाले ही परीक्षार्थी समापक परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। नन्दीसूत्र पुस्तक व मूल्यांकन प्रश्न-पत्र हेतु **सम्पर्क सूत्र-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2571163, फैक्स-0141-2570753, श्रीमती बीना मेहता, मंत्री-097727-93625, श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन-096943-79209

श्रमणसंघीय बृहद् साधु सम्मेलन 20 मार्च से इन्दौर में

आचार्य डॉ. शिवमुनिजी द्वारा 20 से 29 मार्च 2015 तक इन्दौर में बृहद् साधु सम्मेलन के आयोजन की घोषणा से साधु और श्रावकजनों में बहुत उत्साह है। इसमें 20 से 27 मार्च तक संत सम्मेलन एवं 28 से 29 मार्च को श्रावक सम्मेलन का आयोजन रखा गया है। सम्मेलन में संघीय ढांचे में परिवर्तन की सम्भावना है। समाज में और मजबूती लाने के लिए एकता और अखण्डता बनी रहे इस पर आवश्यक कार्य होंगे।

करुणा अन्तरराष्ट्रीय का 17 वां वार्षिक समारोह जोधपुर में सम्पन्न

करुणा अन्तरराष्ट्रीय, चेन्नई भारत देश की ऐसी सक्रिय संस्था है जो बालकों एवं युवापीढ़ी में बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के करुणा, दया, प्रेम, अहिंसा, शाकाहार आदि जीवन-मूल्यों को संरक्षित, पल्लवित एवं पुष्पित करती है। करुणा अन्तराष्ट्रीय का 17 वां वार्षिक समारोह 27-28 दिसम्बर 2014 को जोधपुर में आयोजित हुआ। उद्घाटन-सत्र में 27 दिसम्बर को करुणारत्न पद्मभूषण श्री डी.आर.मेहता ने मुख्यातिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हिंसा से उत्पन्न विषाक्त वातावरण में करुणा की महती आवश्यकता है। समय रहते इसका समाधान नहीं हुआ तो भविष्य और कठिन हो जाएगा। महावीर स्वामी, महात्मा गाँधी, गौतम बुद्ध के इस देश में ऐसा वातावरण बनना दुर्भाग्यपूर्ण है। इसरो के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी.एन.कल्ला, जोधपुर ने कहा कि करुणा एवं सेवा के कार्यों हेतु अभिमान को त्यागना होता है। श्री श्रवण दुगड़, चेन्नई ने करुणा, दया एवं अहिंसा पर प्रेरक वक्तव्य दिया तथा करुणा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

करुणा अन्तरराष्ट्रीय, जोधपुर केन्द्र के अध्यक्ष श्री मनोज डागा ने समागत अतिथियों का हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती एवं तमिल भाषा में स्वागत किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न केन्द्रों से लगभग 500 सदस्य उपस्थित हुए। करुणा अन्तरराष्ट्रीय के चेयरमेन श्री दुलीचन्द जैन ने बताया कि 1995 में प्रारम्भ हुई संस्था करुणा अन्तरराष्ट्रीय की देश के 12

प्रान्तों के लगभग 2150 विद्यालयों एवं 50 महाविद्यालयों में करुणा क्लब की शाखाएँ हैं तथा इसके प्रचार-प्रसार से लगभग 1,50000 छात्र-छात्राओं ने मांसाहार का त्याग किया है। पाँच लाख विद्यार्थियों ने चमड़े के जूतों का प्रयोग छोड़ दिया है। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मंजूजी सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पदमचन्दजी टाटिया ने किया।

द्वितीय सत्र में देश के विभिन्न केन्द्रों से आए पदाधिकारियों ने अपने केन्द्रों की प्रगति से अवगत करवाया।

28 दिसम्बर 2014 को आयोजित कार्यक्रम में न्यायाधिपति श्री संदीपजी मेहता की अध्यक्षता एवं न्यायाधिपति श्री गोपालकृष्ण जी व्यास के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस प्रातःकालीन सत्र में निम्नांकित करुणा अवार्ड प्रदान किए गए-

1. **आचार्य हस्ती करुणा रत्न अवार्ड (100000)** - डॉ. कल्याणमल गंगवाल, पुणे (महा.)
2. **आचार्य हस्ती करुणा इंस्टीट्यूशन अवार्ड (50000)**- मुस्लिम चैम्बर कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)
3. **आचार्य हस्ती विशिष्ट करुणा लेखक-वक्ता एवं प्रोपेगेटर अवार्ड (25000)**- प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन, जोधपुर (राज.)
4. **आचार्य हस्ती करुणा सेवा अवार्ड (25000)**- डॉ. भद्रेशकुमार जैन, चेन्नई
5. **आचार्य हस्ती विशिष्ट करुणा सेवा अवार्ड (25000)**- श्रीमती सुशीला बोहरा, जोधपुर (राज.)
6. **आचार्य हस्ती करुणा विद्यालय अवार्ड (25000)**- चिल्ड्रेन गार्डन हायर सैकेण्डरी स्कूल, जोधपुर (राज.)
7. **आचार्य हस्ती करुणा शिक्षक अवार्ड (25000)**- प्राचार्य श्रीमती महालक्ष्मी एवं श्रीमती सारदाम्बल, चेन्नई (तमिलनाडु)
8. **आचार्य हस्ती करुणा शिक्षक विशिष्ट अवार्ड (25000)**- श्री भूराराम चौधरी, सूरसागर, जोधपुर (राज.)
9. **आचार्य हस्ती करुणा लेखक अवार्ड (25000)**- डॉ. जयकुमार 'जलज' रतलाम (मध्यप्रदेश)
10. **आचार्य हस्ती करुणा स्पीकर अवार्ड (25000)**- बी. रामनाथन, चेन्नई (तमिलनाडु)

ये सभी सम्मान 'सुराणा एण्ड सुराणा इण्टरनेशनल अटार्नीज चेरिटेबल ट्रस्ट', चेन्नई

द्वारा प्रदान किए गए। उपर्युक्त सम्मान के पश्चात् द्वितीय सत्र में 12 करुणा क्लबों को पुरस्कृत किया गया तथा 37 छात्रों को दयावान अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्यातिथि सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एम.एल. कुमावत थे तथा अध्यक्षता पारस ब्लड बैंक के श्री सुखराज मेहता ने की। सम्मेलन में करुणा डायरी 'करुणोदय' का लोकार्पण किया गया। 27 दिसम्बर को करुणा, अहिंसा एवं दया के मूल्यों से युक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जोधपुर केन्द्र के इस आयोजन एवं करुणा कार्यक्रम की बाहर से समागत सदस्यों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संस्थान के छात्रों का स्नेह-मिलन समारोह 17-18 जनवरी को

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के छात्रों का स्नेह मिलन एवं वार्षिकोत्सव समारोह 17-18 जनवरी, 2015 को आयोजित किया जा रहा है। अब तक इस संस्थान से सैकड़ों विद्यार्थी आध्यात्मिक संस्कारों के साथ शैक्षणिक अध्ययन प्राप्त कर प्रशासनिक,राजकीय एवं व्यावसायिक क्षेत्र में संस्थान का नाम रोशन कर रहे हैं। वर्तमान में संस्थान में 41 विद्यार्थी विभिन्न कक्षाओं में अध्ययनरत हैं। सम्मान समारोह में प्रदान किये जाने वाले पुरस्कार हैंः- 1. संस्थान में सेवाएँ प्रदान करने वाले महानुभावों का सम्मान, 2. श्रेष्ठ विद्यार्थी अवार्ड, 3. श्रेष्ठ कक्ष अवार्ड, 4. आध्यात्मिक अवार्ड, 5. मैरिट अवार्ड। पधारने की पूर्व सूचना एवं कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः- 1. सुमन कोठारी, संयोजक-98292-52113, 2. डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा, व्यवस्थापक-93145-02203, 3. दिलीप जैन, प्राचार्य-94614-56489, आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015(राज.),फोन 0141-2710946, Email:-ahassansthan@gmail.com

-सुमन कोठारी, संयोजक

सहयोग कर जैन समाज को आगे बढ़ायें

सूचना क्रांति के इस दौर में किसी भी व्यक्ति एवं समाज के सर्वांगीण विकास के लिये आपसी सहयोग, समन्वय एवं सेवाभावना के साथ सही समय पर वांछित सूचना की उपलब्धता आवश्यक है। इस लक्ष्य से वर्धमान विश्व जैन महासंघ ट्रस्ट द्वारा 'समग्र साधु-साध्वी परिचय पुस्तिका' एवं 'विश्व जैन निर्देशिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। एतदर्थ सभी से सहयोग अपेक्षित है। **सम्पर्क सूत्रः-** इन्द्रा जैन, पो.बॉ.नं. 4, पिण्डवाड़ा, जिला-सिरोही-307022(राज.),मो.97995-02720,Email:-biographyindia@gmail.com

मॉंस निर्यात, गोहत्या एवं अवैध बूचड़खाने के विरुद्ध अभियान

दिल्ली- जैन महासभा दिल्ली एवं स्थानकवासी जैन महासंघ ने मांस निर्यात, गोहत्या एवं अवैध बूचड़खानों के विरुद्ध बृहद् अभियान शुरु किया है। प्रथम चरण में दिल्ली में हस्ताक्षर अभियान शुरु हो गया है। हजारों नागरिकों द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा वाणिज्य मंत्री एवं कृषि मंत्री को प्रस्तुत किया जायेगा।

दिल्ली के इस हस्ताक्षर अभियान में जैन समाज के सदस्यों के साथ-साथ जैनेतर समाज भी बढ़-चढ़ कर भाग ले रहा है। महासंघ ने निर्णय किया है कि यदि सरकार नागरिकों की भावनाओं की अनदेखी करके मांस-निर्यात नीति पर पुनः सकारात्मक विचार नहीं करती है तो सभी पशु-पक्षी प्रेमियों द्वारा मिलकर जन-आन्दोलन किया जाएगा।

-प्रो. रतन जैन, महासचिव

जोधपुर- श्री ओसवाल समाज, यू.आई.टी. क्षेत्र संस्था, जोधपुर की ओर से अहिंसा प्रधान भारतदेश को सम्पूर्ण मांस-निर्यात मुक्त एवं गो-वंश हत्या मुक्त राष्ट्र घोषित करवाने के लिये भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी को पोस्टकार्ड भेजने का अभियान प्रारम्भ किया है। जैनाचार्य श्रीमद् विजयदर्शनरत्नसूरीश्वर जी महाराज ने प्रथम पोस्टकार्ड लिखकर इस अभियान का विधिवत् श्री गणेश किया। समस्त संस्थाओं, ट्रस्टों, तीर्थ पेढ़ियों सहित अहिंसा प्रेमी सज्जनों से अनुरोध है कि वे भी अपने-अपने स्तर पर पोस्टकार्ड लिखकर भारत के प्रधानमंत्री को जरूर भिजावें, जिससे हमारा राष्ट्र मांस-निर्यात एवं गोवंश हत्या-मुक्त घोषित हो सके। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- संघवी मिट्ठूलाल डागा-094142-47785

स्कूलों में संस्कृत के साथ प्राकृत भाषा भी पढ़ाई जाय

भारत सरकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ संस्कृत, प्राकृत एवं पालि भाषा को भी भारतीय शिक्षा पद्धति का अंग बनाना चाहती है। मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी जी ने स्कूलों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य रूप से पढ़ाने का निर्णय इसी मानसिकता के तहत लिया है। भारतीय संस्कृति और मूल्यों को स्थापित करने के लिए संस्कृत पूरे भारत की भाषा रही है। संस्कृत के साथ-साथ लोकभाषा के रूप में प्रचलित प्राकृत भाषा में भी हजारों ग्रंथों का प्रणयन हुआ है। भारतीय जीवन मूल्य, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान की अद्वितीय संपदा इस साहित्य में है। अतः स्कूलों में संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाये तथा उसमें एक-एक अध्याय प्राकृत भाषा, व्याकरण और साहित्य के परिचय के रूप में अवश्य

पढ़ाया जाय। इससे विद्यार्थी भारतीय संस्कृति और विज्ञान के गौरवमय इतिहास से परिचित हो सकेंगे। प्राकृत भाषा को स्कूली पढ़ाई में शामिल करने के लिए प्रबुद्ध नागरिक मानव संसाधन मंत्री को ज्ञापन प्रेषित कर सकते हैं। *-डॉ. अनेकान्त जैन*

अन्तरराष्ट्रीय योग-दिवस घोषित

योग साधना का मानवीय जीवन में महत्त्व व लाभ देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासंघ ने 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया है।

-राजेन्द्र पितलीया

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. के सान्निध्य में 'आज की युवा पीढ़ी और धर्म' विषयक त्रिदिवसीय यूटर्न आवासीय शिविर 2 से 4 अक्टूबर 2014 को सम्पन्न हुआ। जिसमें लगभग 180 शिविरार्थियों ने भाग लिया। सुबह 7.30 से रात्रि 10 बजे तक निरन्तर युवाओं को धर्म से जोड़ने हेतु विभिन्न कार्यक्रम हुए- प्रवचन, श्री कमलेश जी चन्द्रा (मेमोरी गुरु) द्वारा मेमोरी बढ़ाने के अनेक गुर सिखाना, पंच समवाय की जीवन में उपयोगिता सम्बन्धी व्याख्यान, प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, ग्रुप डिस्कशन, ध्यान-साधना, डॉ. विनोद सुराणा द्वारा धर्म के साथ जुड़कर प्रोफेशनल कार्य कैसे किए जाएँ पर उद्‌बोधन, चार भावना, अपरिग्रह, अहिंसा-अनेकान्तवाद, मदिरापान क्यों न करें आदि विषयों पर वक्तव्य, NGO की विजिट, प्रमोदमुनि जी म.सा. का विशेष प्रवचन आदि। श्रीमती सुमन कोठारी के संयोजकत्व में शिविर का सफल आयोजन हुआ।

जयपुर- श्री कन्हैयालाल हीरावत चैरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर द्वारा 34 वां निःशुल्क नेत्र एवं शल्य चिकित्सा शिविर 17 जनवरी 2015 से जोगणिया माताजी, जिला चितौड़गढ़ में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें गुर्दे की पथरी, हर्निया, अपेन्डिसाइट्स, नाक, कान व गला एवं हड्डी के रोग; नेत्र चिकित्सा में मोतियाबिन्द, कालापानी आदि एवं स्त्री रोगों में बांझपन, बच्चेदानी व अण्डाशय की गांठ आदि सभी प्रकार के ऑपरेशन निःशुल्क किए जायेंगे। मरीजों की एक्सरे आदि जांच व भोजन व्यवस्था निःशुल्क होंगी।

जोधपुर- 2471 वें ओसवाल स्थापना दिवस पर ओसवाल महिमा पत्रिका की ओर से 'देश की आजादी में ओसवालों का योगदान' विषय पर अखिल भारतीय स्तर की लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसके परिणाम इस प्रकार हैं- **प्रथम-** श्री दिलीप कुमार गांधी-चितौड़गढ़, **द्वितीय-** भूरचंद जैन-बाड़मेर, **तृतीय-** श्रीमती सुषमा राकेश जी सिंघवी-जोधपुर, **चतुर्थ-** अमृतराज गोलया-जोधपुर तथा श्री **पंचम-** डॉ.

लक्ष्मीचन्द जैन, कसरावद (मध्यप्रदेश)। विजेता प्रतियोगियों को क्रमशः 1111, 999, 777, 555 एवं 333 रुपये के नकद पुरस्कार भेजे जा रहे हैं तथा पचास प्रतिशत अंक प्राप्त सभी प्रतियोगियों को एक वर्ष तक ओसवाल महिमा निःशुल्क भेजी जायेगी।

चेन्नई- मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग में महासती ताराबाई निधि व्याख्यान माला के अन्तर्गत 15 दिसम्बर 2014 को कैथोलिक ईसाई पादरी फादर रायप्पा ए. कासी का व्याख्यान हुआ। कासी ने कहा कि जैन जीवन-मूल्यों का पालन करके इक्कीसवीं सदी की समस्याओं और पारिस्थितिकी असन्तुलन से छुटकारा पाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ईसा मसीह स्वयं जैन धर्म से गहराई तक प्रभावित थे तथा वे पूर्ण शाकाहारी थे। कासी ने अनेक तथ्य देकर शाकाहार को सबके लिए उपयोगी बताया। संयोजन डॉ. प्रियदर्शना जैन ने किया। - *डॉ. दिलीप धींग*

जोधपुर- महावीर पाठशाला एवं संस्कार समिति, जोधपुर द्वारा जेलर पुस्तक पर आधारित खुली किताब परीक्षाओं का आयोजन हो रहा है। परीक्षार्थी अपने परीक्षा केन्द्र, दिनांक एवं समय आदि से संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये श्री अक्षय जैन से मोबाइल नं. 094797-05060 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

बैंगलुरु- कर्नाटक राज्य के समाज कल्याण मंत्री एच. आंजनेया ने अपनी बेटी का विवाह सादगी पूर्ण तरीके से करने का निर्णय लेकर समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया है। 19 नवम्बर को सामूहिक विवाह समारोह में 96 जोड़ों के साथ उनकी बेटी अनुपमा परिणय सूत्र में बंधी। विवाह-समारोह का पूरा खर्च मंत्री ने स्वयं ने किया। उन्होंने अपनी बेटी की शादी के लिए जो धन खर्च करने का लक्ष्य रखा था, वही धन 96 जोड़ों के विवाह में खर्च किया। विवाह में होने वाले व्यर्थ खर्च को रोकने के निर्णय में मंत्री की बेटी अनुपमा एवं दामाद शाश्वत का भी पूर्ण सहयोग रहा। आज समाज में चारों तरफ शानो-शौकत के प्रदर्शन की होड मची है, वहाँ ऐसा अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करना बहुत महत्त्वपूर्ण कदम है।

बधाई

जोधपुर- करुणा अन्तरराष्ट्रीय के 27-28 दिसम्बर 2014 को आयोजित 17 वें वार्षिक

समारोह में समाज सेविका **श्रीमती सुशीलाजी बोहरा** को आचार्य हस्ती विशिष्ट करुणा सेवा अवार्ड प्रदान किया गया। यह अवार्ड नेत्रहीन विकास संस्थान, बाल शोभा संस्थान, समग्र विकास संस्थान की स्थापना हेतु किये गए विशेष उपक्रम और उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए दिया गया है। इसी कार्यक्रम में जैन जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रधान

सम्पादक **प्रो. धर्मचन्द जैन** को उनके वक्तव्यों, सशक्त लेखनी एवं पत्रकारिता के द्वारा करुणा के पोषण हेतु आचार्य हस्ती विशिष्ट करुणा लेखक-वक्ता-प्रचारक अवार्ड प्रदान किया गया।

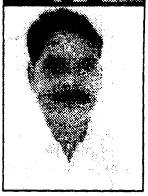

इन्दौर- श्री अरविन्द कुमार जैन (कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के प्रबन्धक) को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा ''मध्यप्रदेश के जैन संस्कृत अभिलेखों का अध्ययन'' विषय पर पी-एच्.डी. उपाधि प्रदान की गई है। उन्होंने यह कार्य डॉ. संगीता मेहता, प्राध्यापक-संस्कृत, अटलबिहारी बाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर के मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

इन्दौर- सुश्री पवन शुक्ला को ''जैन संस्कृत साहित्य में सांस्कृतिक प्रतीक'' विषय पर

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा पी-एच्.डी. की उपाधि प्रदान की गई। यह कार्य डॉ. हर्षदराय धोलकिया एवं डॉ. संगीता मेहता, प्राध्यापक-संस्कृत, अटलबिहारी बाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर के मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है।

दुर्ग- सुश्री टीशा सुपुत्री श्रीमती सरला-आकाशरतनजी बोहरा ने साढ़े चार वर्ष की अल्प-आयु में सामायिक व प्रतिक्रमण पूर्ण कंठस्थ किया है।

श्रद्धांजलि

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त, व्रताराधक, श्रद्धानिष्ठ, मितभाषी वीरभ्राता सुश्रावक श्री

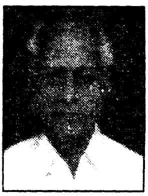

भोपालचन्दजी सेठिया का 28 दिसम्बर 2014 को देवलोकगमन हो गया। आपने अपनी राजकीय सेवा कुशलता एवं ईमानदारी से पूर्ण कर अपने आपको गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय मिशन में समर्पित कर दिया। सेवानिवृत्ति पश्चात् आपने अपने जीवन का अधिकांश समय घोड़ों का चौक धर्मस्थानक में रहकर ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना के अनुष्ठान में व्यतीत किया। उन्होंने संघ-समाज के अनेक श्रावकों को प्रेरणा कर धर्मस्थान में लाने एवं धर्म-साधना में सक्रिय करने का महनीय प्रयास किया।

संवर-साधनाशील श्रावकरत्न ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए अप्रमत्त जीवन बिताया। आप जब भी अपनी बात रखते संघ की रीति-नीति, मर्यादा, परम्परा का ध्यान रखकर अपनी बात कहते। उन्होंने अन्त समय तक स्वावलम्बी जीवन जीया। उन्हें किसी की सेवा लेने की जरूरत नहीं पड़ी। शान्त-सहज रूप से उनका मरण मानो घर-परिवार, संघ-

समाज और अपनों-परायों के लिए महोत्सव-सा बन गया। आपने जोधपुर संघ मंत्री का दायित्व निर्वहन किया और संघ-व्यवस्था को सुचारू बनाने में उनका विशिष्ट योगदान रहा। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के माध्यम से उन्होंने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में वर्षों तक पर्युषण सेवाएँ प्रदान कीं।

सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे तथा आहार-विहार सेवा में भी उनकी व सेठिया परिवार की महनीय सेवाएँ प्राप्त होती रही हैं। वे सन्त-सतीवृन्द की सेवा में पधारकर नियमित दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करते थे। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल के चातुर्मास में अधिकाधिक धर्माराधना का लक्ष्य रहता था। उन्होंने ज्येष्ठ भ्राता के रूप में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा सूर्यनगरी-जोधपुर कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लघु भ्राता वरिष्ठ श्रावकरत्न श्री धनपतचन्दजी सेठिया सम्प्रति श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी उनकी एवं सेठिया परिवार की महनीय सेवाएँ रही हैं।

जोधपुर- कर्तव्यनिष्ठ, सिद्धान्तवादी श्रावकरत्न श्री चन्दूलालजी कर्नावट का 88 वर्ष की

वय में 20 दिसम्बर 2014 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपने मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से दिन में पूर्ण सजग अवस्था में आजीवन संथारे के प्रत्याख्यान किए। मुनि श्री ने "अन्तिम समय की साधना कैसी हो एवं पारिवारिक सदस्य इसमें किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं"- इस सम्बन्ध में अत्यन्त प्रेरक उद्बोधन दिया। फलस्वरूप अत्यन्त आध्यात्मिक वातावरण में पूर्ण शांति एवं समाधि के साथ रात्रि में लगभग 11 बजकर 10 मिनिट पर संथारा पूर्ण हुआ। कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य ने इस मृत्यु महोत्सव पर प्रत्याख्यान ग्रहण कर साकार स्वरूप दिया।

आप नियमित सामायिक और स्वाध्याय करते थे। आपने भोपालगढ़ में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दी और बाद में व्यवसाय किया। आपने अपने जीवन में सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन किया। आपका सम्पूर्ण परिवार संघ द्वारा संचालित गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों से निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है। श्रावकरत्न के बड़े सुपुत्र श्री मनमोहनचन्दजी की संत-सतीवृन्द की सेवा में विशेषतः औषधोपचार व वैयावृत्त्य में महनीय भूमिका रहती है। पुत्रवधू श्रीमती शान्ताजी की श्राविका मण्डल, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड व पाठशालाओं के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। दूसरे सुपुत्र श्री रजनीश जी कर्नावट का पाली युवक परिषद् की

गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। छोटे सुपुत्र श्री राजेशजी कर्नावट सम्प्रति अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सह-संयोजक के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

जयपुर- जैन विद्या एवं प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ विद्वान्, राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित एवं

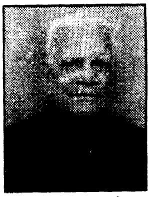

प्राकृत-भारती अकादमी के निदेशक महोपाध्याय श्री विनयसागरजी 86 वर्ष की आयु में 30 नवम्बर 2014 को दिवंगत हो गए। आप प्राचीन साहित्य, इतिहास एवं प्राच्य विद्या विशारद थे। वे प्राच्य लिपियों के पाठक, लेखक और संपादक के रूप में पूरे जैन जगत में पिछले सात दशक से चर्चित रहे। राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान से जुड़कर उन्होंने जयपुर, जोधपुर, कोटा और बीकानेर में प्राच्य हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का गहन अन्वेषण किया। वे दिवंगत होने से दो माह पूर्व तक सृजन साधना करते रहे। आप 1977 में स्थापित प्राकृत भारती अकादमी के प्रारम्भ से ही मानद् निदेशक एवं संयुक्त सचिव रहे। अकादमी को अपनी सृजन और साधना भूमि बनाकर उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकों का लेखन, संपादन एवं अनुवाद किया। वे भोगीलाल लहेरचन्द भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, दिल्ली के भी एक वर्ष निदेशक रहे। कई विदेशी संशोधकों ने भी उनके मार्गदर्शन में शोध कार्य किया। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की सर्वोच्च उपाधि 'साहित्य महोपाध्याय' एवं 'साहित्य वाचस्पति' (डी-लिट्) से सम्मानित थे।

प्राकृत भारती अकादमी द्वारा उन्हें एक लाख रुपये के गौतम गणधर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2014 में आपको भारतीय साहित्य, संस्कृति और प्राकृत भाषा के महनीय विद्वान् के रूप में 'राष्ट्रपति अलंकरण' से विभूषित किया गया। आप अपने पीछे पुत्र श्री मंजुल एवं विशाल सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

मुम्बई- अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री पारसमल जी साण्ड का 07 दिसम्बर, 2014 को

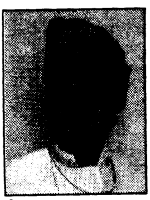

देहावसान हो गया। विनय, कर्मठता जैसे विविध गुणों से युक्त सुश्रावक जी का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। रत्नसंघ के प्रति उनकी विशेष श्रद्धा व भक्ति थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। त्याग-तप से युक्त उनका जीवन सबके लिए प्रेरणादायी रहा। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में साण्ड परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।

जोधपुर- तपसाधिका सुश्राविका श्रीमती मानकंवरजी सिंघवी का 92 वर्ष की आयु में 07 दिसम्बर 2014 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से

ओत-प्रोत था। आपने चातुर्मास काल में पाँचों तिथि एकाशन, अठाई, ग्यारह और सोलह की तपाराधना की। आप नित्य प्रति व्रत-नियम एवं सामायिक स्वाध्याय करती थीं। धार्मिक कार्यों में आप हमेशा अग्रसर रहती थीं। आपके पूज्य पिताजी स्व. श्री देवराज जी भण्डारी ने जिनवाणी, जयपुर कार्यालय में अनुकरणीय सेवाएँ प्रदान कीं।

अलीगढ़-रामपुरा- सुश्रावक श्री समीरमल जी जैन सुपुत्र स्व. श्री भँवरलाल जी जैन का

57 वर्ष की आयु में 04 अक्टूबर 2014 को स्वर्गवास हो गया। आप शालीन, सरलमना व मिलनसार श्रावक थे। आप नित्य सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपकी धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में गहरी रुचि थी। आपका परिवार रत्नसंघ के प्रति अटूट श्रद्धावान है।

बैंगलुरु- सुश्राविका श्रीमती भंवरीबाईजी धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी रूणवाल (बर निवासी) का 8 अक्टूबर 2014 को 66 वर्ष की उम्र में बैंगलोर में स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण एवं प्रार्थना करती थीं। आप सरल स्वभावी, मिलसार एवं मृदुभाषी महिला थीं।

देई (बून्दी)- सुश्रावक उदारमना एवं सादगी की प्रतिमूर्ति वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री

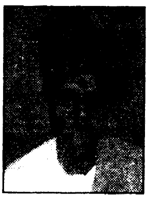

निहालचन्दजी जैन का 89 वर्ष की आयु में 23 दिसम्बर 2014 को परलोकगमन हो गया। आपका जीवन धार्मिक संस्कारों से संस्कारित तथा अनेक त्याग-प्रत्याख्यानों से युक्त था। आपके विगत 35 वर्षों से शीलव्रत व रात्रि में चारों आहारों के त्याग थे। प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को आप पौषध युक्त अष्ट प्रहर उपवास व शेष अष्टमी एवं चतुर्दशी को एकान्तर व आयम्बिल किया करते थे। नियमित रूप से उभयकालीन प्रतिक्रमण व प्रतिदिन पाँच-छह सामायिक तथा एक रस के त्याग सहित अनेक नियम थे। आपने विगत 30 वर्षों से स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ दी हैं। आपश्री की वक्तृत्व व गायन कला अच्छी थी। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, देई के मुख्य स्तम्भ थे और आपने वर्षों तक संघ मंत्री पद के दायित्व का निर्वहन किया।

डेह (नागौर)- स्वाध्यायप्रेमी सुश्रावक श्री अखेचन्दजी भिड़कचा का 72 वर्ष की आयु में

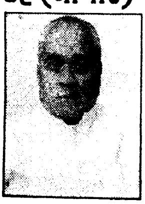

09 नवम्बर 2014 को देवलोकगमन हो गया। आप मृदुभाषी, हँसमुख व मिलनसार व्यक्ति थे। आपने 35 वर्षों तक श्री दक्षिण भारतीय जैन स्वाध्याय संघ में प्रमुख स्वाध्यायी के रूप में सेवाएँ प्रदान की। आपके गत

25 वर्षों से रात्रिभोजन का त्याग था तथा नित्य सामायिक करते थे। वर्तमान में श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ के उपाध्यक्ष, श्री वर्द्धमान जैन सेवा समिति के मंत्री, युवाचार्य मधुकर मुनि मेमोरियल ट्रस्ट के सहमंत्री जैसे पदों को सुशोभित कर रहे थे।

जोधपुर- सुश्रावक श्री शरबतचन्दजी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री दौलतचन्द जी सिंघवी का 72

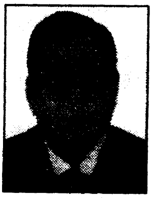

वर्ष की वय में 4 दिसम्बर 2014 को परलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल तथा धर्म के प्रति पूर्णतः श्रद्धानिष्ठ रहा। आपने आई.आई.एम, अहमदाबाद से एम.बी.ए. कर राजफैड में महाप्रबन्धक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। उनकी इच्छानुसार मेडिकल कॉलेज को परिवारजनों द्वारा देहदान किया गया।

जोधपुर- श्री प्रशान्त मेहता सुपुत्र डॉ. सुनीलजी मेहता एवं सुपौत्र डॉ. गौतमजी मेहता का

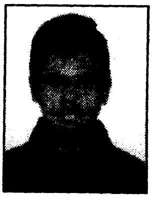

16 दिसम्बर 2014 को 18 वर्ष की अल्पायु में सड़क दुर्घटना में दुःखद निधन हो गया। आप एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर में बी.ई. द्वितीय वर्ष के छात्र थे तथा टेबल टेनिस खेल के उभरते हुए प्रतिभावान खिलाड़ी थे। आप होनहार, प्रतिभा सम्पन्न, आज्ञाकारी, मित्रों में लोकप्रिय, हँसमुख-स्वभावी, धार्मिक व सामाजिक कार्यों में पूर्ण रुचि रखने वाले युवक थे।

चोपड़ा- समतासाधिका सुश्राविका श्रीमती सूरजदेवीजी धर्मपत्नी सोहनराज जी नथमल जी टाटिया का 79 वर्ष की वय में संथारा-साधना संपूर्ण सजगता में 21 उपवास और समाधि भावों के साथ 16 नवम्बर 2014 को संपन्न हुई। महासती श्री गुणबालाजी म.सा. से 27 अक्टूबर को आहार, 18 पाप एवं ममत्व भावों का त्याग कर दृढ़ संकल्प के साथ आपने उत्साहपूर्वक प्रत्याख्यान ग्रहण किये। पहले दिन तक चल रहे ढेर सारे उपचार, दिन में 4 बार डायलेसिस आदि अचानक बंद हो जाने से पलपल बढ़ती क्षुधा वेदना की तीव्रता भी उन्हें विचलित नहीं कर पाई।

चोपड़ा- सुश्राविका श्रीमती शांताबाई चंपालाल जी बरड़िया का 88 वर्ष की आयु में 14 नवम्बर 2014 को संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिदिन 5-6 सामायिक करती थीं। समरथगच्छ में दीक्षित प्रभाजी म.सा. की आप सांसारिक माताजी थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

'साहित्य-निधि-पोषक' हेतु प्रत्येक

21000/- श्री दलपतराजजी, अरविंदजी, अभिषेकजी सिंघवी, मैसूर, सत्साहित्य प्रकाशन में अर्थसहयोग हेतु सप्रेम भेंट।

1000/-जिनवाणी पत्रिका की बीसवर्षीय सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15369 से 15377 तक 9 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5100/- श्री अनिलजी बोहरा, जोधपुर, अपनी सुपुत्री पूर्वा बोहरा (सुपौत्री श्रीमती सुशीलाजी बोहरा) संग चि. राहुलजी के साथ शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

3501/- श्रीमती ललिताजी एवं श्री महेन्द्रजी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, अपनी तथा अभिषेकजी व प्रियदर्शिनीजी की वैवाहिक वर्षगांठ एवं श्रीमती स्वातिजी धर्मपत्नी श्री अनुपमजी गांग (यूएसए) तथा अनन्याजी सुपुत्री श्रीमती स्वातिजी-अनुपमजी गांग (यूएसए) के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री प्रकाशचन्दजी, सुशीलकुमारजी डूँगरवाल (थाँवला वाले), बेंगलुरु, श्री सुशीलजी की शादी की सातवीं सालगिरह के उपलक्ष्य में।

2100/- डॉ. सुनील जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री प्रशान्त जी मेहता (सुपौत्र डॉ. गौतमजी मेहता) के आकस्मिक निधन की पुण्यस्मृति में।

2000/- श्री रंगरूपमलजी, सुश्री मीनूजी चोरड़िया, चेन्नई।

1101/- सुश्री प्रतिभाजी मेहता एवं श्री अनुरागजी मेहता, जोधपुर, श्री उच्छबराजजी एवं श्रीमती विजयजी मेहता की 39 वीं वैवाहिक वर्षगांठ (18 नवम्बर 2014) के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथजी-कमलाजी, लोकेन्द्रनाथजी-ऋतुजी, लोरीजी, यिशिताजी मोदी, जोधपुर, पूजनीय श्री हुकमनाथजी एवं श्रीमती कृष्णाजी मोदी तथा श्री विश्वम्भरनाथ जी एवं श्रीमती सरदारकंवरजी मोदी की पुण्यतिथियों पर स्मरणांजलि स्वरूप।

1100/- श्री पदमचन्दजी, ताराचन्दजी जैन, देई (बूंदी), श्री निहालचन्दजी जैन का स्वर्गवास 23 दिसम्बर 2014 को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, सुशील कुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), बेंगलुरु, दोहिते के दूसरे जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री पवन कुमारजी, मारूत कुमारजी, अलीगढ़-रामपुरा, पूज्य पिता श्री समीरमलजी जैन का 04 अक्टूबर 2014 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री भैरूलालजी जैन (चौथ का बरवाड़ा वाले), कोटा, चि. हितेशजी संग सौ.कां. बबीताजी का शुभविवाह 07 दिसम्बर 2014 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री विपिनकुमार एवं चित्रा जी जैन, आगरा।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

1100/- श्री विपिनकुमारजी एवं चित्राजी जैन, आगरा।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

70000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, 'आनुपूर्वी', 'उत्तराध्ययन सूत्र हिन्दी' के प्रकाशनार्थ।

11000/- श्री सोहनराजजी भूरीबाईजी कटारिया धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

500000/- श्री मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।

24000/- श्री सोहनराजजी भूरीबाईजी कटारिया, इन्दौर।

12000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर।

12000/- श्री महेन्द्र जी गांग, सूरत।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व

माघ कृष्ण 8 मंगलवार	13.01.2015	अष्टमी
माघ कृष्ण 14 सोमवार	19.01.2015	चतुर्दशी, पक्खी
माघ शुक्ल 2 गुरुवार	22.01.2015	आचार्य भगवन्त हस्तीमल जी म.सा. का 95 वाँ दीक्षा दिवस।
माघ शुक्ल 8 मंगलवार	27.01.2015	अष्टमी
माघ शुक्ल 14 सोमवार	02.02.2015	चतुर्दशी
माघ शुक्ल 15 मंगलवार	03.02.2015	पक्खी
फाल्गुन कृष्ण 8 गुरुवार	12.02.2015	अष्टमी
फाल्गुन कृष्ण 14 बुधवार	18.02.2015	चतुर्दशी, पक्खी

जयपुर में जैन छात्रों के लिए उच्च शिक्षा प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर, 9वीं कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ

घटते संस्कार बढ़ते साधन के इस आधुनिक युग में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों के साथ उच्च शैक्षणिक अध्ययन के लिए आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान संचालित है। यहाँ छात्रों के अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण एवं सुविधाएँ हैं। सर्वांगीण विकास के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे- भाषण, प्रश्नोत्तरी, सेमिनार, इंगलिश स्पीकिंग कोर्स, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, मोटिवेशनल कार्यक्रम, खेलकूद एवं धार्मिक अध्ययन के साथ प्राकृत-संस्कृत भाषा का ज्ञान। नियमित दिनचर्या, अनुशासन एवं कठोर परिश्रम के साथ संस्कारित व्यक्तित्व का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है। विगत 41 वर्षों में सैकड़ों विद्यार्थी यहाँ अध्ययन कर वर्तमान में राजकीय, प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदों पर कार्यरत हैं। कई छात्र व्यावसायिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित रूप में कार्यरत हैं। कक्षा 9 से स्नातक (सभी विषय) एवं प्रोफेशनल शिक्षण, प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले चयनित छात्रों को प्रवेश दिए जाते हैं।

प्रवेश प्रक्रिया की नियमावली:-

1. संस्थान में प्रवेश का मुख्य आधार बालकों का प्रतिभाशाली एवं शैक्षणिक स्तर पर अच्छे अंक होना प्राथमिकता रखेगा।
2. कक्षा आठवीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यालय, महाविद्यालय के सभी विषयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश सुविधा।
3. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार चयनित छात्र ही प्रवेश हेतु साक्षात्कार में आमंत्रित किये जायेंगे।

सुविधाएँ:-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु इंगलिश स्पीकिंग कोर्स, मोटिवेशनल कक्षाएँ, सेमिनार, शैक्षणिक भ्रमण एवं विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. भाषण, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी का आयोजन एवं क्रिकेट, कैरम, बेडमिंटन आदि खेलों की सुविधाएँ।
5. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य।
6. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

फार्म प्राप्ति एवं अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.), फोनः 0141-2710946, 094614-56489, ई-मेल : ahassansthan@gmail.com

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाऊस रोड, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from :

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

Electric Arc Furnace

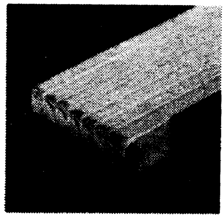
Billets

Rolling Mill

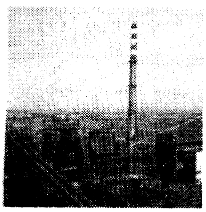
Captive Power Plant

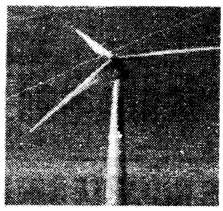
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/– रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् राजीव जी डागा, ह्यूस्टन।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।
युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमती नीता जी डागा, ह्यूस्टन।	
	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।	
	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।	
	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पूनामल्लई।	
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।	
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।	
	श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–
B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road,Annanagar West Extn.,**CHENNAI-600101** (TN)
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई (**Mob.095430 68382**)

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।
- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL
MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।

- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

DOING UP INTERIORS OF YOUR HOME OR OFFICE?

आपका फ़र्निचर बताता है आप कौन है! और कैसे जीते हैं!

शानदार अर्बन-चिक या थिंक चक चुनिए
विश्व के सामने अपना व्यक्तित्व प्रकट कीजिए

बड़े सपने देखिए
अपने घर, ऑफ़िस या फ़ार्महाउस के लिए
आकर्षक इंटिरियर ख़रीदिए
सिर्फ़ आधे दामों पर

Welcome To China

World's Largest Manufacturer of Interior Materials

- Anyone can now import directly from China. In fact, many of the leading brands from all over the world are importing their materials from China and selling it to you at highly marked up prices.
- Smart people are going directly to China with a reliable partner like Ushakha Overseas Inc. to get the benefits of this price difference.

UOI
USHAKHA OVERSEAS INC.,

INDIA	CHINA	CANADA
+91 7299963102	+86 15112949705	+1 6479613353
ashwin.uol@gmail.com	abhi.uol@gmail.com	uolcanada@gmail.com

Floorings | Furniture | Lightings | Hardware | Sanitaryware | Furnishings | Decorative Artefacts

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जनवरी, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 01 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जनवरी, 2015 ★ माघ, 2071

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन